एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९ ॥ओ३म्॥ डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३
प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २८ को प्रेषित

वैदिक संसार

हिन्दी मासिक

• वर्ष : १२ • अंक : १ • २५ नवम्बर २०२२, इन्दौर (म.प्र.) • मूल्य : २५/- • कुल पृष्ठ : ३६

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्यों! चलो गाँधीधाम... आर्य समाज का बुलावा आया है...

ओ३म्

हार्दिक निमन्त्रण

आर्य समाज गाँधीधाम का ६८वाँ भव्य वार्षिक अधिवेशन

एवं

श्री गिरीश खोसला जी (अमेरिका) का अमृत महोत्सव

दिनांक : ०५ से ०७ जनवरी २०२३

निमन्त्रक

आर्य समाज

डी बी झेड-एन-१५७, महर्षि दयानन्द मार्ग, झण्डा चौक के पास, गाँधीधाम (कच्छ) गुजरात ३७०२०१ भारत
चलभाष : ९७२७५३६२३२, ९४२६३३६२३२ | aryagan@aryagan.org | www.aryagan.org

आर्य समाज मंदिर ब्यावरा का 100 वां वार्षिक महोत्सव (शताब्दी समारोह)

दिनांक : 25 से 31 दिसम्बर 2022

सादर आमन्त्रण : पधारो सा

आर्य समाज मंदिर, ब्यावरा, जिला राजगढ़, मध्यप्रदेश के शतायु अवस्था (१०० वर्ष) पूर्ण हो जाने के शुभ अवसर पर दिनांक २५ दिसंबर से ३१ दिसंबर २०२२ तक अपना शताब्दी समारोह मना रहा है अतः आप समस्त आर्य जगत् के आत्मीय आर्य महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में अपने इष्ट मित्रों और परिवारजनों के साथ आर्य समाज ब्यावरा पधारे और अपनी गौरवमयी उपस्थिति से समारोह की शोभा एवं गरिमा में अभिवृद्धि करें। कार्यक्रम प्रातः ८ से १२ बजे तक प्रतिदिन यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आचार्य हरिशंकर जी अग्निहोत्री आगरा के ब्रह्मत्व में, दोपहर २ से ५ बजे तक आचार्य कुलदीप जी आर्य बिजनौर के मुखारविंद से रामकथा तथा रात्रि कालीन सत्र ८ से १० बजे तक आयोजित किया जाएगा। आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान काशीराम जी अनल कानड़, स्वामी संगीतानन्द जी सरस्वती मथुरा, स्वामी गणेशानंद जी, स्वामी विश्वामित्र जी वेदाचार्य उपदेशक मध्य भा. आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अन्य अनेक विद्वान, भजनोपदेशक तथा आर्यजन पधार रहे हैं जिनके दर्शन लाभ एवं उनके विचारों का लाभ आपको प्राप्त होगा। अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि अपना अमूल्य समय निकालकर ब्यावरा अवश्य पधारें। बाहर से पधारने वाले समस्त आगंतुक महानुभाव के विश्राम भोजन की समुचित व्यवस्था का प्रबंध किया जा रहा है।

ब्यावरा आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक ३ तथा जयपुर-जबलपुर राजमार्ग क्रमांक ११ पर एवं ग्वालियर-इंदौर वाया गुना-मक्सी रेल मार्ग पर स्थित है।

(आर्य समाज ब्यावरा का इतिहास पढ़ें : पृष्ठ-22)

विनम्र अनुरोध

गोपालप्रसाद अग्रवाल (प्रधान)

तथा आर्य समाज ब्यावरा के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण

सम्पर्क सूत्र : ९४२५०३८५३०

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १२, अंक : १
अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ नवम्बर, २०२२
आर्ष तिथि: पौष मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि
सृष्टि सम्वत् : १,९७,२९,४९,१२४
शक सम्वत् : १९४४, विक्रम सम्वत् : २०७९

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  गजेश शास्त्री, इन्दौर (अवैतनिक)
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड, बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१
- अक्षर संयोजन– **नितिन पंजाबी, इन्दौर**
  चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	२५,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	५,१००/–
पंचवार्षिक सहयोग :	१,५००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	९००/–
वार्षिक सहयोग (प्रेषण व्यय सहित)	३५०/–
एक प्रति (प्रेषण व्यय रहित)	२५/–
विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ	७,१००/–

खाता धारक का नाम : वैदिक संसार
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलिया हाना, तिलक नगर, इंदौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : UCBA0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : 'वैदिक संसार'

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
...आर्यावर्त भू–मण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०५
बिना वैदिक ज्ञान गुरुता के चक्रवर्ती साम्राज्य भी तुच्छ तथा...	सम्पादकीय	०५
महान् विभूतियाँ : स्वामी श्रद्धानन्द	देवनारायण भारद्वाज	०७
: अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी	नन्दलाल निर्भय	०९
: प्रथम पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि	सुन्दरलाल चौधरी	०९
महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (गतांक से आगे)	ई. चन्द्रप्रकाश महाजन	१०
वेद एवं सृष्टि विज्ञान	शिवनारायण उपाध्याय	११
इह चेद वेदीत् अथ सत्यमस्ति : हे मनुष्यों!...	रामफलसिंह आर्य	१३
प्रभु को भुला नहीं	देवकुमार प्रसाद आर्य	१४
न्यायदर्शन के अनुसार षोड्श पदार्थों के तत्वज्ञान से मोक्ष प्राप्ति	डॉ. सत्यदेव सिंह	१५
सत्यार्थ प्रकाश कणिका (गतांक से आगे)	देवनारायण सोनी	१६
सत्यार्थ प्रकाश : चतुर्थ समुल्लास काव्यसुधा (गतांक से आगे)	आ. देवनारायण तिवारी	१७
धर्म सरिता भाग–३ (गतांक से आगे)	रमेशचन्द्र भाट	१८
दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य का समालोचनात्मक अध्ययन	ओमप्रकाश आर्य	१९
भीतर लौटें	नरेन्द्र आहूजा	२०
ज्योतिष का चक्कर	आचार्य रामगोपाल सैनी	२०
स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम पुरोधा स्वामी दयानन्द	अम्बालाल विश्वकर्मार्य	२१
ऋषि का दुःख–दर्द (भाग–२)	ले. नरसिंह सोलंकी	२१
हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी (गतांक से आगे)	चौधरी बदनसिंह आर्य	२१
आर्य समाज ब्यावरा का शत वर्षीय इतिहास	गोपाल प्रसाद आर्य	२२
विचार करें कि महर्षि दयानन्द हमारे मध्य आ जायें तो वह क्या कहेंगे?	पं. उम्मेदसिंह विशारद	२५
मैं बैठा–बैठा सोच रहा	डॉ. लक्ष्मी निधि	२६
अन्धविश्वास के निवारण में धर्मगुरुओं की भूमिका	डॉ. गंगाशरण आर्य	२७
श्रद्धा रखी महर्षि में तो बन गये स्वामी श्रद्धानन्द	खुशहालचन्द्र आर्य	२८
यदि रामराज्य लाना है तो चुनाव प्रणाली भी आर्यों की लाना होगी	रघुराज शास्त्री मुनि	२९
आर्यवीर दल मंडलपति वगतरामजी (संक्षिप्त जीवन परिचय)	मोहनलाल दशोरा	३०
सच्चे नेताओं की गाथा	नन्दलाल निर्भय	३०
आर्य महासम्मेलन	आर्य समाज कोलकाता	३१
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	३२
विविध गतिविधियाँ एवं शोक सूचनाएँ	संकलित	३४

विश्व जागृति का आधार महर्षि दयानन्द कृत महान् ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' एवं उत्तम जीवन निर्माण के लिए 'संस्कार विधि' अवश्य पढ़ें और जीवन में प्रगति पथ पर आगे बढ़ें।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार १० गते, सहस्य मास से ११ गते, तपस् मास, शक सम्वत् १९४४ तक तदनुसार पौष मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि से माघ मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, विक्रम सम्वत् २०७९ तक तदनुसार दिनांक १ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर, सन् २०२२ तक के आर्यावर्त भू–मण्डल के कुछ विशेष पर्व एवं दिवस

१० गते	सहस्य मास	पौष शुक्ल अष्टमी	०१ दिसम्बर	विश्व एड्स दिवस
११ गते	सहस्य मास	पौष शुक्ल नवमी	०२ दिसम्बर	शुक्र उदय– ०५:४६ बजे
१२ गते	सहस्य मास	पौष शुक्ल दशमी	०३ दिसम्बर	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व खुदीराम बोस जयन्ति, विश्व विकलांग दिवस
१३ गते	सहस्य मास	पौष शुक्ल एकादशी	०४ दिसम्बर	पञ्चक समाप्त– २५:१२, भारतीय नौसेना दिवस
१४ गते	सहस्य मास	पौष शुक्ल द्वादशी	०५ दिसम्बर	श्री अरविन्दो पुण्यतिथि
१५ गते	सहस्य मास	पौष शुक्ल त्रयोदशी	०६ दिसम्बर	डॉ. भीमराव अम्बेडकर पुण्यतिथि
१६ गते	सहस्य मास	पौष शुक्ल चतुर्दशी	०७ दिसम्बर	सशस्त्र बल झण्डा दिवस
१७ गते	सहस्य मास	पौष शुक्ल पूर्णिमा	०८ दिसम्बर	भाई परमानन्द पुण्यतिथि
१९ गते	सहस्य मास	पौष कृष्ण द्वितीया	१० दिसम्बर	विश्व मानवाधिकार दिवस
२१ गते	सहस्य मास	पौष कृष्ण चतुर्थी	१२ दिसम्बर	पुष्य– २९:५६
२४ गते	सहस्य मास	पौष कृष्ण सप्तमी	१५ दिसम्बर	सरदार वल्लभभाई पटेल पुण्यतिथि
२७ गते	सहस्य मास	पौष कृष्ण दशमी	१८ दिसम्बर	चित्रा– २३:१३
२८ गते	सहस्य मास	पौष कृष्ण एकादशी	१९ दिसम्बर	अश्फाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद बिस्मिल एवं ठाकुर रोशनसिंह पुण्यतिथि
३० गते	सहस्य मास	पौष कृष्ण त्रयोदशी	२१ दिसम्बर	अनुराधा– २९:२०, मकर संक्रान्ति– २७:१९, दिन लघुत्तम रात्रि महत्तम (उत्तरी गोलार्द्ध में, दक्षिणी गोलार्द्ध में विपर्यय), सूर्य भोगांश– २७० अंश
०१ गते	तपस् मास	पौष कृष्ण चतुर्दशी	२२ दिसम्बर	श्रीनिवास रामानुजम् जयन्ति
०२ गते	तपस् मास	पौष कृष्ण अमावस्या	२३ दिसम्बर	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, किसान दिवस
०३ गते	तपस् मास	माघ शुक्ल प्रतिपदा	२४ दिसम्बर	उत्तराषाढ़ा– १४:०४, भारतीय उपभोक्ता दिवस
०४ गते	तपस् मास	माघ शुक्ल द्वितीया	२५ दिसम्बर	क्षयतिथि तृतीया– २८:५४, पं. मदमोहन मालवीय जयन्ती, वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली व अटल जयन्ती
०५ गते	तपस् मास	माघ शुक्ल चतुर्थी	२६ दिसम्बर	पञ्चक प्रारम्भ– १५:२१, उधमसिंह जयन्ती
०६ गते	तपस् मास	माघ शुक्ल पंचमी	२७ दिसम्बर	धर्मरक्षा दिवस
०७ गते	तपस् मास	माघ शुक्ल षष्ठी	२८ दिसम्बर	सुमित्रानन्दन पन्त पुण्यतिथि
०८ गते	तपस् मास	माघ शुक्ल सप्तमी	२९ दिसम्बर	रमन महर्षि जयन्ती
१० गते	तपस् मास	माघ शुक्ल नवमी	३१ दिसम्बर	विक्रम साराभाई पुण्यतिथि

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

नवीन पंचांग प्रकाशित हो चुका है। अपनी प्रति शीघ्र मँगवाएँ, लाभ उठाएँ।

किसी भी शंका–समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें

अन्य स्रोतों से प्राप्त माह दिसम्बर २०२२ के कुछ विशेष पर्व–दिवस

०१. सीमा सुरक्षा बल स्थापना दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय दास प्रथा उन्मूलन दिवस, राष्ट्रीय प्रदूषण नियन्त्रण दिवस, विश्व कम्प्यूटर साक्षरता दिवस। ०३. भोपाल गैस त्रासदी दिवस, विश्व संरक्षण दिवस। ०५. आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्वयं सेवक दिवस, विश्व मृदा दिवस। ०६. होमगार्ड स्थापना दिवस, नागरिक सुरक्षा दिवस, सशस्त्र सेना झण्डा दिवस। ०७. अन्तर्राष्ट्रीय नगरिक उड्डयन दिवस। ०८. दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय संगठन दिवस, पनडुब्बी स्थापना दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय शोक दिवस। ०९. **आर्य आचार्य रामदेव पुण्यतिथि**, भ्रष्टाचार के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय दिवस। ११. अन्तर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस, यूनिसेफ दिवस। १२. स्वदेशी दिवस। १३. गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस। १४. अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा दिवस। १७. अमर बलिदानी राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी बलिदान दिवस, पेंशन भोगी दिवस। १८. अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी दिवस। १९. गोवा मुक्ति दिवस। २०. अन्तर्राष्ट्रीय मानव एकता दिवस। २१. महावीर प्रसाद द्विवेदी पुण्यतिथि। २२. राष्ट्रीय गणित दिवस (रामानुजम स्मृति दिवस)। २३. चौधरी चरणसिंह जयन्ती, **शान्तिधर्मी पत्र के जन्मदाता पं. चन्द्रभानु आर्योपदेशक पुण्यतिथि।** २५. भारत रत्न अटलबिहारी वाजपेयी जयन्ती। २६. मुक्केबाजी दिवस। २७. महाराज खेतसिंह खंगार (राजपूत) जयन्ती। २८. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस स्थापना दिवस। २९. अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस। ३१. ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन दिवस, वर्ष का अन्तिम दिवस।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

● स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

(एम.ए. दर्शनाचार्य)

प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)

सन्त ओंधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात

चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

विश्वतो दानन् विश्वतो न आभर यं त्वा शविष्ठमीमहे।। (३२)

– साम पूर्वा. ५.२.१.१

शब्दार्थ– विश्वतो दानन् = हे सब ओर से दान करने वाले प्रभो! **नः विश्वतः आभर** = हमारा सब ओर से पालन पोषण करो **यं त्वा शविष्ठम्** = जिस आप अत्यन्त बलवान् को **ईमहे** = हम याचना करते हैं।

विनय : हे देवों के देव महादेव! परमपिता परमात्मा! आप प्राणीमात्र के लिए जल, अन्न, वायु, अग्नि पदार्थों का दान करने वाले हैं तथा सभी देशों में सभी स्थानों में सबके लिए महादानी बने हुए हैं व जलचर, थलचर, नभचर, समस्त प्राणियों का पालनपोषण करने वाले हैं। हे प्रभु! यदि आप वायु बनाकर, जल बनाकर हमें प्रदान नहीं करते तो हमारा जीवन चल नहीं सकता। अत: हम पर आपकी ये विशिष्ट कृपा है। हे जगन्नाथ! परमेश्वर आप अत्यन्त दयावान हैं, अत्यन्त बलवान भी हैं व अनन्त सामर्थ्यवान हैं।

हे देव! आप अपने ज्ञान, बल, सामर्थ्य से संसार के समस्त जीवों को जीवनी शक्ति निरन्तर प्रदान कर रहे हैं व सबके प्राणाधार बने हुए हैं। अत: हमारे ऊपर किये जाने वाले उपकार के लिए हम आपके अत्यन्त आभारी हैं, कृतज्ञ हैं व आपका धन्यवाद करते हैं तथा आपकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना करते हुए परोपकार के लिए अपने जीवन को समर्पित करते हैं।

पद्यार्थ: *जगत पिता प्यारे भगवान, सर्वोपरि दानी धनवान।*

अन्न, वस्त्र, बल करो प्रदान, हों सब स्वस्थ, सुखी, बलवान।।

करो याचना पूर्ण हमारी, विमल वेद से भर महतारी।

सुखी करो हे प्रभु महान्, जिससे हो सबका कल्याण।।

● दर्शनाचार्या विमलेश बंसल (विमल वैदेही), दिल्ली

चलभाष ८१३०५८६००२

सम्पादकीय

बिना वैदिक ज्ञान गुरुता के चक्रवर्ती साम्राज्य भी तुच्छ तथा महत्वहीन है

ऋषि सुनक के ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री बनते ही भारत के निवासियों में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। हो भी क्यों नहीं क्योंकि ऋषि सुनक का जन्म भले ही ब्रिटेन में हुआ हो किन्तु उनके पूर्वज अविभाजित भारत के निवासी थे। सामाजिक सूचना तन्त्र से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार ऋषि सुनक की भारतीय संस्कृति, सभ्यता में गहन आस्था है। ऐसा बताया जाता है कि जब वे इससे पूर्व ब्रिटेन के वित्तमन्त्री बने थे तब उन्होंने गीता पर हाथ रखकर शपथ ग्रहण की थी तथा वे गर्व से अपने आपको हिन्दू बताते हैं और गौ की तथा अन्य पूजा पाठ में विश्वास रखते हैं। इस प्रकार के कृत्य के वीडियो देखे भी गए हैं। दिनांक १६ नवम्बर को जी–२० देशों के शिखर सम्मेलन में ऋषि सुनक ने भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के साथ आत्मीयता पूर्वक भेंट की तथा हिन्दी भाषा में ट्वीट किया **'भारत से हमारी मजबूत दोस्ती है।'** यह भी जानकारी में आया है कि उनके पूर्वज, जो पाकिस्तान क्षेत्र के निवासी थे, आसुरी शक्तियों से पीड़ित होकर ब्रिटेन चले गए थे। लगभग विगत ८ वर्षों में खण्डित भारत में नरेन्द्र मोदी के प्रधानमन्त्रीत्व की सरकार है। वैसे तो यह देश धर्मनिरपेक्ष कहा जाता है। यहाँ का संविधान पंथ निरपेक्ष है किन्तु नरेन्द्र मोदी की सरकार को हिन्दुत्व के प्रति समर्पित सरकार कहा जाता है। इस सरकार की सर्वोपरि उपलब्धि में रामजन्म भूमि का न्यायालयीन निर्णय हिन्दुओं के पक्ष में होकर राम मन्दिर के भव्य निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ है और राम मन्दिर ही क्यों? ऐसा प्रतीत होता है कि नरेन्द्र मोदी सरकार और भारतीय जनता पार्टी शासित राज्यों की सरकारों का सबसे ऊपर प्राथमिकता में धार्मिक स्थलों का जीर्णोद्धार, सौन्दर्यीकरण और महापुरुषों की भव्य गगनचुम्बी विशालकाय मूर्तियों का निर्माण तथा नगरों आदि का नाम परिवर्तन है। इस सरकार पर यह भी सन्देह विपक्षी दलों द्वारा व्यक्त किया जाता है कि यह हिन्दू राष्ट्र घोषित करने की नीति पर कार्य कर रही है। एक तो अंग्रेजों से प्राप्त शासन व्यवस्था तन्त्र में भोगी-विलासी नेता, अधिकारियों की भीड़ के वेतन-पेंशन; भत्तों आदि सुविधाओं पर होने वाला भारी भरकम व्यय, दूसरे प्रत्येक समय कोई न कोई चुनाव जिसमें होने वाले भारी-भरकम व्यय का भार। इसके साथ ही भ्रष्टाचार रूपी सुरसा ने आमजन मानस को झकझोर कर रख दिया है। ऊपर से अरबों-खरबों का भारी-भरकम व्यय कर बनाए जाने वाले इन धार्मिक प्रतीकों से ऐसा प्रतीत होता है कि अपने आपको धार्मिक प्रदर्शित करने की प्रतिस्पर्धा सी मानो चल पड़ी हो और इस सबका मूल्य तो आम व्यक्ति को ही चुकाना है। आम व्यक्ति मूल्यवृद्धि और अपनी दैनन्दिनी आवश्यकताओं की मकड़जाल में इस तरह उलझ गया है कि पूरे के पूरे पारिवारिक सदस्य काम-धन्धा करने के उपरान्त भी ठीक से जीवन व्यतीत नहीं कर पा रहे हैं। देश-दुनिया का

चिन्तन करने का किसी के पास समय नहीं है। बिना काम-धन्धे का एक भी सदस्य बोझ प्रतीत हो रहा है। छोटे परिवार होने के उपरान्त भी मनुष्य यन्त्र अनुरूप बनकर रह गया है। जबकि किसी समय राज्य संचालन के अधिकारी सुयोग्य निपुण तथा त्यागी-तपस्वी होते थे। उनके जीवन में धर्म होता था जिसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण आचार्य चाणक्य हैं। धर्म मात्र प्रदर्शन तक सिमटकर रह गया है। आम हो अथवा खास सभी को धर्म की नहीं धन की आवश्यकता है। दायित्वपूर्ण पदाधिकारियों के जीवन व्यवहार में धर्म परिलक्षित होना चाहिए, क्योंकि वे आमजन के आदर्श तथा अनुकरणीय होते हैं।

दुनिया की तो छोड़ो देश की दशा-दिशा पर चिन्तन करें तो ऐसा प्रतीत होता है हमनें इतिहास से विशेषकर १००० वर्षों की पराधीनता से कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की।

क्या होगा दो देश के नहीं १००-५० देश के प्रधानमन्त्री/राष्ट्रपति हिन्दू बन जाएँ। दुशाला ओढ़कर मन्दिरों की घण्टी बजाते हुए, जड़ मूर्तियों के समक्ष दण्डवत लोट लगाते दिख जाएँ। दो-चार, दस-बीस नहीं, १०००-२००० विशाल गगनचुम्बी मन्दिर बना लिए जाएँ। वर्तमान में जो विशालकाय मूर्तियाँ बनाई जा रही हैं इनसे और दोगुनी, तीन गुनी ऊँची मूर्तियाँ बना ली जाएँ। क्या इन सबसे मानव जाति सुख-शान्ति और मानवीय गुणों से युक्त हो जाएगी? क्या मानव जाति में व्याप्त समस्याओं का समाधान हो पाएगा? क्या मनुष्य जाति में परस्पर व्याप्त वैचारिक मतभेद, अविश्वास, गलाकाट प्रतियोगिता, भेदभाव समाप्त हो जाएगा? स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि हमारे कर्णधारों ने इतिहास और अतीत में भोगे गए दुर्दिनों से कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की। विशालकाय मन्दिर, किले और महल बनाकर और उनमें अकूत धन-सम्पदा संग्रहित तो उन राजे-महाराजाओं ने भी कर रखी थी, जिन्हें मुट्ठी भर आक्रान्ताओं ने ध्वस्त कर दिया। प्राचीनकाल से कहीं अधिक वर्तमानकाल में आसुरी शक्तियाँ सम्पूर्ण मानव जाति को निगलने को तत्पर है और वर्तमान की आसुरी शक्तियाँ तकनीकी ज्ञान तथा अत्याधुनिक शास्त्रास्त्रों से सुसज्जित है। सम्भवतः तुम्हें पता नहीं हो अथवा तुम भूल गए हो कि परमपिता परमेश्वर ने वर्तमान के सुदिनों का यह सुअवसर उस महान् पुण्यात्मा महर्षि दयानन्द के त्याग-तपस्या, बलिदान के रूप में प्रदान किया था जिसका १३९वाँ बलिदान दिवस विगत कार्तिक अमावस्या की गहन रात्रि को हमने मनाया है और महर्षि दयानन्द के इस संसार से चले जाने के पश्चात् उसी वेग और प्रखरता के साथ महर्षि के कार्यों को आगे बढ़ाया उनके परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने जिनकी बलिदान शताब्दी हम मात्र दो-चार वर्षों में मनाने वाले हैं।

यह जो स्वतन्त्रता रूपी भवन देख रहे हो ना इसकी नींव ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द तथा उनके अनुयायी असंख्य भक्तों ने अपने खौलते हुए गर्म-गर्म रक्त से भरी है।

जरा विचार तो करो १८५७ की क्रान्ति विफल होने के पश्चात् कौन था जिसने स्वतन्त्रता आन्दोलन को आगे बढ़ाया? वर्तमान में जितने स्वतन्त्रता आन्दोलन के नायक दिखाई देते हैं वे अधिकांशजन वर्ष १९२०-२५ के पश्चात् के ही दिखाई देते हैं। इन नायकों और झाँसी की रानी, तात्या टोपे की मध्य अवधि का नायक कौन था और वर्तमान के नायकों का प्रेरणा पुंज कौन था?

जब शुद्ध अन्तःकरण से इन प्रश्नों का समाधान खोजोगे तो मात्र और मात्र दयानन्द का ही नाम सम्मुख आएगा। इस महान् विभूति के पास वह शस्त्र कौन सा था जिसने उस ब्रिटीश साम्राज्य की चूलें हिला दी जिसके साम्राज्य में सूर्य अस्त नहीं होताथा? जब इस प्रश्न का उत्तर खोजोगे तो पाओगे वह शस्त्र नहीं ब्रह्मास्त्र था जिसका नाम था **'वेदों की ओर लौटो'**। देव दयानन्द नामक महान् विभूति के ब्रह्मास्त्र **'वेदों की ओर लौटो'** में पराधीनता की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति की समस्त समस्याओं का समाधान था।

उसी ब्रह्मास्त्र के प्रभाव से दीन-हीन मानव जाति की दिशा-दशा में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। यह अपने गौरवमयी अतीत को पुनः प्राप्त करने को उद्यत हुई। आर्य जाति ने अपनी पराधीनता की बेड़ियों को काट फेंका किन्तु दुर्भाग्य मानव जाति विशेषकर आर्य जाति का कि देश की स्वतन्त्रता के समय महर्षि देव दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जैसी विभूतियाँ न होने से महर्षि दयानन्द द्वारा दिए गए ब्रह्मास्त्र **'वेदों की ओर लौटो'** से वर्तमान नायकों ने दूरी बनाना शुरू की और शनैः-शनैः उसे पूरी तरह भुलाने का प्रयास किया गया अथवा किया जा रहा है जो मानव जाति को पुनः अज्ञानता के अन्धकार की ओर ले जा रहा है। परमपिता परमात्मा द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ प्रदत्त वेदज्ञान के बिना मानव धार्मिक तो दूर मानवीय गुणों से युक्त मनुष्य भी नहीं हो सकता। हाँ! वह वेद ज्ञान के अभाव में कितनी ही धार्मिक क्रियाएँ क्यों न करे वे मात्र और मात्र आडम्बर, पाखण्ड ही सिद्ध होकर उसके लिए आत्मघाती ही होगी। स्थितियाँ, परिस्थितियाँ विषम तो हुई हैं किन्तु अभी सिर से ऊपर पानी नहीं हुआ है। अभी भी स्थितियों को दिव्य ब्रह्मास्त्र **'वेदों की ओर लौटो'** से बदला जा सकता है और दो-चार, दस-बीस देश के शासनाध्यक्ष ही नहीं पुनः चक्रवर्ती सम्राट अर्थात् सम्पूर्ण धरा पर जिनकी स्वीकार्यता हो बना जा सकता है किन्तु उसका एक ही पथ है मानव जाति विशेषकर आर्य जाति विश्व गुरुता के गरिमामयी पद को पुनः धारण करे। अन्यथा सब कुछ छलावा सिद्ध होगा। हर्ष का विषय है कि १६ नवम्बर को जी-२० देशों की अध्यक्षता भारत को प्राप्त हो गई है और जी-२० देशों का शिखर सम्मेलन सितम्बर में भारत में हो रहा है। यह वैश्विक स्तर पर भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा है। इसे ही चक्रवर्ती कहते हैं जिस ओर भारत पुनः शनैः-शनैः बढ़ रहा है। किन्तु यह वेद ज्ञान विहीन है। देव दयानन्द का वह स्वर्णिम वाक्य जो वैदिक संसार के प्रत्येक अंक में मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित किया जाता है उसे कभी भी, किसी भी व्यक्ति ने नहीं भूलना चाहिए अन्यथा वह व्यक्ति हो अथवा देश हो अथवा संसार ही क्यों न हो उसे विनाश से कोई नहीं बचा सकता। जो इस प्रकार है।

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं।

यहाँ उपासना से तात्पर्य निकटता से है और परमात्मा की निकटता परमात्मा के ज्ञान वेद से ही हो सकती है।

यहाँ हमें अन्य राजनीतिक विचारधारा के समझने की अथवा मोदी विरोधी होने की भूल न करें।जो बात सर्वहित की है वह कही गई है। जब तक राज्य संचालन के अधिकारी वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता नहीं होंगे तब तक संसार को त्यागी-तपस्वी महानुभाव मिलना दुर्लभ है **'आओ! लौट चलें वेदों की ओर!'** ■

'पितुष्पिता' - स्वामी श्रद्धानन्द

प्र तद्वोचेदमृतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम विभृतं गुहा सत्।
त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पिताऽसत्।।

(यजु. ३२.९)

● देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'
'वरेण्यम' अवंतिका (प्रथम),
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)
दूरभाष : ५७१-२७४२०६१

पदार्थ- हे मनुष्यों! **(यः)** जो **(गन्धर्वः)** वेदवाणी को धारण करने वाला **(विद्वान्)** पण्डित **(गुहा)** बुद्धि में **(विभृतम्)** विशेषधारण किए **(अमृतम्)** नाशरहित **(धाम)** मुक्ति के स्थान **(तत्)** उस **(सत)** नित्यचेतना ब्रह्म का **(नु)** शीघ्र **(प्र. वीचेत्)** गुणकर्म स्वभावों के सहित उपदेश करे और जो **(अस्य)** इस अविनाशी ब्रह्म के **(गुहा)** ज्ञान में **(निहिता)** स्थित **(पदानि)** जानने योग्य **(त्रीणि)** तीन उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय वा भूत, भविष्य, वर्तमान काल है **(तानि)** उनको **(वेद)** जानता है **(सः)** वह **(पितुः)** अपने पिता व सर्वरक्षक ईश्वर का **(पिता)** ज्ञान देने वा आस्तित्व संरक्षक **(असत्)** होवे।

भावार्थ- हे मनुष्यों! जो विद्वान लोग ईश्वर के मुक्ति साधक बुद्धिस्थ स्वरूप का उपदेश करें ठीक-ठीक पदार्थों के और ईश्वर के गुण स्वभाव को जाने वे अवस्था में बड़े पितादिकों के भी रक्षा के योग्य होते हैं ऐसा जानो।

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी श्रद्धानन्द ने इस वेदमन्त्र को अपने जीवन में किस प्रकार धारण करके ऋषित्व का वरण किया इसकी कहानी उनकी युवावस्था से प्रारम्भ होती है, जब वे मुन्शीराम के नाम से जाने जाते थे। बाल्यकाल में ही इनकी ममतामयी माँ की मृत्यु हो गई थी। उच्च पुलिस अधिकारी के लाड़ले पुत्र मुन्शीराम रईसजादों के मित्र बनकर बुराइयों की मूर्ति बन चुके थे, किन्तु बरेली में महर्षि दयानन्द के एकपक्षीय सत्संग के रंग में उन बुराइयों के ताने-बाने ढीले हो गए। पिताजी सेवानिवृत्त होकर अपने ग्राम तलवन आ गए। मुन्शीराम जालन्धर में एक वर्ष मुख्तार रहकर वकालत की तैयारी हेतु लाहौर चले गए थे। जहाँ महर्षि दयानन्द के रचित सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर न केवल उनके संशय-शूल फूल बन गए थे प्रत्युत समस्त दुर्गुण दुर्व्यसन दूर होकर इनकी नास्तिकता की भूमि पर आस्तिकता का मधुबन लहराने लगा था और आर्यसमाज में आने के कारण एक नया धर्म-पुरुष का जीवन प्राप्त हो गया था। जब आर्यसमाज की स्थापना हुई तो मुन्शीराम को इनकी अनुपस्थिति में ही प्रधान बनाकर लाहौर सूचना भेज दी गई थी।

होली के अवकाश में जब वे लाहौर से जालन्धर आए तो इनके सामाजिक व्याख्यानों का अच्छा प्रभाव मित्रों पर तो पड़ा ही पिताजी को भी पता चल गया था कि उनका बेटा अब नास्तिक नहीं योग्य आस्तिक बन गया है। पिताजी के रुग्ण होने के समाचार से ये उनके पास पहुँचकर उनकी सेवा शुश्रूषा में लग गए। पिताजी अपेक्षाकृत कुछ स्वस्थ हुए तभी निर्जला एकादशी का दिन आ गया। आज झज्झर पानी से भरकर उसके ढक्कन पर खरबूजा, मिठाई, दक्षिणा रखकर सारे घर को संकल्प पढ़ना था। मुन्शीराम ने एक ओर छिपकर पुस्तक पढ़ने की व्यस्तता के आधार पर इस पूजा-पाठ से बहुत बचना चाहा किन्तु बारी-बारी सब संकल्प पढ़ चुके थे तो अन्ततः पिताजी ने उनको बुला ही लिया। वे बोले "आओ मुन्शीराम तुम कहाँ थे हमने तुम्हारी प्रतीक्षा करके सबसे संकल्प पढ़ा दिया है। सो संकल्प पढ़ो फिर मैं भी संकल्प पढ़कर निवृत्त हो जाऊँ।" मुन्शीराम ने डरते-डरते संकोचपूर्वक इस ढोंग में भाग लेने से मना कर दिया। पिताजी निराश होकर चुप रह गए। पिताजी की बात न मानने कारण ये भी दो-तीन दिन तक उनके सामने जाने में घबराते रहे।

तलवन में मुन्शीराम दो मास रहे और सत्यार्थप्रकाश, पंचमहायज्ञविधि, आर्याभिविनय ग्रन्थों का पूर्ण परायण करके ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का भी आधा भाग पढ़ लिया था। ग्रामीण पाठशाला के एक मुन्शी जी जो संस्कृतज्ञ थे- पं. काशीराम को अपने इस स्वाध्याय में साथी बना कर उन्हें अपना शिष्य बना लिया था। काशीराम के बड़े परिवार की नियमित आर्थिक सहायता पिताजी करते थे और वे वृद्ध पिताजी को संस्कृत के धार्मिक ग्रन्थ अर्थ सहित पढ़कर सुनाया करते थे। लो लाहौर जाने का समय आ गया और एक घटना फिर घट गई। सुन्दर नागौरी बैलों से जुती मझोली गाड़ी पर सामान लाद कर मुन्शीराम सवार हुए और प्रस्थान से पूर्व पिताजी की आज्ञा लेने पहुँच गए। पिताजी अपने बनवाए मन्दिर के समीपवर्ती बड़े कमरे में तकिया लगाए बैठे थे। इन्होंने पिताजी के चरणों पर सिर रखकर प्रणाम किया और चलने की अनुमति चाही। पिताजी ने आशीर्वाद तो दिया किन्तु एक परीक्षा में भी डाल दिया।

सेवक से एक थाली में मिठाई और तब की एक अठन्नी (आधा रुपया) रखवाकर मुन्शीराम के सामने करवा दिया और कह दिया- "जाओ पुत्र ठाकुरजी को मत्था टेककर विदा होओ। भगवान् राम के पायक हनुमान तुम्हारी रक्षा करें। यह सुनकर मुन्शीराम स्तब्ध रह गए। पिताजी ने समझा मुन्शीराम अठन्नी कम समझ रहे हैं तो उसके स्थान पर पूरा एक रुपया रखवा कर फिर कहा लो पुत्र! अब ठीक हो गया, देर होती है : ठाकुरजी को मत्था टेककर सवार हो जाओ।" अपने पूज्य पिता के आशीर्वाद- लालसा की इस घड़ी में असीम साहस जुटाकर मुन्शीराम को बोलना पड़ा **"पिताजी! बात अठन्नी या रुपए की नहीं है। मैं अपने सिद्धान्तों के विरुद्ध कोई काम कैसे कर सकता हूँ। हाँ सांसारिक व्यवहार में आप जो आज्ञा दें, उसके पालन के लिए मैं सदैव तत्पर हूँ।"** यह सुनकर भला किस पिता को क्रोध नहीं आता। इनके पिताजी के शब्दों में क्रोध कम निराशा अधिक टपक पड़ी। "मुझे विश्वास नहीं कि मरने पर मुझे कोई पानी देने वाला भी रहेगा- यही भगवान् तेरी इच्छा।" फिर धीरे से उन्होंने कहा- अच्छा अब जाओ, देर होगी। मुन्शीराम अपने सर पर संकल्प-विकल्प का बोझ लेकर पिताजी को प्रणाम कर यात्रा पर चल दिए।

मुन्शीराम ने सोचा कि जब मैं पिता की स्वर्ग प्राप्ति में सहायक नहीं और उनके धार्मिक विचारों के योग्य नहीं तो मुझे उनके धन पर भी क्या अधिकार है। पिताजी ने इनके व्ययार्थ ५० रु. दिए थे- उन्हें भी एक सम्बन्धी द्वारा वापस भेज दिया- उनके साथ एक पर्ची भी पहुँचा दिया जिसमें लिखा- **"जब मैं आपके मन्तव्य के विरुद्ध मत रखता हूँ तो मुझे कोई अधिकार नहीं**

कि सुपात्र पुत्रों के भाग में से कुछ लूँ। जीवन रहेगा तो आपके चरणों में अपनी भेंट रखूँगा ही।'' इन्होंने तो सम्बन्धी से अनुरोध किया था कि वह इन रुपयों व पर्चे को इनके चले जाने के बाद दूसरे दिन पिताजी तक पहुँचाए। आखिर सम्बन्धी था, बन्ध कराने वाला था विग्रह कराने वाला नहीं, उसने यह सब तत्काल पिताजी तक पहुँचा दिया। पिताजी ने उन्हें उल्टे पैरों घोड़े पर बैठाकर मुन्शीराम का पीछा करने को कहा और वह धनराशि उन्हें वापिस करते हुए यह सन्देश भी कहलवा दिया- **''तुम प्रतिज्ञा करके गए हो कि मेरी सांसारिक आज्ञा से मुख नहीं मोड़ोगे। यह रुपए उसी आज्ञा के अनुरूप दिए गए हैं।''** सम्बन्धी ने डेढ़ किलोमीटर के अनुरूप की दौड़ लगाकर पिताजी का स्नेहपूर्ण आशीर्वाद पहुँचाने में मुन्शीराम की सहायता की और वे जालन्धर होते हुए फिर लाहौर पहुँच गए।

इनके जाने के बाद पिताजी को मुन्शीराम की याद बैठक में रखी उन पुस्तकों ने दिला दी, जो वे यहाँ छोड़ गए थे। एक दिन पिताजी पंडित काशीराम से बोले कि देखो इन पुस्तकों में क्या लिखा है। पर मुझे सुनाने से पूर्व जाँच लो कि कहीं ये नास्तिक व प्रभुनिन्दात्मक ग्रन्थ तो नहीं हैं। पंडितजी तो मुन्शीराम के शिष्य थे- उन्होंने बड़ी चतुराई से काम लिया। पहले ब्रह्मयज्ञ का अर्थ सहित पाठ सुनाया। पिताजी की आँखें खुल गई। तब उन्हें सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास सुनाया गया तो उनकी बूढ़ी आँखों में एक नई चमक आ गई और मन श्रद्धा से भर गया। वे विह्वल होकर बोल पड़े- **''पण्डितजी हम तो अविद्या में पड़े रहे। हमारा मोक्ष कैसे होगा? हमने तो निरर्थक क्रियाएँ ही की है। अब से वैदिक सन्ध्या करेंगे''** और वे दृढ़तापूर्वक अर्थ सहित मन्त्र कण्ठस्थ करने लगे। इस प्रकार पिताजी को परम पिता का प्यार मिलने लगा और पुत्र मुन्शीराम को पिताजी का दुलार मिलने लगा।

कुछ दिन बाद मुन्शीराम लाहौर से जालन्धर लौटे और पिताजी इनसे अपनी मझौली गाड़ी पर बैठकर मिलने आए। मुन्शीराम दिनभर उनकी प्रतीक्षा करके आर्यसमाज के रात्रिकालीन सत्संग में चले गए। प्रार्थना के उपरान्त इनका वहाँ प्रवचन भी हुआ। तभी इनको पिताजी के आगमन की सूचना मिली और इन्होंने उन्हें रेलवे फाटक पर जा पकड़ा। चरण स्पर्श से अभिवादन किया ही था कि पिताजी ने पूछ लिया- **''क्या समाज का अधिवेशन समाप्त हो गया?''** इन्होंने उत्तर दिया- **''बस भजन व आरती रह गई थी आपका आगमन सुनकर भाग आया।''** पिताजी ने बड़े प्रेम भरे शब्दों में कहा- **''क्या जल्दी थी, अधिवेशन समाप्त करके ही आना चाहिए था।''** उस दिन मूर्ति पर चढ़ावा न चढ़ाने के कारण पिताजी की रुष्टता ने आर्य-आस्था की इस विशिष्टता का रूप कैसे धारण कर लिया- इसका पता दूसरे दिन मुन्शीराम को चल गया कि वास्तव में वह उस पुस्तक का ही कमाल है, जिन्हें वे पिताजी की बैठक में छोड़ आए थे।

वकालत की परीक्षा देकर मुन्शीराम लाहौर से लौट आए और अपनी मुख्तार की जमी जमाई गद्दी को फिर सम्भाल लिया। इनके पिताजी फिर अर्धांग रोग से ग्रसित होकर चारपाई पर पड़ गए और मुन्शीराम उनकी सेवा चिकित्सा के लिए तलवन पहुँच गए। एक दिन एकान्त पाकर पिताजी ने इनको बुलाया और सेवक द्वारा अपना वसीयतनामा इनके हाथ में पकड़ा दिया। जिसके अनुसार इनके तीन बड़े भाइयों को मात्र भूमि व भवन के भाग देकर सारी रोकड़ी व स्वर्णाभूषण आदि मुन्शीराम को दे दिए थे। साथ ही इनको कुछ धार्मिक कार्य भी सौंप दिए थे। मुन्शीराम ने जब अधिक अंश लेने से मना कर दिया तो पिताजी ने समझाया कि पहले तुम्हारे आर्य समाज में जाने के कारण मुझे असन्तोष था। अब वह सब समाप्त होकर अनन्य आस्था में ढल गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हें मेरे धार्मिक आकांक्षाओं की पूर्ति कर सकते हो। फिर भी मुन्शीराम ने पिताजी को उनके निर्दिष्ट धार्मिक दायित्वों को पूर्ण करने का भरोसा दिलाते हुए भाईयों से अधिक भाग लेने में अपनी अनिच्छा प्रकट कर दी। पिताजी ने कहा कि मैंने वसीयतनामा तुम्हें दिया। यह तुम्हारी सम्पत्ति है तुम जो चाहो सो करो। पिताजी का संकेतक समर्थन समझकर मुन्शीराम ने वसीयतनामे के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

पिताजी के स्वास्थ्य में सुधार देखकर उनकी चरण वन्दना के साथ विदाई लेकर मुन्शीराम फिर जालन्धर आकर अपने मुख्तार कार्य एवं आर्य समाज के प्रचार में जुट गए। पिताजी को इनके क्रातिकारी सुधारवादी व्याख्यानों की चर्चा से बड़ा सुख मिलता था। अर्धांग रोग पीड़ित पिता निर्बल होते गए। डॉक्टर को छोड़कर यूनानी हकीम का नुस्खा ये भेजते रहे। लाभ नहीं दिखाई दिया। उस दिन जब मुन्शीराम अपने पिताजी के समीप पहुँचे तो बड़े भ्राता उन्हें गिलास में कुछ पीने को दे रहे थे और पिताजी भी पीने से मना कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यदि मुन्शीराम कह देंगे तो मैं पी लूँगा। यह मेरे भले के लिए भी झूठ नहीं बोलेगा। इन्होंने विवेचना की। हकीमजी के परामर्श पर माँस का शोरबा, चने के पानी के नाम पर पिताजी को दिया जा रहा था, किन्तु १८ घण्टे के अनशन के बाद भी वे इसे नहीं ले रहे थे। मुन्शीराम ने सोचा जो क्षत्रिय पिता माँस भक्षण में दोष नहीं देखता था, वही सत्यार्थप्रकाश की तरंग में रंग कर कल्याण मार्ग पर अग्रसर है। उन्होंने उस गिलास को हटाकर चने का पानी पीने को दे दिया। वह रात्रि कठिनाई से कटी।

दूसरे दिन पिता की अन्तिम घड़ी जानकर मुन्शीराम ने उन्हें पहले ईशोपनिषद् का फिर कठोपनिषद् का पाठ सुनाया। उनके भजन सुनने की इच्छा होने पर जब पं. काशीराम ने कृष्णभक्ति का गीत सुनाया तो पिताजी ने मना करते हुए कह दिया जो आप न छूटा वह दूसरों को क्या छुटाएगा और धीरे से कहा कोई निर्वाण गीत गाओ। मुन्शीराम द्वारा गाया कबीर का निर्वाण गीत इन्हें अच्छा लगा। पिताजी ने भी अपनी अन्तिम श्वासें समझकर मुन्शीराम को संकेत से निकट बुलाकर उनके कान में कहा कि वैदिक हवन कराओ। मुन्शीराम ने हवन सामग्री लेने के लिए अपने मुन्शीजी को घोड़े पर जालन्धर भेज दिया। उन्होंने तीन बार स्मरण दिलाया कि हवन कब होगा। अन्ततः मुन्शीराम के वेदमन्त्रोच्चारण के मध्य पिताजी ने अपने प्राण त्याग दिए। लाई गई सामग्री से हवन ही नहीं हुआ, उसी हवन में पिताजी का नृयज्ञ भी हो गया।

आपने देखा कि प्रस्तुत वेदमन्त्र की भावना के अनुसार एक पुत्र ने अपने पिता को परमपिता की मोदमयी गोद प्रदान कर उसकी आत्मरक्षा करके पिता के पिता बनने की बात को सिद्ध कर दिया। पिता नानकचन्द्र के घर सं. १९१३ वि. में जन्में मुन्शीराम का पाधाजी ने राशि का नाम बृहस्पति रखा था जो यथा नाम तथा गुण सिद्ध होकर उन्हें उसी डगर पर ले गया। गुरुकुल खोलकर न जाने वे कितने आचार्य- बृहस्पतियों के पिता बन गए और त्याग तपस्यापूर्ण वैदिक ऋषियों की उत्सर्गमयी परम्परा में स्वयं प्रकाश-पुरोधा बनकर सं. १९८३ वि. में भारत माता की स्वतन्त्रता तथा विश्व मानवता की राह में बलिदान हो गए। अपने महात्मा स्वामी और ऋषि श्रद्धानन्द को शत-शत श्रद्धांजलि देते हुए लेखनी की शेष कहानी फिर कभी सुनाने के लिए अभी विश्राम देता हूँ। ■

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी

स्वामी श्रद्धानन्द थे, ईश्वर भक्त महान्।
मानवता के पुंज ये, देश भक्त बलवान।।
देश भक्त बलवान, धन्य था उनका जीवन।
गाते हैं यश गान, प्रेम से उनके सज्जन।।
देश धर्म के लिए, कष्ट झेले थे भारी।
दुष्टों से ना डरे, कभी भी वे बलधारी।।१।।

भारत में था उस समय, अंग्रेजों का राज।
होता था अन्याय तब, था सब दुखी समाज।।
था सब दुखी समाज, विवश थे सब नर-नारी।
आतंकित थी यहाँ, देश की जनता सारी।।
आजादी की माँग, अगर कोई करता था।
देश भक्त बलवान, वीर निश्चित मरता था।।२।।

वेद-विरोधी सब जगह होता था प्रचार।
विधर्मियों की मदद तब, करती थी सरकार।।
करती थी सरकार, हजारों हिन्दू भाई।
बन जाते थे पुत्र राम के, यवन-ईसाई।।
प्रतिदिन प्रातःकाल, गऊ माता बेचारी।
बिना खता निर्दोष, यहाँ जाती थी मारी।।३।।

स्वामी श्रद्धानन्द ने, जब देखा यह हाल।
दशा भयानक देखकर, उनको हुआ मलाल।।
उनको हुआ मलाल, ठोस फिर कदम उठाया।
आजादी का, महावीर ने, बिगुल बजाया।।
नहीं मौत से डरा, निराला था वह स्वामी।
सच्चाई का रहा, सदा ही सच्चा हामी।।४।।

आया दिल्ली नगर में, जिस दम रौलेट एक्ट।
कूद पड़े मैदान में, नेता थे परफैक्ट।।
नेता थे परफैक्ट, गजब का जोश दिखाया।
एक विशाल जुलूस निकाला, जग चकराया।।
संगीनों के सुनो, सामने तानी छाती।
आगे से हट गए, सभी गोरे उत्पाती।।५।।

खोला गुरुकुल कांगड़ी, भारी किया कमाल।
जग में कायम कर गए, स्वामी एक मिसाल।।
स्वामी एक मिसाल, देश को बचा लिया था।
अपना सब कुछ देश, धर्म पर वार दिया था।।
इन्द्र और हरिशचन्द्र, पुत्र अपने दो प्यारे।
स्वामी ने देश धर्म, पर दोनों वारे।।६।।

शुद्धि चक्र ले हाथ में, स्वामी श्रद्धानन्द।
विधर्मियों से भिड़ गए, नेता दानिशमन्द।।
नेता दानिशमन्द, घोर संग्राम मचाया।
पापी घबरा गए, खलों ने पाप कमाया।।
पापी अब्दुल रशीद, दुष्ट था अत्याचारी।
खल ने धोखा किया, सन्त को गोली मारी।।७।।

देश धर्म पर हो गए, स्वामीजी बलिदान।
आर्य कुमारों! देश का, करो अरे कुछ ध्यान।।
करो अरे कुछ ध्यान, फूट पापिन को त्यागो।
करो परस्पर मेल, आर्यों अब तो जागो।।
करो वेद प्रचार, जगत् को आर्य बनाओ।
'नन्दलाल' अब काम अरे, अच्छे कर जाओ।।८।।

स्वामी श्रद्धानन्द के मत भूलो उपकार।
भारत को फिर दो बना दुनिया का सरदार।।

• पं. नन्दलाल
निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

प्रथम पुण्य तिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि

स्मृति शेष पूज्य श्री विपिन रावत जनरल भारतीय सेना नायक, स्मृति शेष श्रीमती मधुलिका विपिन रावतजी तथा अन्य वीर गति को प्राप्त योद्धाओं का हवाई जहाज दुर्घटना में निधन, दिनांक ८.१२.२०२१ में काल कवलित

स्वर्गीय पूज्य श्री विपिन रावत व श्रीमती मधुलिका को शत्-शत् नमन।
आपके साथ ग्यारह वीर शहीद हुए सेना अधिकारियों ने किया जीवन हवन।।

तन मन धन से समर्पित जनरल वीर, साहसियों के महानायकों में शान।
आपके अचानक निधन से परिजनों व राष्ट्र की अपूरणीय क्षति हुई हिन्दुस्तान।।

आपकी वीरता से गौरवान्वित भारत भूमि, थर्राते थे दुश्मन चीन पाकिस्तान।
आपके साथ ले. कर्नल हरजिंदर सिंह, ब्रि. एल.एस. लिड्डर, विंग कमांडर पी.एस. चौहान।।

कैप्टन वरुण सिंह, स्क्वॉड्रन लीडर कुलदीप, नायक गुरुसेवक सिंह महान्।
जूनियर वारंट आफिसर प्रदीप अरक्कल, लांस नायक साई तेज, लांस नायक विवेक कुर्ववद्रन।।

हवलदार सतपाल, जूनियर वारंट आफिसर राणा प्रतापदास सबके निधन से देश दुखी।
आप सभी की सेवा से मातृभूमि सुरक्षित थी, आपका तप, त्याग, देश सेवा, विकास था चौमुखी।।

ईश्वर की इच्छा विधि के विधान के आगे, सब नत मस्तक हैं, सबको मिले मोक्ष शांति।
ईश चरण में मिले मोक्ष, शोकाकुल परिवार को दुःख सहन की दे क्षमता, अमर क्रांति।

आप सभी के अदम्य साहस, शौर्य से देश सुरक्षित था सदा हो गुणगान।
आप सभी को श्रद्धासुमन अर्पित श्रद्धांजलि, हर वंदे मातरम गान में आपका स्मरण भान।।

भारत भूमि के कण-कण में नाम अमर रहेगा, निज परिजनों, मात-पिता गुरु का आशीर्वाद।
जिनने मातृभूमि की रक्षा में समर्पित किया, आप सभी की हर भारतीय को सदा रहेगी याद।

• सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी
अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास बुरहानपुर (म.प्र.),
चलभाष : ९९२६७६११४३

गतांक पृष्ठ १६ से आगे

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

● ई. चन्द्रप्रकाश महाजन
प्रधान : आर्य समाज नूरपुर, जसूर (हि.प्र.)
चलभाष : ८६२७०४१०४४, ९४१८००८०४४

६. निष्क्रमण संस्कार:- बालक को चौथे महीने सूर्य व चन्द्र दर्शन कराना। इससे आंखों की रोशनी बढ़ती है। शारीरिक, मानसिक विकास होता है। इस संस्कार के दिन प्रातःकाल सूर्योदय के पश्चात् बालक को शुद्ध जल से स्नान करा, सुन्दर वस्त्र पहनायें। बालक को घर से बाहर जहां का वायुस्थान शुद्ध हो वहाँ भ्रमण कराना चाहिए।

७. अन्नप्राशन संस्कार:- जब बच्चे में अन्न पचाने की शक्ति आ जाए यानि छठे महीने में बच्चे को घी युक्त भात अथवा दही शहद और घृत तीनों को भात के साथ मिलाकर अन्नप्राशन करायें। इस समय दांत आने शुरु हो जाते हैं। इससे मन, शरीर स्वस्थ होता है।

८. चूड़ाकर्म संस्कार:- (मुण्डन संस्कार) एक वर्ष बाद या तीन वर्ष बाद कराना चाहिए। जन्म के बाल मालिन्य युक्त तथा कमजोर होते हैं। बाद में उगले वाले बाल मजबूत तथा सिर की त्वचा को रोगमुक्त रखने वाले होते हैं। बाल सुन्दरता और बुद्धि का प्रतीक हैं। बाल काटने के बाद मक्खन अथवा दही की मलाई हाथ में लगा, बालक के सिर पर लगाकर स्नान करा देवें। बालक को आशीर्वाद दें।

९. कर्णवेध संस्कार:- बालक के कर्ण वा नासिका के वेध का समय जन्म के तीसरे या पाँचवें वर्ष किसी वैद्य के हाथ से कराने चाहिए, जो नाड़ी को बचा कर करें। यह कई रोगों के लिए निवारक का कार्य करता है।

१०. उपनयन संस्कार:- विद्या प्राप्ति के लिए आचार्य के पास ले जाना ही उपनयन संस्कार है।

हे ब्रह्मचारी! तुम यज्ञ के समीप ले जाने के योग्य हो, इसलिए मैं तुम्हें सूत्र निर्मित यज्ञोपवित पहनाकर देव पूजनात्मक कर्म से बांधता हूँ। आचार्य शिष्य को कहे:- हे शिष्य! तेरे हृदय को मैं अपने अधीन करता हूँ। तेरा चित्त मेरे चित्त के अनुकूल सदा रहे। शिष्य आचार्य से कहे:- हे आचार्य! आपके हृदय को मैं उत्तम शिक्षा और विद्या की उन्नति में धारण करता हूँ।

त्रिसूत्र - यज्ञोपवित के तीन धागे, ३ ऋणों की याद दिलाते हैं। पितृ ऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण।

११. वेद - आरम्भ संस्कार:- उसे कहते हैं जिसमें गायत्री मन्त्र से लेकर सांगोपांग चारों वेदों के अध्ययन करने के लिए नियम धारण किये जाते हैं। स्वामी जी के अनुसार जो दिन उपनयन संस्कार का है, वही वेदारम्भ का है यदि उसी दिवस में न हो सके अथवा करने की इच्छा न हो तो दूसरे दिन करें।

१२. समावर्त्तन संस्कार:- समावर्त्तन संस्कार उसे कहते हैं कि जिसमें ब्रह्मचर्यव्रत सांगोपांग, वेदविद्या, उत्तम शिक्षा और पदार्थ विज्ञान को पूर्ण रीति से प्राप्त करके विवाह-विधानपूर्वक गृहाश्रम को ग्रहण करने के लिए विद्यालय को छोड़ के घर की ओर आना।

जब आचार्यकुल से अपना पुत्र घर आवे तब ब्रह्मचारी के माता पिता उसे बड़े मान और उत्साह से अपने घर लायें।

संस्कार में आये हुए आचार्य को उत्तम, सत्कारपूर्वक भोजन कराके पुत्र के माता-पिता आचार्य को उत्तम आसन पर बैठा वस्त्र, धन, गोदान यथाशक्ति दे कर आचार्य के उत्तम गुणों की प्रशंसा करें।

१३. विवाह संस्कार:- विवाह उसको कहते हैं कि जो पूर्ण ब्रह्मचर्य द्वारा विद्या-बल को प्राप्त तथा सब प्रकार से शुभ गुण-कर्म स्वभाव में तुल्य, परस्पर प्रीति युक्त होके सन्तानोत्पत्ति और अपने-अपने वर्णाश्रम के अनुकूल उत्तम कर्म करने के लिए स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध होता है।

उत्तरायण शुक्लपक्ष अच्छे अथवा किसी भी दिन सायंकाल अर्थात् जिस दिन प्रसन्नता हो उस दिन विवाह करना चाहिए। विवाह का उद्देश्य दिव्य सन्तान उत्पन्न करना है। हे मानव! गृहस्थ आश्रम रूपी उत्कृष्ट धर्म के लिए ईश्वर ने तुझे बनाया है। इसी उत्कृष्ट व्यवस्था का नाम विवाह है।

गृहस्थ आश्रम संस्कार उसे कहते हैं जो सुख प्राप्ति के लिए विवाह करके अपने सामर्थ्य अनुसार परोपकार करना, ईश्वरोपासना करना, गृह कृत्य करना, सत्य धर्म में ही अपना तन,मन तथा धन लगाना, धर्मानुसार सन्तान की उत्पत्ति करना है। गृहस्थाश्रम सब आश्रमों में बड़ा कहलाता है। इसलिए गृहस्थाश्रम की सभी ऋषि-मुनियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

विवाह दो शरीरों का नहीं दो आत्माओं का मिलन है। जल के समान एक हो जाना जिसकी एक बूंद भी अलग नहीं कर सकते। जल के गुणों को धारण करना, जल के गुण हैं, शीतलता, पवित्रता, सामंजस्यता, विनम्रता, सहनशीलता ओर आवश्यकतानुसार ढल जाना सुखी जीवन का आधार है। जो स्त्री माता की छः पीढ़ी और पिता के गोत्र की न हो, वही द्विजों के लिए विवाह करने में उत्तम है।

१४. वानप्रस्थ संस्कार:- यह ५० वर्षों के बाद से प्रारम्भ होता है। जब पुत्र का भी पुत्र हो जावे, तब पुरुष वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर सकता है। इसमें व्यक्ति सारे घर की जिम्मेदारी बड़े बेटे को सौंपकर स्वयं घर छोड़कर विद्या अध्यापन तथा तपस्या का कार्य करता है। श्रद्धापूर्वक ब्रह्मचर्य और गृहस्थाश्रम का अनुष्ठान करके वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करना चाहिए। वानप्रस्थ मनुष्य को विद्या का दान देने वाला, दयालु तथा किसी से कुछ पदार्थ न लेने वाला होना चाहिए।

यदि स्त्री चले तो साथ ले जावें, नहीं तो अपनी पत्नी को शिक्षा कर जावें कि तुम सदा पुत्र को धर्ममार्ग में चलने के लिए और अधर्म से हटाने के लिए शिक्षा देती रहना।

१५. संन्यास संस्कार:- संन्यासी उसे कहते हैं जो मोहादि आवरण, पक्षपात छोड़ के विरक्त होकर सर्व पृथ्वी में परोपकार हेतू विचरण करें। जिस दिन दृढ़ वैराग्य प्राप्त हो उसी दिन चाहे वानप्रस्थ का समय पूरा न हुआ हो अथवा वानप्रस्थ आश्रम का अनुष्ठान न करके गृहस्थाश्रम से ही संन्यासश्रम ग्रहण करें। क्योंकि संन्यास के दृढ़ वैराग्य और पूर्ण ज्ञान का होना ही मुख्य कारण है। **(शेष भाग पृष्ठ ३० पर)**

वेद एवं सृष्टि विज्ञान

• शिवनारायण उपाध्याय
१३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४-२५०१७८५

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के चौथे अध्याय में वेद के मुख्य विषय के विषय में विस्तृत चर्चा की है। उनके अनुसार वेदों के अवयव रूप विषय तो अनेक हैं, परन्तु उनमें चार मुख्य हैं- (१) विज्ञान (२) कर्म (३) उपासना और (४) ज्ञान। विज्ञान उसको कहते हैं कि जो कर्म, उपासना और ज्ञान इन तीनों से यथावत् ज्ञान लेना और परमेश्वर से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध होना, उनसे यथावत् उपयोग लेना। इससे यह विषय इन चारों में भी प्रधान है। यह भी दो प्रकार का है- (१) परमेश्वर का यथावत् ज्ञान और उसकी आज्ञा का बराबर पालन करना और (२) उसके द्वारा रचे हुए सब पदार्थों के गुणों को यथावत विचार कर उनसे कार्य सिद्ध करना। इन दोनों में से भी ईश्वर का जो प्रतिपादन है वही मुख्य है। वेदान्त स्पष्ट घोषणा करता है कि- **जन्माद्यस्ययत-** (वे.द. १.१२) **सृष्टि की स्थिति और प्रलय जिससे होती है वह ब्रह्म है।**

-शास्त्रयोनित्वात्। वे.द. १.१.३ **(शास्त्र)** मनुष्यों को नियमपूर्वक चलाने वाले वेद शास्त्रों का **(योनित्वात)** कारण होने से तथा **'तन्तु समन्वयात्'** वे.द. १.१.४ **(तत्)** इसमें **(तू)** तुम **(आक्षेपकर्ता) (समन्वयात्)** सब विद्वानों का एकमत होने से। इसी प्रकार यजुर्वेद का भी यही कहना है कि ब्रह्म ही वेदों का मुख्य विषय है। अब हम विज्ञान एवं वैदिक वाङ्मय के आधार पर यह देखने का यत्न करते हैं कि क्या वास्तव में ईश्वर सृष्टि का रचियता, प्रलयकर्ता, ज्ञान का उद्‌गाता तथा विद्वानों के द्वारा एकमत से स्वीकार किया जाता है। इस विषय में पहले हम विज्ञान का मत जानने का प्रयास करते हैं। पश्चिम में विज्ञान का प्रारंभ चौथी शताब्दि पूर्व हुआ माना जाता है। हम यहाँ संक्षेप में चौथी सदी पूर्व से लेकर आज तक सृष्टि उत्पत्ति, विस्तार तथा प्रलय के विषय में पश्चिम के वैज्ञानिकों के विचार पहले प्रस्तुत कर रहे हैं।

वर्तमान काल के प्रसिद्ध भौतिक शास्त्र के वैज्ञानिक स्टीफन डब्ल्यू हाकिङ्ग अपनी पुस्तक **'द थ्योरी ऑफ एनर्जी थिंग'** में लिखते हैं कि ३४० ई.पूर्व यूनानी दार्शनिक अरिस्टोटल ने यह सिद्ध करने के लिए कि पृथ्वी गोलाकार है अपनी पुस्तक **'ऑन द हेवन्स'** में दो अच्छे तर्क दिए हैं। पहला तर्क था कि चन्द्रग्रहण होने का कारण पृथ्वी का सूर्य और चन्द्रमा के बीच आ जाने से सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा के कुछ भाग पर पृथ्वी की छाया पड़ने के कारण नहीं पहुँच पाता है। चन्द्रमा पर पड़ने वाली पृथ्वी की यह छाया सदैव गोलाकार दिखाई देती है। यदि पृथ्वी चपटी होती तो उसकी छाया दीर्घ वृत्ताकार होती। इससे सिद्ध हुआ कि पृथ्वी गोल है। दूसरा तर्क यह था कि यदि ध्रुव तारे को दक्षिणी गोलार्द्ध से देखा जाता है तो वह उससे नीचे दिखाई देता है जितना की उत्तरी गोलार्द्ध में दिखाई देता है। इससे भी यह सिद्ध होता है कि पृथ्वी गोल है।

अरिस्टोटल का यह भी सोचना था कि पृथ्वी सृष्टि का केन्द्र है तथा यह स्थिर है एवं चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह और सभी तारे गोलाकार (वृत्ताकार) मार्ग से इसका चक्कर लगाते रहते हैं। उसका यह भी मानना था कि गोलाकार गति सबसे पूर्ण होती है। टोलेसी ने पहली सदी में इस विचार को और आगे बढ़ाया। उसके नमूने में पृथ्वी केन्द्र में स्थित स्थिर थी तथा चन्द्र, सूर्य तथा उस समय तक ज्ञात पाँच ग्रहों (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) द्वारा वृत्ताकार मार्ग द्वारा उसकी परिक्रमा की जाती थी। इस नमूने में सबसे बाद कुछ स्थिर तारे थे जो सदैव एक ही स्थिति में दिखाई देते थे। ईसाई धर्म ने इसे तुरन्त सृष्टि की परिकल्पना के रूप में स्वीकार कर दिया, क्योंकि यह बाइबिल में लिखे वर्णन के अनुरूप ही था। उसके बाद लम्बे समय तक यही मान्यता चलती रही। सन् १५१४ में पौलेंड निवासी एक पादरी निकलोस कोपरनिक्स ने एक सरल नमूना रखा। उसका विचार था कि सूर्य स्थिर है तथा पृथ्वी एवं ग्रह उसके चारों ओर वृत्ताकार मार्ग से चक्कर लगाते हैं। उसने अपने इस विचार को चर्च के डर से गुप्त नाम से प्रकाशित किया, परन्तु फिर भी उसे मृत्यु के बाद मृत्यु दंड मिला। कुछ वर्षों उपरान्त ब्रूनो ने भी यही विचार रखा। ब्रूनो को चर्च की आज्ञा से जीवित जला दिया गया। ब्रूनो बहादुर था, वह सत्य पर अडिग रहा और मृत्यु का सामना हँसते हुए किया। फिर सत्रहवीं सदी के प्रारम्भ में जोहन केसलर तथा गैलिलियो गेलिली ने कोपरनिकस के सिद्धान्त का समर्थन किया। गेलिलियो ने सन् १६०९ में अपने दूरदर्शक यन्त्र द्वारा आकाश को देखा तो पाया कि सभी आकाशीय पिंड पृथ्वी का चक्कर नहीं लगाते हैं। कोपरनिकस के नमूने में सुधार करतेहुए केपलर ने बताया कि ग्रह दीर्घ वृत्ताकार मार्ग से घूमते हैं। गैलिलियो को अपनी खोज के कारण क्षमा माँग लेने पर भी ९ वर्ष तक घर में नजरबंद होकर रहना पड़ा। सन् १६८७ में सर आइजक न्यूयन ने बताया कि आकाशीय पिंड आकाश में कैसे गति करते हैं और उस जटिल गणित का भी विकास किया जो इन गतियों के विश्लेषण के लिए आवयक था। उसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त का आविष्कार किया। उसने बताया कि गुरुत्वाकर्षण के बल पर ही वस्तुएँ जमीन पर गिरती हैं तथा चन्द्रमा अंडाकार मार्ग पर चलता हुआ पृथ्वी की परिक्रमा करता है। पृथ्वी और अन्य ग्रह भी अंडाकार मार्ग पर भ्रमण करते हुए सूर्य का चक्कर लगाते हैं।

न्यूटन ने अनुभव किया कि उसके गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त के अनुसार तारे भी एक-दूसरे को आकर्षित करते हैं इसलिए ऐसा नहीं हो सकता कि वे गतिहीन हों। यदि ऐसा हो तो वे एक-एक करके केन्द्रीय बिन्दु पर गिर कर नष्ट हो जाएँगे। सन् १६८१ में न्यूटन ने रिचर्ड बेन्टली को इस समस्या को सुलझाने के विषय में एक पत्र लिखा। रिचर्ड बेन्टली ने सुझाव दिया कि यदि तारों की संख्या सीमित है तो ऐसा ही होगा, परन्तु यदि तारे अनन्त हैं तो ऐसा नहीं होगा। फिर Repuslive Force की कल्पना आई और समस्या का हल निकल आया। न्यूटन की अनन्त

स्थिर सृष्टि पर एक दोष हेनरी ओलबर्स ने सन् १८२३ में लगाया। उसके अनुसार एक अनन्त स्थिर सृष्टि में सृष्टि की लगभग हर रेखा एक तारे की सतह पर जाकर समाप्त हो जाएगी। इस तरह कोई भी व्यक्ति यह आशा करेगा कि सम्पूर्ण आकाश उतना ही चमकीला है जितना की सूर्य है, रात्रि में भी यही स्थिति रहेगी। इसके विरोध में ओलबर्स ने तर्क दिया कि दूर के तारों का प्रकाश बीच में आने वाले पदार्थ द्वारा सोख लिया जाएगा जिससे वह धुंधला हो जाएगा। परन्तु यदि ऐसा हुआ तो मध्य में आने वाला पदार्थ गरम हो जाएगा और उस समय तक गरम होता रहेगा जब तक कि वह भी तारे की तरह चमकने नहीं लग जाए। इस परिस्थिति से बचने का एक तरीका यह भी है कि हम मान लें कि तारे सदैव से चमकते नहीं रहे हैं परन्तु भूतकाल में किसी समय बने हैं। साथ ही यह भी मानें कि कोई भी आकाशीय पिंड गतिहीन नहीं है। फिर सन् १८७९ में फैलती हुई सृष्टि का विचार रखा। इस विचार ने यह सिद्ध कर दिया कि सृष्टि की उत्पत्ति एक निश्चित काल में हुई है। एडवर्ड हबल ने फैलती हुई सृष्टि का विचार ही नहीं रखा वरन् उसने एक फार्मूला रखा जिससे सृष्टि का निर्माण कब प्रारंभ हुआ यह भी जाना जा सकता है। उसका फार्मूला है- V=HR इसमें V= दूर हटते तारे की गति प्रति सैकंड, R= पृथ्वी से निहारिका मंडल की दूरी तथा H हब्बल नियतांक (Constant) पृथ्वी से निहारिका मंडल की दूरी $R=10^6d$ light years, V=19d miles/sec.

$\frac{1}{H}=\frac{R}{V}=$ सृष्टि की आयु

d मिलियन प्रकाश का वर्ष दूर की निहारिका, V=19d miles/sec

अब हम इस विषय पर वैदिक वाङ्मय से विचार रखते हैं। नासदीय सूक्त १०.१२९.६ कहता है- **को अद्धा वेद क इह प्रवोचत्कुत आजाता कुतं इयं विसृष्टि अर्वाग्देवाअस्य विसर्जनेनाधा सो वेद यत् आबभूव।**

प्रजापति परमेश्वर ही निश्चय से जानता है और इस विषय में सुखस्वरूप परमेश्वर ही (वेद के माध्यम से) बताता है कि यह सृष्टि कहाँ से आई और कहाँ से यह विविध सृष्टि उत्पन्न हुई है। विद्वान और इन्द्रियगण भी इस जगत् की रचना के बाद उत्पन्न होते हैं अतःउनमें कौन जानता है कि जिससे यह जगत् उत्पन्न हुआ है। इसी प्रकार ऋ. १.१६४.३४ में प्रश्न किया गया है। हे विद्वान्! मैं आपसे पूछता हूँ कि इस पृथ्वी का अन्त कहाँ है? ये लोक-लोकान्तर कैसे और कहाँ पर आपस में बंधे हुए हैं। ऋः १०.३१.८ में बताया गया है कि सूर्य ने अपने गुरुत्वाकर्षण से इस पृथ्वी को धारण कर रखा है। कोई भी आकाशीय पिंड स्थिर नहीं है। पृथ्वी अपने जल सहित सूर्य का चक्कर लगाती है-

आयंगौ पृश्निर क्रमीदसदन मातंर पुनः
पितरं च प्रयलत्स्व। –यजु. ३.६

पदार्थ- (अयं गौ) गौ नाम है पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमादि लोकों का। ये सब अपनी-अपनी परिधि में अन्तरिक्ष के मध्य में सदा घूमते रहते हैं। परन्तु जो जल है सो पृथ्वी की माता के समान है क्योंकि पृथ्वी जल के परमाणुओं के साथ अपने परमाणुओं से संयोग से ही उत्पन्न हुई है और मेघमंडल के जल के बीच में गर्भ के समान सदा रहती है और सूर्य उसके पिता के समान हैं इसलिए सूर्य के चारों ओर घूमती है। इसी प्रकार सब लोक अपनी कक्षा में सदा घूमते हैं।

सा गौर्वर्त्तन्तियर्य्येति निष्कृतं पयो दुहानां व्रतनीखातरः।
सा प्रब्रुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्धविषा विवस्वते।।
–ऋ. १०.६५.६

जिस–जिस का नाम 'गौ' कह आये हैं वह–वह लोक अपने–अपने मार्ग में घूमता और पृथ्वी अपनी माता सूर्य के चारों ओर घूमती है। परमेश्वर ने जिस-जिसके घूमने के लिए जो-जो मार्ग निश्चय किया है, उस-उस मार्ग में सब लोक घूमते हैं। यह गौ (पृथ्वी) अनेक प्रकार के रस, फल, फूल, तृण तथा अन्नादि पदार्थों से सब प्राणियों को निरन्तर पूर्ण करती है तथा अपने घूमने के मार्ग में सब लोक सदा घूमते-घूमते निश्चय ही से प्राप्त हो रहे हैं। जो विद्यादि का देने वाला परमेश्वर है। उसी के जानने के लिए यह सब जगत् दृष्टान्त है।

ऋ. ८.४८.१३ में बताया गया है कि चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमता है।

ऋग्वेद ८.१२ (२८, २९, ३०) में गुरुत्वाकर्षण का वर्णन है।

सदा ते हर्य्यता हरीवावृद्याते दिवे दिवे।
आदित्ते विश्वा भुवनाति ये मिरे। –ऋ. ८.१२.२८

इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि सब लोकों के साथ सूर्य का आकर्षण और सूर्य आदि के साथ परमेश्वर का आकर्षण है।

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृत मर्त्यं च।
हिंरण्ययेन सविता स्थेना देवोयाति भुवनानि पश्चयम्।
–यजुर्वेद ३३.४३

इस मन्त्र में भी आकर्षण विद्या है। फिर सृष्टि को गुरुत्वाकर्षण के कारण नष्ट होने से बचाने का कार्य शेष (परमात्मा) करते हैं।

वैदिक साहित्य में पृथ्वी की जानकारी देने वाले शास्त्र का नाम ही **'भूगोल'** है जो सिद्ध करता है कि पृथ्वी गोल है तथा सृष्टि को ब्रह्मांड कहा जाता है जिसका अर्थ है कि सृष्टि भी अंडे के समान गोल है।

वैदिक विचारधारा में सृष्टि को प्रवाह से अनादि माना जाता है अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति होती है, विकास होता है, क्षरण होता है और अन्त में सृष्टि नष्ट होकर प्रलय हो जाता है। इसके बाद फिर सृष्टि की उत्पत्ति होती है और क्रम प्रारंभ हो जाता है।

सृष्टि फैल रही है यह विचार भी ऋ. ८.१.३४ में व्यक्त है। सृष्टि की कोई सीमा नहीं है। कई तारों से प्रकाश पृथ्वी की ओर उनके जन्मकाल से चल रहा है परन्तु वह अब तक पृथ्वी पर नहीं पहुँच सका है। ओलबर्स का यह विचार ऋ. १.२२.४ में इस प्रकार व्यक्त है-

एते वृष्णा अमर्त्या सस्टवांसो न शश्रमुः।
इय क्षन्तः पथोरजः।

भावार्थ- भार स्वरूप न क्षणगण रजोगुण मार्ग को प्राप्त होने वाले चलते हुए भी आज तक पृथ्वी की सतह को नहीं पहुँच पाया है।

वेद के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति १९६०८५३१२३ वर्ष पूर्व हुई है तथा सृष्टि की आयु ४३२०००००० (चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष) वर्ष होती है।

इस छोटे से वर्णन से हम इस निश्चय पर पहुँच सके हैं कि वेद एवं विज्ञान में पर्याप्त समानता है। ■

इह चेदवेदीत् अथ सत्यमस्ति : हे मनुष्य! आत्म तत्व और परम तत्व को जान अन्यथा महाविनाश

● रामफल सिंह आर्य
वैदिक प्रवक्ता, भिवानी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१८२७७७१४, ९४१८४७७७१४

भारतीय दर्शन की विश्व को एक बहुत बड़ी एवं महत्वपूर्ण देन है कि उसने केवल शरीर के स्तर पर जीने की अपेक्षा, केवल भौतिक स्तर पर जीने की अपेक्षा अनश्वर तत्व, अनादि सत्ता आत्मा के बारे में बतलाया। दोनों दशाओं में, अवस्थाओं में अर्थात् केवल शरीर और सांसारिक पदार्थों को ही जीवन का अंतिम लक्ष्य मानकर जीने में तथा इनसे ऊपर उठकर आत्मिक स्तर पर जीने में उतना ही अंतर है जितना कि दिन एवं रात में। एक विचारधारा केवल भोगवादी बनाकर अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का सर्वस्व हरण करना सिखाती है अपितु इससे भी आगे बढ़कर उनके प्राणों के साथ भी खेलने की ओर धकेल देती है वहीं दूसरी विचारधारा अन्य प्राणियों को भी अपने जैसा मानकर उनके सुख-दुःख के लिए स्वयं को बलिदान करने तक ले जाती है। बहुत सामान्य शब्दों में कहें तो एक भोगवादी बना देती है तो दूसरी त्यागवादी। पूर्व और पश्चिम में यही अंतर है। ये बाह्य पदार्थों में सुख को ढूँढते फिरते हैं और हम यह जानते थे कि बाह्य पदार्थों का सुख अस्थायी और दुःख मिश्रित है, स्थायी एवं नितान्त सुख केवल ईश्वर में है। 'थे' शब्द का प्रयोग हमने इसलिए किया है कि आधुनिक युग में हम भी अनार्ष ज्ञान के गुरु यूरोप की इस भोगवादी विकृति से ग्रसित हो चुके हैं अपितु उनसे भी आगे बढ़ चुके हैं। सम्भवत: हमारे उपरोक्त मन्त्र के ऋषि इस बात का पूर्वानुमान लगा चुके थे कि भविष्य में हमारे लोगों के भी भटकने की आशंका है तभी तो सहस्त्रों वर्ष पूर्व ही उन्होंने हमें सचेत करते हुए कहा था-

इह चेदवेदीत् अथ सत्यमस्ति। न चेददिहावेदीत महती विनाष्टि।।

(केनोपनिषद् २/५)

यदि तुमने यह मानव जन्म प्राप्त करके, इसी जन्म में उस आत्मतत्व को अविनाशी ईश्वर को जान लिया तो मानव जीवन सफल और यदि यह नहीं जान पाए तो महाविनाश, घोर अनर्थ। इसलिए उस परम तत्व को इसी जन्म में जानने का प्रयास करो। न जाने जितना लम्बा चक्कर लगाकर आए हैं, न जाने कैसे-कैसे शरीरों से होकर यहाँ तक पहुँचे हैं, ईश्वर की अपार कृपा के फलस्वरूप यह मानव देह मिल सकी है, जहाँ पर अवसर प्राप्त हो पाया है कि हम सत्य को जाने, आत्मा को पहचाने। ओ भोले मनुष्य! संसार के करोड़ों मानवों के जीवन को देखकर भ्रम में मत पड़। यह मत सोच कि ये लोग भी तो अपना जीवन सांसारिक भोगों में मस्त होकर व्यतीत कर रहे हैं, यदि मैं भी उनकी भाँति जीऊँ तो क्या बुराई है? अपितु तू सदैव यह विचार कर कि ये तो महाविनाश की ओर भागे जा रहे हैं परंतु मुझे विनाश को प्राप्त नहीं होना है। भले ही मैं इस जन्म में वांछित लक्ष्य प्राप्त न कर सकूँ परंतु इतना तो अवश्य करूँ कि अगला जन्म फिर श्रेष्ठ मानव का ही मिले जिससे पुन: लक्ष्य प्राप्ति हेतु अग्रसर हो सकूँ। जब कभी मैं इस बात पर एकान्त में बैठकर विचार करता हूँ कि इस समय संसार में अरबों मनुष्य हैं। उनमें से कितने ऐसे हैं जिन्हें आत्मा एवं परमात्मा को जानने की इच्छा है? उनमें से भी कितने ऐसे हैं जिन्हें यह सब जानने के लिए सत्य मार्ग का आश्रय मिला है? उनमें से भी कितने ऐसे हैं जिन्हें इस विषय के विशेषज्ञ ऋषियों का रचित साहित्य एवं उनका प्रचार-प्रसार करने वाली किसी संस्था का आश्रय मिला? उनमें से भी कितने ऐसे हैं जो ईश भक्ति को मुख्य मानकर उसके लिए क्रियात्मक रूप से लगे हुए हैं। जब यह गिनती करते-करते मैं अन्तिम बिन्दु पर आता हूँ तो संसार के परम सौभाग्यशाली लोगों के बीच अपने आपको पाकर मेरा रोम-रोम पुलकित हो जाता है। ईश्वर के आशीर्वाद का ध्यान करके आँखों में अश्रुकण आ जाते हैं। हम भले ही आज उपनिषदों के ऋषियों के सीधे सम्बन्ध में नहीं हैं परन्तु उनके दिए मंत्र हमारा मार्गदर्शन एक, दीप-स्तम्भ की भाँति कर रहे हैं। क्यों वे बार-बार कह रहे हैं कि ईश्वर को जानो, अपनी वास्तविक सत्ता को जानो? क्या उन्हें सांसारिक पदार्थ उपलब्ध न थे? क्या वे उनका उपभोग करने में असमर्थ थे? नहीं-नहीं कदापि नहीं। परन्तु वे इस बात को अवश्य ही जानते थे कि प्रथम तो शरीर ही सदा रहने वाला नहीं है और दूसरे इन्द्रियाँ भी कुछ समय के उपरान्त शिथिल हो जाती हैं। यदि भोगों का अभ्यास किया तो फिर उन्हें भोगने में असमर्थ हो जाने पर जो दशा मनुष्य की हो जाती है उसका वर्णन भी महाराज भर्तृहरि ने कुछ यूँ किया है-

उत्खांत निधिशंकया क्षितितलं ध्माता गिरेर्धातवो,
निस्तीर्णः सरितां पतिर्नृपतयो यत्नेन सन्तोषिता:।
मन्त्राराधन तत्परेण मनसा नीता: श्मशाने निशा:,
प्राप्तं काणवराटकोऽपि न मयातृष्णेऽधुना मुंच माम्।।

(वैराग्य ४)

अर्थात् मैंने खजाना मिलने की आशा में सारी धरती खोद डाली, सोना मिलने की आशा में पर्वत की सब धातुएँ फूँक डाली, सागर को पार कर लिया एवं राजाओं की यत्न के सेवा करके उन्हें सन्तुष्ट किया। मन्त्र सिद्धि करने में लगे हुए मन से मैंने मरघट में बहुत सी रातें बिताई पर मुझे कानी कौड़ी न मिली। हे लालच अब तो मुझे छोड़।

इसलिए ऋषि पहले ही सावधान कर रहे हैं, पुकार कर रहे हैं संसार के पदार्थों में वह शक्ति नहीं है कि आपको दीर्घ काल तक सुख प्रदान कर सकें। थोड़ा बहुत जो सुख है वह भी ईश्वर के व्यापक होने के कारण है। याद रख ओ भोले मनुष्य! तेरी आँख, तेरी वाणी, तेरी श्रोत्र, तेरे प्राण भी यदि कार्य करते हैं तो वह भी ईश्वर की कृपा से है। वही तेरी आँख की भी आँख है, तेरी वाणी की भी वाणी है, तेरे श्रोत्र का भी श्रोत्र है। ये

सब उसी की प्रेरणा से ही प्रेरित हो अपना कार्य कर रहे हैं।

श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनः यद्वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः।
चक्षुषः चक्षुरतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माद लोकात् अमृता भवन्ति

(केनो. १/१)

शरीर में आत्मा होने के कारण ही मनुष्य इन्द्रियों के द्वारा विषयों का ग्रहण करता है इसलिए आत्मा को ही आँख की भी आँख और श्रोत्र का भी श्रोत्र कहा गया है। देह, इन्द्रिय और आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जानने वाला ही अविद्या रूपी शरीर को छोड़कर विद्या रूपी अमृत को प्राप्त कर लेता है, सत्य को प्राप्त कर लेता है।

इसके साथ-साथ यह भी स्मरण रख कि वह ईश्वर इन बाह्य इन्द्रियों का विषय ही नहीं है। यदि तुम इन चर्म चक्षुओं से आत्म तत्व, परमात्मा को जानना चाहते हो तो बहुत बड़ी भूल में पड़े हो। ये केवल भौतिक पदार्थों को जान सकती है अभौतिक को नहीं।

यद् वाचानभ्यूदितं, येन वागभ्यूद्यते, तदेव,
ब्रह्मात्वं विद्धि न इदं यदिदमुपासते।
यत् श्रोत्रेण न शृणोति, येन श्रोत्रमिदं श्रुतम् तदेव
त्वं ब्रह्म विद्धि न इदं दपमुपासते।।

अर्थात् वाणी उसे बतला नहीं सकती, अपितु जिससे वाणी प्रकट होती है, उसी ब्रह्म को तू जान, कान भी उसको सुन नहीं सकते अपितु जिसके द्वारा कान सुनते हैं उसी ब्रह्म को तू जान। यह सारा संसार अबोध बच्चे भी भाँति जिन भोगों के पीछे भाग कर उन्मत्त हुआ जाता है अर्थात् विभिन्न भोग साधनों को ही ब्रह्म मान कर उनकी उपासना में लगा है, उनके पीछे तू मत जा। इसलिए उपनिषद् के ऋषि ने दो बार कहा है कि जिस संसार की पूजा तुम कर रहे हो वह ब्रह्म नहीं है। कण-कण में व्यापक उस सत्ता को जानना ही तुम्हारे जीवन का परम लक्ष्य है, अन्तिम लक्ष्य है। हम लोग प्रायः यह विचार करते रहते हैं कि यह सब ध्यान, भजन, साधना तो वृद्धावस्था के कार्य हैं, युवावस्था तो है ही भोग के लिए। यह बहुत ही भ्रामक विचार है। जिस साधना को तुम इतना तुच्छ, इतना सरल मान रहे हो उसका पता तो तब लगेगा जब तुम उस ओर चलोगे। वृद्धावस्था में जब स्मरण शक्ति क्षीण हो जाएगी, कमर भी झुक जाएगी, घुटने भी बैठने योग्य नहीं रहेंगे, मन में सैकड़ों चिन्ताएँ चिता बन कर जलेंगी, भोगाग्नि पल-पल व्यथित करेगी, रोगों का घर यह शरीर बन जाएगा तब तुम क्या सोचते हो, साधना हो सकेगी, पारिवारिक चिन्ताएँ तुम्हें श्वास लेने देंगी? यदि पूरे जीवन में केवल पन्द्रह मिनट भी निश्चल भाव से शांत होकर बैठने का अभ्यास नहीं किया तो आयु के परिपक्व होने पर तुम समाधि लगाना चाहते हो?

किमाश्चर्यमतः परम्। आचार्य प्रवर चाणक्यजी ने इसका चित्रण करते हुए कहा है-

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परिवर्जयन्ति,
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति गात्रम्।
आयु परिस्त्रवीत भिन्न घटादिवाम्भो,
लोको न चात्महितमाचरतीति चित्रम्।।

(चाणक्य. ४/२४)

वृद्धावस्था भयंकर व्याघ्री के समान घात लगा कर बैठी है, रोग विभिन्न शत्रुओं के समान चारों ओर से शरीर पर आक्रमण कर रहे हैं। आयु के दिन ऐसे व्यतीत होते जा रहे हैं जैसे टूटे हुए घड़े से पानी रिसता रहता है। अहा! महान् आश्चर्य है कि लोग फिर भी कभी आत्मा के हित के बारे में नहीं सोचते हैं।

कितना सटीक वर्णन किया है महामति चाणक्यजी ने। एक समय था जब इस देश में लोग ब्रह्म को जानने के लिए लालायित रहा करते थे। साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या यहाँ के राजा भी ब्रह्मवित होते थे। राज प्रसादों में रहकर उनमें अलिप्त रहना कोई कम त्याग की बात नहीं है। इसके लिए बहुत ऊँची योग्यता और असाधारण चिन्तन की अपेक्षा होती है। तनिक विचार करके देखिए कि जिस देश का राजा ब्रह्मविद् हो तो प्रजा कैसी होगी? समय के प्रबल प्रवाह ने वह उच्च अवस्था हमसे छीन ली और भोगों का दास बना डाला। हम भी पश्चिम की चकाचौंध से चुंधिया गए। आपने कभी मकौड़ों की पंक्ति को पृथ्वी पर चलते हुए देखा है? वे एक के पीछे दूसरा चलते हुए बिल में समा जाते हैं। कुछ ऐसी ही दशा हमारी भी है। हम भी एक दूसरे के पीछे आँखें मूँद कर चलते हैं और एक दिन मृत्युरूपी बिल में समा जाते हैं। इसीलिए **उपनिषद् का ऋषि पुकार कर कह रहा है, इह चेदवेदीत्, इह चेदवेदीत्। इस ब्रह्म विद्या को जान, पुनः पुनः जान और यदि नहीं जान पाया तो महती विनष्टि, महती विनष्टि।**

प्रभु को भुला नहीं

दुनिया यह कर्म क्षेत्र है, कोई सैरगाह नहीं।
जब तक है श्वांस तन में, प्रभु को भुला नहीं।।

खुश किस्मती से है मिला चोला, मनुष्य का यह।
जीती हुई यह बाजी है यह, इसको हार नहीं।।

चौरस बिछी है काम, क्रोध, लोभ, मोह की।
खेला यह खेल फिर तो बस फँसा नहीं।।

मत मस्त हो विषयों का मद, पी करके रात दिन।
ऐ बेखबर दम का तेरे कुछ भी पता नहीं।।

धन माल जिसपे इस कदर भुला हुआ है तू।
यह तो किसी के आज तक हमराह गया नहीं।।

तृष्णा न यह मिटेगी और न भोग होंगे कम।
लेकिन तू ही मर जाएगा, क्यों समझता नहीं।।

करना हो धर्म जो 'विषन' आज कर ले।
कल का तो कुछ पता नहीं, होगा कि या नहीं।।

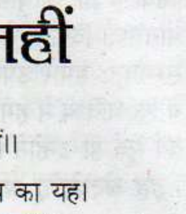

● **देवकुमार प्रसाद आर्य**
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज,
५०, फौजा बगान, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८९६९५४२३३९

न्यायदर्शन : षोड्श पदार्थों के तत्वज्ञान से मोक्ष प्राप्ति

गतांक से आगे....

● डॉ. सत्यदेव सिंह
५०७, गोदावरी ब्लॉक, अशोका सिटी,
गोवर्धन चौक, कृष्णा नगर,
मथुरा-३८१००४ (उ.प्र.)
चलभाष : ९९९७९८९९६३, ८६३०५०६१०५

१५. जाति- जाति शब्द यहाँ एक विशेष अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। यह भी दूसरे प्रकार का दुष्ट-उत्तर ही है। जब हम वादी को दोष-रहित युक्ति का खण्डन करने के लिए किसी भी प्रकार के सादृश्य या वैषम्य पर अवलम्बित दुष्ट अनुमान की सहायता लेते हैं, तो उस अनुमान को **'जाति'** कहते हैं। मान लीजिए एक अनुमान है कि **'शब्द'** अनित्य है, क्योंकि यह घट की भाँति एक कार्य है। अब यदि इस अनुमान का खण्डन करने के लिए कोई कहे कि 'नहीं' शब्द नित्य है, क्योंकि यह काल की तरह अदृश्य है तो यह एक **'जाति'** होगी, क्योंकि नित्य और अदृश्य में कोई नियत सम्बन्ध नहीं है। जब कोई व्यक्ति अपने पक्ष की सिद्धि के लिए पञ्चावयव का सही प्रयोग करता है। तब दूसरा व्यक्ति समझ लेता है कि **'मेरे पास इसका सही उत्तर नहीं है। मेरी बात झूठ सिद्ध हो चुकी है, फिर भी इसको मूर्ख बनाने की कोशिश करता हूँ, शायद मेरी चाल चल जाए।'** ऐसा सोचकर वह कुछ साधर्म्य अथवा कुछ वैधर्म्य दिखाकर चालाकी से विपक्षी का अनुचित खण्डन करता है, इसे ही **'जाति'** कहते हैं।

१६. निग्रह स्थान- वाद-विवाद में जहाँ पराजय का स्थान पहुँच जाता है, उसे **'निग्रह-स्थान'** कहते हैं। निग्रह स्थान के दो कारण हैं- एक तो गलत ज्ञान, दूसरा अज्ञान। जब कोई वादी या पक्ष अपने विपक्ष की युक्तियों का अर्थ ठीक रूप से नहीं समझता है या समझा नहीं सकता तो वह एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ उसे हार माननी पड़ती है। जब वाद-विवाद में कोई प्रतिज्ञा हेतु को बदलता है या दोषपूर्ण युक्तियों की सहायता लेता है तो वह भी उसकी पराजय का कारण होता है।

न्याय दर्शन में अन्य भारतीय दर्शनों की तरह जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। मोक्ष के स्वरूप और उसके साधन की चर्चा करने के पूर्व, बन्धन के सम्बन्ध में कुछ जानना अपेक्षित होगा। न्यायदर्शन के मतानुसार आत्मा, शरीर-इन्द्रियों और मन से भिन्न है। परन्तु अज्ञान के कारण आत्मा, शरीर-इन्द्रिय अथवा मन से अपना पार्थक्य नहीं समझती। इसके विपरीत वह शरीर, इन्द्रिय और मन को अपना अंग समझने लगती है। इन विषयों के साथ वह तादात्म्य हासिल करती है। इसे ही **'बन्धन'** कहते हैं। बन्धन की अवस्था में मानव-मन में गलत धारणायें निवास करने लगती हैं। इनमें कुछ गलत धारणायें निम्नलिखित हैं-

(१) अनात्म तत्व को आत्मा समझना, (२) क्षणिक वस्तु को स्थायी समझना, (३) दुःख को सुख समझना, (४) अप्रिय वस्तु को प्रिय समझना, (५) कर्म एवं कर्म-फल का निषेध करना तथा (६) मोक्ष अपवर्ग के सम्बन्ध में सन्देह करना आदि-आदि।

बन्धन की अवस्था में आत्मा को सांसारिक दुःखों के अधीन रहना पड़ता है। बन्धन की अवस्था में आत्मा को निरन्तर जन्म ग्रहण करना पड़ता है। इस प्रकार जीवन के दुखों को सहना तथा पुनः-पुनः जन्म ग्रहण करना ही बन्धन है। बन्धन का अन्त मोक्ष है।

नैयायिकों के अनुसार **'मोक्ष'** दुःख के पूर्ण निरोध की अवस्था है। **'मोक्ष'** को अपवर्ग भी कहते हैं। अपवर्ग का अर्थ है-शरीर और इन्द्रियों के बन्धन से आत्मा का मुक्त होना। जब तक आत्मा, शरीर-इन्द्रिय और मन से ग्रसित रहता है तब तक उसे दुख से पूर्ण छुटकारा नहीं मिल सकता है। महर्षि गौतम ने **'दुःख के आत्यन्तिक उच्छेद'** को मोक्ष कहा है। हमें प्रगाढ़ निद्रा के समय या किसी रोग से विमुक्त होने पर दुःख से छुटकारा कुछ ही काल तक के लिए मिलता है और पुनः दुःख की अनुभूति होती है। **'मोक्ष'** इसके विपरीत दुःखों से हमेशा के लिए मुक्त हो जाने का नाम है।

संक्षेपतः न्याय दर्शन में बताये गये १६ पदार्थों का वास्तविक ज्ञान/सत्यज्ञान हो जाने पर, साधक/योगी के मोक्ष का द्वार खुल जाता है और दृश्य जगत् से वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। सांसारिक मोह-माया, राग-द्वेष आदि नष्ट हो जाते हैं। अपने जीवन को चलाने और अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए साधक मनुष्य संसार के पदार्थों से यथासंभव सहयोग लेंगे भी और सहयोग देंगे भी। वह अनासक्त भाव से अपने समस्त कार्य पूर्ण करेंगे। तत्पश्चात् साधक सांसारिक व्यवहारों को पूरा करता हुआ मोक्षमार्ग (श्रेयमार्ग) पर तीव्रता के साथ चल पड़ता है।

इस प्रकार न्याय दर्शन में बताये गये १६ पदार्थों के तत्वज्ञान से, अथवा ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति आदि सब पदार्थों के तत्वज्ञान से अविद्या (मिथ्याज्ञान) का नाश होता है और मिथ्याज्ञान के नष्ट हो जाने पर (उससे उत्पन्न होने वाले) राग-द्वेष-मोह दोषों के नष्ट होने पर सकामकर्म भी बन्द हो जाते हैं। साधक के द्वारा सकाम कर्म न करने से आगे आने वाला जन्म भी रुक जाता है, जब अगला जन्म रुक गया या अगला जन्म नहीं हुआ तो दुःख पूरी तरह समाप्त हो जाता है। इसी को मोक्ष कहते हैं। इस मोक्ष में ईश्वर के साथ सम्बन्ध जुड़ जाने से परमानन्द की प्राप्ति होती है।

विस्तृत अध्ययन के लिए महर्षि गौतम के न्याय दर्शन का स्वाध्याय एवं सद्य प्रकाशित **'सत्य की खोज'** नामक पुस्तक का गहन अध्ययन अत्यावश्यक है। यह पुस्तक दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट, आर्यवन रोजड़ (गुजरात) द्वारा प्रकाशित की गई है। ■

सत्यार्थ प्रकाश कणिका

अष्टम समुल्लास : सृष्टि, उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय

गतांक पृष्ठ १२ से आगे

• देवनारायण सोनी
शिव शक्ति नगर, बंगाली चौराहे के पास, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष : ९८२६०७६९३३

ईश्वर क्या है?

१. सृष्टि : उत्पत्ति से पूर्व यह जगत् अन्धकार से आवृत्त और जानने के अयोग्य था, परमात्मा ही सृष्टि को उत्पन्न कर इसका धारण और अन्त में प्रलय करता है। वही परमात्मा जानने योग्य है।

२. तीन पदार्थ अनादि है– (१) ईश्वर (२) जीव (३) जगत् का कारण रूप है प्रकृति। ये न कभी उत्पन्न होते हैं न कभी नष्ट होते हैं।

(क) ईश्वर : निमित्त कारण (मुख्य निमित्त) जिसके बनाने से कुछ बने, अन्यथा न बने, आप स्वयं बने नहीं। घड़े के उदाहरण में- कुम्हार।

(ख) प्रकृति : उपादान कारण (परमेश्वर व जीव के अधीन) जिसके बिना कुछ न बने या न बने वही अवस्थान्तर रूप हो के बने और बिगड़े भी। घड़े के लिए- मिट्टी।

(ग) जीव : गौण निमित्त कारण (साधारण निमित्त कारण) यथा ज्ञान, दर्शन, बल, हाथ और नाना प्रकार के साधन तथा दिशा, काल और आकाशादि। दण्ड चक्र, आँख, हाथ इन्द्रियों की क्रिया आदि। (तीन कारण ही प्रत्येक सृष्टि के लिए जरूरी है।)

३. परमात्मा सत्, चित् और आनन्द स्वरूप है परन्तु–

(क) जगत् कार्यरूप से असत् – अर्थात् सदा न रहने वाला जड़ व आनन्द रहित है।

(ख) परमात्मा (अज) अर्थात् उत्पन्न नहीं होता और जगत् उत्पन्न हुआ है।

(ग) परमात्मा अदृश्य है, जगत् दृश्यमान है।

(घ) परमात्मा अखण्ड है और जगत् के खण्ड हो सकते हैं।

(ङ) परमात्मा विभु है और जगत् परिछिन्न (ढँका) हुआ है और परामात्मा पूर्ण आनन्द स्वरूप है।

४. सृष्टि उत्पत्ति का प्रयोजन : सृष्टि क्यों बनाई? एवं क्या आवश्यकता थी? यह शंका व कुतर्क, आलसी व बुद्धिहीन लोगों द्वारा किये जाते हैं। पुरुषार्थी द्वारा नहीं, सृष्टि में दु:ख की तुलना में सुख कई-कई गुणा अधिक है। कुछ तो मुक्ति के साधन कर मोक्ष के आनन्द को भी प्राप्त कर सकते हैं। केवल प्रलय में जीव निकम्मे व सुसुप्ति में पड़े रहते हैं। पूर्व सृष्टि में किये पाप पुण्यों का फल परमात्मा किस प्रकार दे सके अन्यथा जीव क्यों कर फल भोग सके। ईश्वर में जगत् रचना का जो विज्ञान, बल क्रिया है उसका जगत् की उत्पत्ति के अतिरिक्त क्या प्रयोजन हो सकता है? परमात्मा के न्याय, दया आदि गुण भी तभी सार्थक हो सकते हैं जब वह जगत् को बनाएँ।

५. बीज और वृक्ष में कौन पहले : बीज पहले और वृक्ष पीछे। कारण का नाम बीज होने से वह कार्य प्रथम होता है। परमात्मा बीज रूपी प्रकृति से संसार रूपी वृक्ष को उत्पन्न करता है। सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय के लिए किसी चेतन कर्ता को मानना आवश्यक है।

६. निराकार ईश्वर : निराकार ईश्वर ही सृष्टि की उत्पत्ति कर सकता है। निराकार ही सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी हो सकता है। सब अपने ही सामर्थ्य से ही करता है। देहधारी (साकार) नहीं होने से परमात्मा प्रकृति को पकड़कर जगदाकार कर देता है। क्योंकि वह प्रकृति से सूक्ष्म और उसमें व्यापक है।

यदि परमात्मा साकार होता तो हमारी भाँति परमाणु और प्रकृति को वश में नहीं ला सकता। मूल कारण अथवा कारण का कारण नहीं हुआ करता। जगत् की उत्पत्ति के पूर्व परमेश्वर, प्रकृति और जीव तीनों अनादि रूप से विद्यमान थे। यदि इनमें से एक भी न हो तो यह जगत् भी नहीं हो पाता, क्यों किसी वस्तु को बनने में तीन कारण अवश्य चाहिये। एक बनाने वाला, दूसरा उपयोगकर्ता, तीसरा बनने की सामग्री, वस्तु आदि अन्यथा सृष्टि (निर्माण) हो ही नहीं सकता। सृष्टि के सब आश्चर्यजनक पदार्थ नदी, पर्वत, रत्न, आभूषण, करोड़ों भूगोल सूर्यादि लोकों का निर्माण, धारण, भ्रामण एवं इनको युक्तियुक्त नियमों में रखना परमेश्वर के बिना कोई नहीं कर सकता।

७. जीव परमेश्वर नहीं हो सकता : जैसा कि जैन मतावलम्बियों के मत में 'अनादि ईश्वर कोई नहीं है, किन्तु जीव ही योगाभ्यास साधना करते-करते परमेश्वर हो जाता है।'

यह मत ठीक नहीं है क्योंकि-

(क) ईश्वर न हो, तो जीवों के शरीर और इन्द्रियों का निर्माण कौन करे।

(ख) इन्द्रियों के बिना, जीव योग साधना नहीं कर सकता, साधन न होने से 'सिद्ध' भी नहीं हो सकता।

ईश्वर में तो स्वयं सनातन अनादि सिद्धि है जिसमें अनन्त सिद्धि है। उसके तुल्य कोई भी जीव नहीं हो सकता। कोई भी सिद्ध या योगी सृष्टिक्रम व नियमों में परिवर्तन नहीं कर सकता। अत: जीव कभी परमेश्वर नहीं हो सकता।

८. शास्त्रों में अविरोध (षड्दर्शनों में) : सृष्टि उत्पत्ति 'क्रम में शास्त्रों में परस्पर विरोध नहीं है अर्थात् जिस-जिस क्रम में प्रलय (आकाशादि क्रम) होता है वहाँ-वहाँ से सृष्टि उत्पत्ति होती है। छ:दर्शन में भी विरोध नहीं है। अपितु यहाँ एक-दूसरे की पूरकता झलकती है।

सृष्टि छ: कारणों से बनी है। इन कारणों की व्याख्या एक-एक दर्शनकार ने की है। इनमें परस्पर विरोध नहीं है। मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, सांख्य, वेदान्त, योग ये षड्दर्शन कहलाते हैं। ■

(क्रमशः आगामी अंक में)

सत्यार्थ प्रकाश : चतुर्थ समुल्लास काव्य सुधा

अथ समावर्तन विवाह गृहाश्रम विधि वक्ष्यामः

गतांक पृष्ठ १५ से आगे

विश्वास हो दृढ़ ईश पर, विचलित न होवे मन कभी।
प्रणमङ्ग मत अपना करे, सद्गुण-विचार रखे सभी।।
ये कर्म क्षत्रिय वर्ण के हैं, दानशील उदार हो।
निज पुत्र सम समझे प्रजा को, शान्त सब व्यवहार हो।।९७।।

५०वैश्य-पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वणिक पथं कुसीदं च वैश्य कृषिमेव च।।
-मनुस्मृति १/९०।।

छन्दः गो आदि पशु पाले मुदित वर्धन और रक्षा करे।
दे दान यज्ञ करे-करावे धर्म हित धन व्यय करे।।
अध्ययन करे सद्शास्त्र का, व्यापार का विस्तार कर।
आपूर्ति हित उद्यत रहे, कृषि भी करे हो अन्न घर।।९८।
लघु ब्याज पर ऋण दे उचित, उपकार की रख भावना।
ये कर्म-गुण है वैश्य, होवे न ठग वञ्चक मना।।९९।।

५१.शूद्र- एकमेव हि शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया।।

छन्द- अभिमान, निन्दा, द्वेष, ईर्ष्या आदि दुर्गुण छोड़ के-
सेवा करे सब वर्ण की, पाले स्व घर धन जोड़ के।।
निज मन लगावे ईश में, निन्दित न समझ आपको।
ये कर्म-गुण हैं, शूद्र के, तत्पर तजे अघ-पाप को।।१००।।

५२. प्रति वर्ण के गुण-कर्म ये संक्षेप में मैंने लिखे।
अधिकार दें सबको यथोचित जो जहाँ जैसे दिखे।।
यदि यह व्यवस्था हो सुगम सब लोग उन्नतशील हों।
भयभीत उत्तम वर्ण होंगे, वंश मत अश्लील हों।।१०१।।
कारण कि यदि हों मूर्ख संतति, दोष बहु लग जाएंगे।
फिर शूद्र बनकर रहेंगे, पद न उत्तम पायेंगे।।
संतान भी डरते रहेंगे, चाल-चलन सुधार के।
विद्या पढ़ेंगे चाव से, दुर्गुण-कुमति को मार के।।१०२।।
औ निम्न वर्णों का रहेगी चेष्टा शुभ ज्ञान में।
उत्साह से उत्तम बनेंगे, निज समान विधान में।।

५३. यदि धर्म-ज्ञान प्रचार का अधिकार ब्राह्मण को मिले।
तो पूर्ण विद्यावान धार्मिक नीति-नय सबको मिले।।१०३।।
विद्वान् धार्मिक ही यथोचित कार्य कर सकते महा।
विकसित बनेगा राष्ट्र इससे ज्ञान बल पाकर अहा!

५४. क्षत्रिय चलावे राज्य जिससे हानि-विघ्न न हो कभी।
अधिकार यह उसको रहे, तो हो निरापद कार्य भी।।

५५. व्यापार-पशु पालन करे, हो वैश्य को अधिकार यह।
सकुशल वही निपटा सकेंगे, कर्म के आधार यह।।१०४।।

५६. सेवा करें तन्मय सभी की, शूद्र धर्म विचार के।
विद्याहित वे कर न सकते, अन्य कार्य विचार के।।
पर देहबल से कार्य सेवा का, सभी कर जाएँगे।
उसके सहारे जीविका निर्वाह भी कर पाएँगे।।१०५।।
प्रति वर्ण को अधिकार दे, इस भाँति सभ्य समाज भी।
राजा करे समुचित व्यवस्था, औ उठावे भार भी।।
इस भाँति निज-निज कर्म में सब वर्ण पूर्ण प्रवृत्त हों।
तो काम कुछ बिगड़े नहीं, प्रमुदित सभी के चित्त हों।।१०६।।

विवाह के लक्षण अर्थात् प्रकार

५७. ब्राह्मो दैवस्तथैवर्षिः प्राजात्यस्तथाऽसुरः।
गन्धर्वो राक्षसश्चैव पैशचशचाष्टमोऽधर्मः।।
-मनुस्मृति ३/२१

छन्द- है अष्ट भाँति विवाह मनु महाराज ने ऐसा कहा।
प्रत्यक्ष वह ही दृष्टिगोचर आज भी है हो रहा।।
है प्रथम ब्राह्म, द्वितीय दैव, तृतीय आर्ष, विमल सुभग
है चतुः प्राजापत्य जो उस कोटि का, फिर निंद्य सम।।१०७।।
है पाँचवा आसुर और गन्धर्व, छठवाँ निम्नतम।
है सातवाँ राक्षस, श्रुत ही निंद्य श्रेणी का अधम।।
है आठवाँ पैशाच अति ही भ्रष्ट घृणित प्रकार का।
उसकी न निंदा योग्य कोई शब्द है संसार का।।१०८।।

ब्राह्म विवाह

५८. कन्या और वर ब्रह्मचर्य व्रती तथा विद्वान् हों।
धार्मिक-सुशील, दृढ़व्रती और पूर्णतः मतिमान हों।।
दोनों परस्पर प्रीतिपूर्वक जब विवाह करें मुदित।
वह ही कहाता श्रेष्ठ ब्राह्म विवाह, होता उभय-हित।।१०९।।

दैव विवाह

५९. विधिवत् रचा के यज्ञ ऋत्विज रूप में माता-पिता।
दामाद को दुहिता प्रदान करें, सुभूषण से सजा।।
यह दैव पद्धति ब्याह है, मध्यम इसे बुधजन कहे।
ऐसा करें यदि वर-वधू निश्चय समादर से रहें।।११०।।

(क्रमशः)

● पं. देवनारायण तिवारी
धर्माचार्य आर्य समाज, कलकत्ता
विधान सरणी, कोलकाता, प. बंगाल
चलभाष : ९८३०४२०४९६

धर्म सरिता (भाग-३)

● रमेशचन्द्र भाट
कवि, लेखक, समाजसेवी एवं
से.नि. तकनीकी अधिकारी, परमाणु ऊर्जा विभाग
पसन्द नगर, कोटड़ा, अजमेर (राजस्थान)
चलभाष : ९४१३३५६७२८

पारसी मत

करीब ४१२७ वर्ष पूर्व पारस प्रदेश में महात्मा जरथ्रुस्त हुए। उन्होंने अनेक देवताओं की पूजा का खंडन किया व एक ईश्वर की उपासना का उपदेश दिया। जंद भाषा के ८० प्रतिशत शब्द संस्कृत से मिलते-जुलते हैं, (उदाहरण : असुर-अहुर, मास-माह, सप्त-हप्त, आहुति-आजुती, हिम-जिम, बाहु-बाजु, छंद-जंद, अवस्था-अवस्ता, सिंधु-हिन्दू)। इनका धर्मग्रन्थ जन्दावेस्ता है जिसके मंत्रों के अर्थ भी वेदों से मिलते-जुलते हैं। जंद शब्द पारसियों की धर्म पुस्तक तथा उसकी भाषा दोनों के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे छंद वेद व वैदिक भाषा दोनों के लिए आता है। अवस्ता (अ- विस्ता) का अर्थ **'जो कुछ जाना गया'** यानी **'ज्ञान'** यही वेद शब्द का अर्थ भी है। इन्होंने दस नियम बनाए जो करीब-करीब हर विचारधारा में पाए जाते हैं।

सातवीं सदी ईस्वी तक अरबों के अत्याचारों से त्रस्त अनेकों जरथोस्ती मतावलंबी समुंद्र के रास्ते भारत के पश्चिम तट पर आए जहाँ पर सर्वसमावेशी भारतीयों ने उन्हें शरण प्रदान की। यहाँ वे पारसी (फारसी का अपभ्रंश) कहलाए। अरब के जिहादी आक्रमणकारियों ने प्राचीन फारस का लगभग सारा धार्मिक एवं सांस्कृतिक साहित्य जला कर नष्ट कर डाला था, जैसा कि वो हर जगह आक्रमण करने के बाद करते हैं। आजकल हम जो कुछ भी पारसी मत के बारे में जानते हैं उसका आधार ईरान के पहाड़ों पर स्थित शिलालेखों पर उत्कीर्ण तथा वाचिक परंपरा से प्राप्त जानकारियों का संग्रह है।

इस मत में, दैहिक मूल्य को बुराई की अस्थाई जीत माना जाता है। इसके बाद मृतक की आत्मा का इन्साफ होता है यदि वह आत्मा सदाचारी हुई तो आनन्द व प्रकाश में वास पाएगी और यदि दुराचरी हुई तो अंधकार व नैराश्य की गहराइयों में जाएगी, लेकिन दुराचारी आत्मा की यह स्थिति भी अस्थायी है। यह भी मान्यता है कि अंततः कोई मुक्तिदाता आकर बुराई पर अच्छाई की जीत पूरी करेंगे तब **'अहुरमजदा'** (शुभकारी शक्ति) असीम प्रकाश रूप से सामर्थ्यवान होंगे। फिर आत्माओं का अंतिम फैसला होगा जिसके बाद भौतिक शरीर का पुनरोत्थान होगा तथा उसका अपनी आत्मा के साथ पुनर्मिलन होगा। समय का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा और अहुरमजदा की सात कृतियाँ (आकाश, जल, पृथ्वी, वनस्पति, पशु, मानव एवं अग्नि जिससे इस विश्व का सृजन हुआ) शाश्वत धन्यता से एक साथ आ मिलेंगी और आनंदमय अनश्वर अस्तित्व को प्राप्त करेंगी।

धर्म की अवनति का एक कारण है, शब्द का भावार्थ न समझ कर शब्दार्थ को ग्रहण करना। दूसरा महत्वपूर्ण कारण यह है कि वैदिक शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं, इनमें से किस अर्थ को हमने ग्रहण किया है, उसके अनुसार अर्थ बदलते जाते हैं। शब्द के अर्थ का ग्रहण मानव के ज्ञान, परिवेश व स्वार्थ पर निर्भर करता है। इसे हम वेदों में आए इंद्र और वृत्रासुर संग्राम के आलंकारिक वर्णन को समझने का प्रयास करते हैं। **इन्द्र** यानी **'सूर्य'** व उसके प्रकाश को ढँकने वाला **वृत** यानी **'बादल'** जो प्रकाश को रोककर अंधकार फैला देता है लेकिन अंत में **इंद्र** के विजयी होने पर वृत का नाश होकर वह पृथ्वी पर गिर पड़ता है और **इंद्र** (सूर्य) **वृत** (बादल) की ओट से निकलकर अन्धकार को दूर कर देता है। इसकी तुलना हम जीव के अंदर ज्ञान व अज्ञान के कारण होने वाले धर्म और अधर्म के मध्य द्वन्द्व से भी कर सकते हैं जो कि मानव मन में हमेशा चलता रहता है। इसमें मनुष्य का आत्मा युद्ध क्षेत्र बनता है। कभी-कभी आत्मा स्वार्थवश स्वेच्छापूर्वक कपटी मायावी सर्प सदृश **वृत** (अधर्म) के अधीन हो जाता जिसके कारण उस आत्मा से धर्म यानी **इंद्र** का राज उठ जाता है और **अधर्म** (काम, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह व अहंकार) का शासन हो जाता है। **इंद्र** की सेना यानि भलाई और धर्म के लक्षण आत्मा को त्याग जाते हैं। आत्मा के पाप व दुख के गर्त में गिरने से जब वह अपनी कुवासनाओं का फल भोगता है तब परमेश्वर की कल्याणकारी भक्ति उसका अधर्मावस्था से उद्धार करती है।

वृत के वेदोक्त नामों में एक नाम **'अहि'** है जिसका संस्कृत भाषा में एक अर्थ **सर्प** भी है। यही नाम जन्दावेस्ता में **'अहि'** या **'अजहिदहक'** (संस्कृत– अहिदाहक) के रूप में प्रयुक्त होता है। वैदिक शब्द अहि के अर्थ को जन्दावेस्ता में अंगसमन्यु (पाप की शक्ति) के रूप में अनेकों स्थलों पर **सर्प** (जलता हुआ सांप) के नाम से वर्णन आया है। इसे **अहुर मजदा** (शुभकारी) और **अंगिरा मन्यु** (अशुभकारी) दो प्रकार के संसार के रूप में भी बताया है जिसमें **अंगिरा मन्यु** ने अहुरमजदा के जगत् पर आक्रमण कर उसे बिगाड़ा तथा अंत में **अहुरमजदा** ने **अंगिरा मन्यु** (पाप की शक्ति) को हराकर निकाल दिया। इस प्रकार वैदिक अलंकारिक कथा का पारसी स्वरूप बन गया जो आगे के मतों में अलग स्वरूप की कथा के रूप में व्यक्त हुआ है। समय के प्रवाह के साथ पारसी मत में भी धर्म के नाम पर कई विकृत विचारधाराओं/अधार्मिक कृत्यों का मिश्रण होने लगा।

क्रमशः (यहूदी मत, बौद्ध मत, जैन मत, पौराणिक मत व अन्य मतों का उदय...)

संदर्भ पुस्तक : धर्म का आदि-स्त्रोत,
प्रकाशक- आर्ष साहित्य मंडल लिमिटेड, अजमेर।

पुस्तक समीक्षा

दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य का समालोचनात्मक अध्ययन

● **ओमप्रकाश आर्य**
आर्य समाज, रावतभाटा वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७१७

'दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य का समालोचनात्मक अध्ययन' डॉ. प्रदीप कुमारजी चतुर्वेदी द्वारा लिखित एक समीक्षात्मक ग्रन्थ है। लगभग ३८० पृष्ठों की इस पुस्तक में डॉ. प्रदीप कुमारजी ने मेधाव्रताचार्य द्वारा रचित महाकाव्य **'दयानन्द दिग्विजय'** की बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से विवेचना की है। यह महाकाव्य २७ सर्गों का है जिसका संक्षिप्त परिचय इस समालोचनात्मक ग्रन्थ में दिया गया है। मैंने पूरी पुस्तक को आद्योपांत पढ़ा और पाया कि जिस प्रकार मेधाव्रताचार्य ने संस्कृत साहित्य में श्रीवृद्धि कर महर्षि दयादनन्द को काव्य शैली में रूपायित करने का प्रयत्न किया है उसी प्रकार डॉ. प्रदीप कुमार चतुर्वेदी ने एक तलस्पर्शी अध्येता बनकर उसकी समीक्षा लिखी है। इस समीक्षा में उन्होंने जहाँ काव्यधर्म के गुणों पर अपनी प्रातिभ लेखनी का परिचय दिया है, वही उनका संस्कृतभाषानुराग, विद्वत्ता, स्वाध्यायशीलता, सूक्ष्म विवेचना, शब्दकोश भंडार, लेखनरुचिता के प्रति अपार प्रेम भी दृष्टिगोचर होता है। **'दयानन्द दिग्विजय'** महाकाव्य के एक-एक बिन्दु को स्पर्श किया है। यही इस समालोचनात्मक ग्रन्थ की महति विशेषता है।

सम्पूर्ण पुस्तक पाँच अध्यायों में विभक्त है। मेधाव्रताचार्य के जीवन-परिचय से लेकर सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची तक सभी आलोच्य विषय आ गए हैं। कृति-परिचय में गद्य, पद्य, नाटक व अन्य कृतियों का उल्लेख किया है। उसमें सभी विषयों का संक्षिप्त परिचय है। डॉ. प्रदीप कुमार चतुर्वेदी ने मेधाव्रताचार्य के कृतियों का उल्लेख करके उनके संस्कृत साहित्य के संवर्द्धन के योगदान को दर्शाया है। आज भी इस भाषा के ऊपर जीवन न्योछावर करने वालों की कमी नहीं है। यह एक जीवन्त भाषा है। देवभाषा है। अमर भाषा है। परमात्मा की भाषा है। देवता लोग इसी भाषा का प्रयोग करते हैं। संस्कृत भाषा में समस्त ज्ञान समाहित है। वेद शब्द का अर्थ ही है- सत्ता, ज्ञान, विचार, लाभ, चेतनाख्यानिवास।

लेखक : डॉ. प्रदीप कुमार चतुर्वेदी
पृष्ठ : ३८०, मूल्य : ६०० रु.
सम्पर्क: ९४०६६७४५३१

डॉ. प्रदीपकुमार चतुर्वेदी ने उक्त ग्रन्थ में विषयवस्तु के साथ-साथ छन्द, अलंकार, रस, रीति, ध्वनि, गुण, व्याकरणिक विवेचन, प्रकृति का वर्णन एवं अन्य विविध विषयों पर प्रकाश डाला है। इससे उनके गहन साहित्यानुराग का पता चलता है। परिशिष्ट भाग में सूक्तियाँ, मुहावरे, लोकोक्तियों का भी उल्लेख किया है। कहाँ कौन सी बात लिखी है यह सप्रमाण नीचे निर्देशित कर दिया है। यह उच्चकोटि के साहित्यकार की विशेषता को प्रकट करता है। भाषा पर उनका एकाधिकार है। शब्दचयन में पूर्णत: दक्ष हैं। ज्ञान के कोश हैं। प्रतिभा के हीरे हैं। काव्य कला के प्रकांड मर्मज्ञ हैं।

आर्ष दृष्टि से यदि **'दयानन्द दिग्विजय'** महाकाव्य को देखा जाए तो यह एक पवित्र सन्देश देने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगा। अनार्ष काव्य ग्रन्थों में काव्यकला की प्रशंसा करने वाले भले ही उस काव्य की प्रशंसा करें किन्तु उनमें शृंगाररस की गंध अवश्य मिलेगी जो मन को मलिन बना सकती है। संस्कृत साहित्य में ऐसे कवियों की कमी नहीं है। वे अश्लीलता परोसने में पीछे नहीं रहे। वहीं **'दयानन्द दिग्विजय'** में इसका लेशमात्र भी नहीं है। कारण यह है कि उनका जीवन एकदम पवित्र और तपमय था। अखण्ड ब्रह्मचर्य से दीप्तिमान था। यह शान्तरस प्रधान महाकाव्य है। आज शान्ति के लिए ही विश्व भटक रहा है पर किसी के मन में शान्ति नहीं है। शान्ति होने पर ही जीवन में आनन्द की अनुभूति होती है। डॉ.प्रदीपकुमार चतुर्वेदी ने उस महाकाव्य के ऊपर अपनी लेखनी उठाकर जो पुष्प-सुगन्ध प्रसारित करने का सत्प्रयास किया है इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

कहा जाता है कि गुण गुणियों में जाकर गुण बन जाता है। जौहरी ही हीरे-सोने की परख कर सकता है। विद्वत्ता की पहचान विद्वान ही करता है। प्रतिभा के धनी, संस्कृत भाषा के उद्‌भट विद्वान डॉ. प्रदीपकुमार चतुर्वेदी इस ग्रन्थ-रचना के माध्यम से आर्य जगत् ही नहीं अपितु समग्र संस्कृत प्रेमियों के मध्य रमणीय रहेंगे। यह ग्रन्थ यश प्रदान करता रहेगा।

इस ग्रन्थ को लिखने के लिए डॉ. प्रदीपकुमारजी ने अथक परिश्रम किया है। इसका प्रमाण पदे-पदे मिलता है। यहाँ तक कि संख्या निरूपण भी किया है जो इस बात का प्रतीक है कि उन्होंने उक्त काव्य का बड़ी गहराई से अध्ययन किया है। अपनी समीक्षा में एक-एक उदाहरण देकर अपने कथ्य को प्रकट किया है। उस कथ्य के भावों को जानना, उसकी गहराई में जाना डॉ. साहब के अथक परिश्रम का निदर्शन प्रस्तुत करता है। आर्य समाज के संस्कृत साहित्य संवर्द्धन में यह ग्रन्थ मील का पत्थर सिद्ध होगा। मैंने तो केवल इस ग्रन्थ को पढ़ा है जबकि लेखक ने मूल ग्रन्थ का अध्ययन करके उनमें से मोतियों का चयन करके कैसे हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है यह आलोच्य विषय इस ग्रन्थ को पढ़ करके ही जाना जा सकता है।

संस्कृत प्रेमियों के बीच यह ग्रन्थ सदैव सम्मान प्राप्त करेगा। सुधीजन अपने ज्ञान के अभिवर्द्धन में इसका आश्रय लेंगे। विद्वत्समाज डॉ. प्रदीपकुमार चतुर्वेदी को उत्साह प्रदान कर उनको धन्यवाद दे। जितना ही संस्कृत भाषा का प्रचार-प्रसार होगा उतना ही हम आर्यवर्त देश की महत्ता को विश्व में स्थापित कर सकेंगे। यह देववाणी एक दिन अवश्य ही धरती की वाणी बनेगी। ■

भीतर लौटें

• **नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'**
६०२, जीएच-५३, सेक्टर-२०, पंचकुला (हरियाणा)
चलभाष : ९८७८७४८८९९

इस दुनिया में दो प्रकार के लोग होते हैं एक तो अज्ञानी जो ज्ञान ना होने के कारण और दूसरे महाज्ञानी लेकिन अपने ज्ञान के अहंकार में डूबे शब्द आडम्बर रचने वाले क्रमशः अपने तमोगुण और रजोगुण के कारण अपने अत्यन्त निकट रहने वाले ईश्वर से अत्यन्त दूर रहते हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के पांचवें मन्त्र में स्पष्ट बताया भी गया है **तद्दूरे तद्वंतिके** वह ईश्वर तो हमारे अत्यन्त निकट रहता हैं ईश्वर और हमारी दूरी तो इतनी भी नहीं जितनी हमारी आंख और भौं की है। लेकिन हम अपनी अज्ञानतावश अपने तमोगुण के कारण अपने ईश्वर से बहुत दूर हो जाते हैं। हमारे तमोगुण के कारण अज्ञानता, अबोधता का पर्दा हमारे निकट रहने वाले ईश्वर के दर्शन हमें नहीं होने देता। यह दूरी हमारे अति ज्ञानी होने के अहंकार के कारण भी होती है जब हम अपने शब्द आडम्बर के कारण पढ़े-लिखे मूर्ख बनकर भी हम अपने निकट रहने वाले ईश्वर से बहुत दूर रहते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि आखिर अपने ईश्वर से मिलने के लिए हमें क्या करना होगा? दोनों प्रकार के लोग अज्ञानी या ज्ञान के अहंकार में डूबे पढ़े लिखे मूर्ख जो अपने ईश्वर को ढूंढने बाहर घूमते रहते हैं लेकिन अपनी अज्ञानता या ज्ञान अहंकार के कारण अपने निकट रहने वाले अंतर्यामी ईश्वर से बहुत दूर रहते हैं। अपनी अज्ञानता अबोधता के कारण प्रभु से दूरी को परिभाषित करता एक स्वरचित दोहा -

परदा आंखों पर पड़ा, हम तो बड़े अबोध।
ज्ञान पा परदा हटा, होगा उसका बोध।।

ज्ञान अहंकार के कारण शब्द पाखंड रच कर खुद को ईश्वर से दूर कर लेने वालों के लिए

पाखंड रचा ज्ञान का, झूठा सब अभिमान।
शब्द जाल खुद ही बुना, फँसा मकड़ी समान।।

हमारी इस दुविधा को दूर करता ऋग्वेद एवं यजुर्वेद का यह वेद मन्त्र मनुष्य को ईश्वर के निकट पहुंचने के लिए भीतर लौट आने का आदेश देता है

न तं विदाथ य इमा जजान अन्यद युष्माकं अन्तरं बभूव।
निहारेण प्रावृता जल्पया चासुतृप उक्थशशास चरन्ति।।

अर्थात हे मनुष्यों ! तुम उसे नहीं जानते जिसने इन सब भुवनों को बनाया है। तुम अन्य प्रकार के हो गए हो और तुम्हारा उससे बहुत अन्तर हो गया है। अज्ञान से ढंके हुए और अनृत निरर्थक शब्द जाल से ढंके प्राण तृप्ति में लगे होकर या आडम्बर वाले बहुभाषी होकर भटकते हो।

हम अपने पिता से पृथक हो गए हैं जिसने यह सभी भुवन बनाए हैं। हमारा अपने पिता से अन्तर नहीं होना चाहिए। वह परमात्मा हमारे बाहर-भीतर विद्यमान है पर हम दो प्रकार के पर्दों से ढंके हुए हैं और इस धुन्ध में अपने अत्यन्त निकट रहने वाले ईश्वर को देख नहीं पाते।

नीहार- तमोगुण- अपनी अज्ञानता अबोधता अल्पज्ञता से ढँके धुन्ध के कारण निकट रहने वाले परमात्मा को नहीं देख पाते। नीहार अज्ञान से ढके लोग खाते पीते मौज करते हैं। यह जितना अपनी कामनाओं को तृप्त करते, उतना प्रभु से दूर होते जाते हैं।

जल्पि- रजोगुण - विद्या के शब्द आडम्बर से पढ़ी-लिखी मूर्खता से ज्ञान अहंकार से ढंके दोनों प्रकार के लोग अपनी-अपनी दिशा में बढ़ते लेकिन प्रभु से अपने झूठे ज्ञान आडम्बर के कारण दूर होते जा रहे हैं। जल्पावृत लोग उक्थशास होते हैं यह संसार में बड़े-बड़े शास्त्र ग्रन्थ पढ़कर जोरदार व्याख्यान देते भारी वक्ता, लेखक, शास्त्रार्थ कर्ता बाह्य शब्द जाल आडम्बर में उलझ कर भीतर बैठे प्रभु से दूर हो जाते हैं। इसलिए इस वेद मन्त्र में आदेश दिया कि '**भीतर लौटें**' और आत्मा के आत्मा सर्वान्तर्यामी ईश्वर **सर्वभूतानां हृदयेशे तिष्ठति** को अपने भीतर ही पा लें। इसलिए ही कहा है

बाहर मनवा घूमता , रहता मौज मनाय।
भीतर को लौटे तभी , वही प्रभु को पाय।।

आओ अपने भीतर को लौटें अपने भीतर ही झांकें और भीतर मन में बसे प्रभु को पा लें।

ज्योतिष का चक्कर

ज्योतिष के नाम पर लोग दूसरों को कैसे बावला बनाते और ठगते हैं? इसका एक उदाहरण यह भी है कि कुछ ऐसे ग्रहों के नाम से लोगों को भयभीत किया जाता है जिनका ब्रह्मांड में कहीं अस्तित्व ही नहीं है।

विज्ञान और भूगोल में भी ग्रहों के नाम व वर्णन आते हैं किन्तु उनमें राहु तथा केतु नामक ग्रहों का कहीं भी वर्णन नहीं आता है। इस नाम के कोई ग्रह सृष्टि में है ही नहीं। अब जो ग्रह हैं ही नहीं वे किसी का हित अथवा अहित कैसे कर सकते हैं?

राहु तथा केतु ग्रहों की कल्पना की गई है। काल्पनिक ग्रहों के नाम पर लोगों को बहकाया जा रहा है कि तुम्हारे राहु की दशा लग गई है, केतु की दशा लग गई है। ज्योतिषियों से भी जब पूछा जाता है कि क्या इन नामों के ग्रह आकाश में हैं? तब वे कहते हैं कि इस नाम के स्थूल पिंड तो नहीं हैं, छाया ग्रह है। ये छाया ग्रह क्या है? स्थूल पिंड की ही छाया होती है। काल्पनिक चीज की छाया नहीं होती है।

भारतीय लोगों में ज्योतिष के प्रति ज्यादा ही अन्धविश्वास है। ज्योतिष ही पूरे भारतीय समाज को संचालित करता है। लोगों की इस श्रद्धा को भुनाने में ज्योतिषियों ने भी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। अक्ल के अन्धे तथा गाँठ के पूरे आदमी को कौन बख्शेगा?

• **आचार्य रामगोपाल सैनी**
फतेहपुर शेखावाटी, जनपद : सीकर (राज.)
चलभाष : ९८८७३९३७९३

स्वाधीनता संग्राम के प्रथम पुरोधा स्वामी दयानन्द

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी ने कहा था कि गाँधीजी राष्ट्रपिता हैं तो स्वामी दयानन्द राष्ट्र पितामह हैं। कांग्रेस के इतिहास लेखक डॉ. पट्टाभि सीतारमैया लिखते हैं कि स्वाधीनता संग्राम में अस्सी प्रतिशत आर्यों ने भाग लिया व जेल गए। वे दयानन्द के अनुयायी थे। प्रथम क्रान्तिकारियों के गुरु श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा महर्षि दयानन्द के शिष्य थे। उन्होंने इंग्लैण्ड में इण्डिया हाउस भवन क्रय करके भारतीय विद्यार्थियों के ठहरने की व्यवस्था करके उनमें देशभक्ति व स्वाधीनता की आग फूँकी।

भारत के स्वाधीनता संग्राम की प्रथम पंक्ति में भाग लेने वाले लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्दजी, भगतसिंह, राजगुरु, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद व अनेक शहीद वीर स्वामी दयानन्द के अनुयायी थे।

स्वामीजी ने स्वाधीनता के ७५ साल पहले यह घोषणा की थी कि **'विदेशी राज्य यदि पिता तुल्य भी पालन करे तो भी वह अच्छा नहीं है। भारत पर भारतीयों का शासन होना चाहिये।'**

सन् १८५७ की स्वाधीनता संग्राम की चिंगारी को प्रज्वलित करने वाले प्रथम संन्यासी स्वामी दयानन्द थे। कौन कृतघ्न भारतवासी होगा जो स्वाधीनता स्वराज के ७५वें अमृत महोत्सव पर महर्षि दयानन्द के अहसानों को भूल सकता है। स्वाधीनता के ७५वें अमृत महोत्सव पर स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों की आहूति देने वाले अमर शहीदों के चरणों में कोटिश: विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित।

• अम्बालाल विश्वकर्मार्य
पिपलिया मण्डी, मन्दसौर
चलभाष : ८९८९५४३४१३

ऋषि का दुःख-दर्द (भाग-२)

जाग उठी आर्य समाजें, सक्रिय हुए आर्यवीर वीरांगनाएँ।
प्रभातफेरी निकालण लाग्या, झंडा ले ऊँचा ओ३म पताकाएँ।।

घर–घर लाग्या करण हवन, जोड़ा बिठाया आसपास में।
ले चरणामृत बोल्या वेद मन्त्र, घी सामग्री डाली हवनकुण्ड में।।

दान दक्षिणा आवण लागी, भवन बण्यो यज्ञमण्डप को।
वार्षिक उत्सव करवा लाग्या, आयो आनन्द भजन सुणवा को।।

आवण लाग्या धुरंधर उपदेशक, शोभा बढ़ गई साधुओं से।
सुणवा लाग्या अनोखा प्रवचन, मिल बैठ कर साधु–सन्तों से।।

आई बारी चुनाव करबा की, लगी होड़ पद पावण की।
कोई बण्या प्रधान, अरू मन्त्री खजांची कार्यकारिणी की।।

कोई करे बेमिसाल काम, जनता में अन्धविश्वास मिटावण को।
कोई खींचे टाँग, मतलबी यार, झूठा मुकद्दमा चलावण को।।

सबको दे सद्बुद्धि भगवन, आगे बढ़ गई दुनिया सारी।
कूप मण्डूप से बाहर निकले, हम होंगे महा सदाचारी।।

वेदोपदेश के आसरे सहारे, सत्यार्थ प्रकाश के वारे–न्यारे।
आगे ही आगे बढ़ते जाय तब, भारत बणसी जगद्गुरु प्यारे।।

प्रथम भाग
जून २०२२
में प्रकाशित

• ले. नरसिंह सोलंकी
प्रधान आर्य समाज, सूरसागर
चलभाष : ९४१३२८८९७९

मूल रचनाकार : स्व. श्रीयुत मुंशी दरबारीलाल 'कविरत्न'

हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी

व्यंजन वर्ण : (२५) 'र'

छप्पय : राघव राजाराम रमापति रिझइय रूरे।
रम्य रूप रसना रसज्ञ रत होहु न पूरे।।
रति पति रति रत रोपि न रमणी रोग रुखाई।
रिस रुथन राचना रारि राखिन रिपुताई।।
दरबारी लाल रुख राखिये रचना रुचिर रचाइये।
रव राम राम रटना रटिय रिझाइये।।

अर्थ : 'र' हिन्दी वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यंजन वर्ण है। इसका उच्चारण जीभ के अग्रभाग को मूर्द्धा के साथ कुछ स्पर्श कराने से होता है। यह स्पर्श वर्ण तथा ऊष्म वर्ण के मध्य का वर्ण है।

रघुवंश में जन्मे राजाराम और विष्णु भगवान को जोर तथा

गतांक पृष्ठ १४ से आगे

संकलन एवं सम्पादन
• चौ. बदनसिंह 'पूर्व विधायक'
१३/१०८, चारबाग, शाहगज आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९९२७४१६२००

सम्मान के शब्दों में पुकार कर अपनी ओर लुभाइये। उनकी मुखाकृति सुन्दर और आभा युक्त है और उनकी जिह्वा रसास्वादन करने में निपुण है। आसक्ति की पूर्ति नहीं होती है। कामदेव संभोग–इच्छुक होते हुए भी प्रेमिका के रुग्ण, सूखापन और अड़ंगा प्रस्तुत करने पर संभोग–सुख प्राप्ति से वंचित है। क्रोधित होकर रचना से झगड़ा करके शत्रुता साधना अच्छा नहीं होता। कविरत्न दरबारी लाल चाहते हैं कि रचना कार्य में रुचि उत्पन्न रहें। राम राम रटने का शब्द उच्च स्वर में उच्चारित करें और सदैव रिझाते रहें। ■

।। ओ३म् परमपिता परमात्मने नमः ।।

आर्य समाज ब्यावरा का शतवर्षीय संक्षिप्त इतिहास

● गोपाल प्रसाद अग्रवाल
प्रधान आर्य समाज ब्यावरा, जि. राजगढ़ (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५०३८५३०

सम्पूर्ण जगत् के स्वामी, आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, परमपिता परमेश्वर को शत शत नमन वन्दन। सम्पूर्ण मानव जाति के आदर्श एवं पथ प्रदर्शक महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती का पावन स्मरण। परमपिता परमात्मा की महान् अनुकम्पा से 19 वीं सदी में एक महान विभूति का प्रादुर्भाव **स्वामी दयानन्द सरस्वती** के रूप में हुआ। उस समय भारत सदियों से पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सन 1875 में आर्य समाज की स्थापना करके वेदों का ज्ञान रूपी प्रकाश जन-जन तक पहुंचाया। मानव जाति को अज्ञान के अन्धकार से निकालकर सत्पथ दिखाया और बिखरे तथा सोए हुए समाज को जागृत कर एक किया।

उन्हीं पूज्य स्वामी दयानन्द जी महाराज के मन्तव्य के अनुसार और उनका अनुसरण करते हुए परमपिता की कृपा और गुरुजनों के आशीर्वाद एवं स्वजनों के सहयोग से ऐसा हर्षोल्लास का अवसर उपस्थित हुआ है, प्रसंग है आर्य समाज मन्दिर ब्यावरा, जिला राजगढ़ ,मध्य प्रदेश के स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर शताब्दी समारोह आयोजन का जिसकी सम्पूर्ण आर्य जगत और विशेष रूप से आर्य समाज ब्यावरा से सम्बन्धित आर्यों को प्रबल प्रतीक्षा थी।

प्रभु कृपा से दिनांक 25 से 31 दिसम्बर 2022 तक शताब्दी समारोह के विशाल स्तर पर भव्य आयोजन का निर्धारण किया गया है। आयोजन में सम्पूर्ण भारतवर्ष से विद्वान, सन्यासी, भजन उपदेशक तथा गणमान्य पदाधिकारी गण और आर्यजन उपस्थित होंगे।

आर्य समाज मन्दिर ब्यावरा की स्थापना वर्ष 1923 में की गई थी। मैंने आर्य समाज के मन्दिर ब्यावरा के सभी वरिष्ठ सदस्यों से निवेदन किया था कि आप आर्य समाज का इतिहास लिखें लेकिन किसी ने इस कार्य में रुचि नहीं दिखाई। इस कारण विवश हो लेखनी उठाकर मैंने स्वयं आर्य समाज का इतिहास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर लेखनीबद्ध करने का प्रयास किया है। जिसमें मुझसे त्रुटियां होने की पूर्ण सम्भावना है क्योंकि सर्वप्रथम मैं कोई साहित्यिक प्रतिभा का धनी नहीं हूं तथा आर्य समाज ब्यावरा का कोई पुराना लिखित इतिहास अथवा इतिहास पर प्रकाश डाल सके ऐसा कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं है । जो मुझे ज्ञात है और अन्यों से वार्ता आदि से ज्ञात हुआ है उसी के आधार पर आप पाठकों की सेवा में आर्य समाज ब्यावरा का शतवर्षीय संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत है।

सर्वप्रथम अनाथ रक्षक मण्डली सम्वत् 1979 में स्थापित की गई और साप्ताहिक सत्संग एवं यज्ञ श्रीमान गोवर्धनलाल जी किल्ले वाले के मकान में चालू किया गया और एक भजन

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे।
दयानन्द का काम पूरा करेंगे।

..... नित्य प्रति गाया करते थे। इसके बाद सम्वत् 1978 में आर्य समाज मन्दिर के लिए भूमि क्रय की गई और आर्य समाज की विधिवत स्थापना कर भवन निर्माण एवं प्रचार-प्रसार कार्य प्रारम्भ किया। प्रचारकों को बुलाकर आर्य समाज का प्रचार प्रसार गांव-गांव में किया गया। यह जानकारी श्रीमान राधाकृष्ण जी सोनी की डायरी के आधार पर मुझे प्राप्त हुई।

श्रीमान ओमदत्त जी भारद्वाज ने भी आर्य समाज ब्यावरा का इतिहास लिखा है इसमें स्थापना वर्ष सन् 1923 ईस्वी, 1980 विक्रम सम्वत् श्रावण मास की श्रवण नक्षत्र वाली पूर्णिमा के पवित्र दिन लिखा है मैंने दोनों का मत लिख दिया है। आर्यसमाज मन्दिर ब्यावरा की स्थापना और प्रगति में आठ महापुरुषों का योगदान अत्यधिक है मैं सबसे पहले उन्हीं महापुरुषों के नामों को प्रस्तुत करना चाहूंगा जो इस प्रकार हैं श्रीमान रामजीदास जी आर्य, श्रीमान पूर्णानन्द जी भारद्वाज, श्रीमान जमुनालाल जी सर्राफ, श्रीमान गोवर्धनलाल जी किल्ले वाले, श्रीमान हजारीलाल जी गुप्ता, श्रीमान मोतीलाल जी सोनी, श्रीमान हरलाल जी सोनी, श्रीमान मुंशीराम नारायण जी पालीवाल इन महापुरुषों की आर्य समाज के प्रति अगाध श्रद्धा, प्रयास और पुरुषार्थ के कारण हमें ब्यावरा में सनातन धर्म संस्कृति का रक्षक और मानव जाति का पथ प्रदर्शक आर्यसमाज जैसा महान् संगठन प्राप्त हुआ और परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा से हमें इस संगठन से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा हमारे जीवन में वेदों का ज्ञान प्रकाश हुआ एवं आदर्शवादी गुरुजनों, सन्यासियों विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ। हम सभी आर्य सभासद और ब्यावरा की जनता सदैव इन महापुरुषों और आर्य समाज ब्यावरा के योगदान देने वाले ज्ञात-अज्ञात समस्त महानुभाव के प्रति कृतज्ञ एवं ऋणी रहेंगे। इन महापुरुषों में पंडित पूर्णानन्द जी भारद्वाज की किताब की दुकान थी जिस पर सबसे पहले महर्षि दयानन्द जी का अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त हुआ और उसी दुकान पर बैठकर इन आठों महापुरुषों ने सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन किया और अपना मन आर्य समाज की स्थापना का बनाया। उसी काल में भारतवर्ष में स्वामी श्रद्धानन्द जी का शुद्धि आन्दोलन चल रहा था इसमें सभी ने सहयोग किया। आर्यसमाज मन्दिर के लिए जो जमीन खरीदी थी उस पर भवन बनाने के लिए इन 8 महापुरुषों ने अत्यधिक संघर्ष किया उस समय देश परतन्त्र था। भवन बनाने की अनुमति नहीं मिली इस कारण दीवाल बनाकर चद्दर डालकर अखाड़ा एवं यज्ञ चालू किया और आर्य वीर दल का गठन किया गया। कार्य आगे बढ़ा इन महापुरुषों का संघर्ष काफी समय तक चला और अन्त में सफलता प्राप्त हुई।

सबका वर्णन करना सम्भव नहीं है मैं तो यहां सन्दर्भ रूप में मुख्य-मुख्य तथ्य प्रस्तुत कर रहा हूं इसके लिए एक बृहद पुस्तक रूप में स्मारिका छापने की आवश्यकता होगी लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में समय के अभाव तथा अन्य कारणों से यह सम्भव नहीं है। मैंने अल्प प्रयास किया है जो निम्नानुसार है

1923 से 1941 तक, आर्य समाज मन्दिर ब्यावरा का चुनाव विधिवत सन उन्नीस सौ तेइस से प्रारम्भ हुआ, इस कारण स्थापना वर्ष सन 1923 माना। सर्वप्रथम आर्य समाज मन्दिर ब्यावरा के प्रधान पद पर श्रीमान रामजीदास जी आर्य कसेरा का चयन हुआ और आपने सन 1923 से 1941 तक प्रधान पद पर कार्य कर उल्लेखनीय योगदान दिया। आपका कार्यकाल आर्य समाज ब्यावरा की स्थापना का प्रारम्भिक चुनौतियों से भरा समय था एवं उस समय भारत परतन्त्र था इसलिए सबसे ज्यादा संघर्ष आपने ही किया और आर्य समाज को उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ाया। हम सब आपके आभारी हैं।

1942 से 1953 तक, श्रीमान रामजीदास जी आर्य के बाद 1941 में श्रीमान सेठ साहब गोवर्धनलाल जी किल्ले वाले ब्यावरा आर्य समाज के प्रधान पद पर आसीन हुए और आपने अपना अमूल्य समय देकर आर्य समाज और ब्यावरा की जनता की सेवा की आपने कई मन्दिर बनवाये, अजनार नदी पर घाट बनवाएं और समाज सेवा में अपना योगदान दिया और सन् 1953 तक आप आर्य समाज के प्रधान रहे। हम सभी आर्य सभासद आपके और आपके परिवार के आभारी हैं।

सन 1953 से 1973 तक, 1953 में श्रीमान मदनलाल जी आर्य को आर्य समाज मन्दिर का प्रधान चुना गया और मेरा भी सौभाग्य रहा मैंने भी पूज्य ताऊ जी के साथ काम किया आपने आर्य समाज ब्यावरा के प्रधान पद पर सन 1973 तक काम किया। आपके समय में ब्यावरा आर्य समाज के मन्त्री पद पर श्रीमान हरिकृष्ण जी गुप्त कार्यरत रहै जो कि मेरे गुरु थे। मैं 6 वर्ष की उम्र से आर्य समाज मन्दिर में अध्ययन हेतु जाने लगा था और 20 वर्ष की उम्र तक आर्य समाज में अध्ययन किया और ब्यावरा से बी काम एवं नरसिंहगढ़ से एम कॉम की परीक्षा पास की। श्रीमान मदनलाल जी आर्य के साथ मैंने इन्दौर एवं भोपाल के अनेक सम्मेलनों में भाग लिया जिसमें इन्दौर का हिन्दी रक्षा सम्मेलन आज तक स्मृति में है आपके समय में आर्य समाज में लगभग 100 व्यक्तियों की उपस्थिति रहती थी। मन्त्री जी श्रीमान हरिकृष्ण जी गुप्त हमारे आदर्श गुरु थे। आपने नगर पालिका के दो बार चुनाव लड़े और विजय प्राप्त की लेकिन उसी समय देश में आपातकाल लगा और श्रीमान हरिकृष्ण जी गुप्त को मिसा के अन्तर्गत जेल में बन्द कर दिया गया जिससे आर्य समाज का कार्य भी बाधित हो गया।

1973 से 1982 तक, सन 1973 में श्रीमान सोमदेव जी आर्य का आर्य समाज के प्रधान पद पर चयन किया गया और आपने सन 1982 तक प्रधान पद पर कार्य किया आप के समय भी मुझे कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने 9 वर्ष तक आर्य समाज के प्रधान पद पर कार्य किया। आर्य समाज ब्यावरा के सभी सभासद आपके और आपके परिवार के आभारी हैं।

1982 से 1984 तक, 1982 में आर्य समाज ब्यावरा के प्रधान पद पर श्रीमान कैलाश जी पाराशर का चयन किया गया और आपने 2 वर्ष तक प्रधान पद पर कार्य किया। आपके समय में मन्त्री पद पर श्रीमान हरिनारायण जी गुप्ता ने अपनी सेवाएं प्रदान की। आपका और आपके परिवार का आभार धन्यवाद आर्य समाज ब्यावरा के सभासद करते हैं।

सन 1984 से 2000 तक, सन 1984 में आर्य समाज ब्यावरा के प्रधान पद पर श्रीमान शान्तिचन्द जी सर्राफ का चयन किया गया और सन 2000 तक आप प्रधान पद पर रहे। आप के समय में मन्त्री पद पर श्रीमान हरिनारायण जी गुप्ता रहे। इसी काल में दुर्भाग्यवश ब्यावरा आर्य समाज में दो गुट बन गए जो आर्य समाज के उन्नति में कष्टप्रद समय रहा। यह बात मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा तक पहुंच गई। उस समय प्रान्तीय सभा के मन्त्री पद पर श्रीमान जगदीश प्रसाद जी वैदिक, इन्दौर एवं प्रधान पद पर श्रीमान राजगुरु जी शर्मा, महू आसीन थे लेकिन ब्यावरा की समस्या हल नहीं हो सकी। 1979 में मेरा विवाह संस्कार हुआ और पारिवारिक समस्याओं के कारण मेरा आर्य समाज से सम्पर्क छूट गया लेकिन आर्य समाज की गतिविधियों पर मेरा पूरा ध्यान था। जीवन संघर्ष के मध्य पुनः मुझे आर्य समाज से जुड़ने का अवसर मिला। इन्दौर में मैं महारानी रोड पर जा रहा था ईश्वर कृपा से मेरी दृष्टि एक भवन के बाहर लगे नाम पट्टीका पर गई जिस पर लिखा था श्रीमान वीरसेन जी वेदश्रमी और मैं उनसे मिलने पहुंच गया, आपसे परिचय हुआ। मैंने आर्य समाज ब्यावरा की स्थिति बताई आपने ब्यावरा आर्य समाज के बारे में और भी जानकारी प्राप्त की , आप ब्यावरा में श्रीमान राममूर्ति भैया और श्रीमान जयन्ति भैया को जानते थे। मैंने यज्ञ का प्रस्ताव रखा और आपने स्वीकार किया और आप ब्यावरा पधारे और सन 1984 में सात दिवसीय यज्ञ किया लेकिन आर्य समाज की और आपने ध्यान नहीं दिया। मेरा सम्पर्क आपसे प्रगाढ़ हो गया। आप आर्य समाज की जानकारी मुझसे प्राप्त करते रहे। इसके बाद पुनः ऐसा समय आया कि मेरे मकान के उद्घाटन के लिए श्रीमान वीरसेनजी वेदश्रमी के पास गया और आप ब्यावरा यज्ञ हेतु पधारे सन 1986 में आपने पुनः सात दिवसीय यज्ञ करवाया उस समय श्रीमान वीरसेन जी ने 7 दिन में आर्य समाज ब्यावरा की समस्त जानकारी प्राप्त कर ली थी और जाते समय मुझे आदेश दिया कि आर्य समाज ब्यावरा को तुमको सम्हालना है इसके लिए मैं सहयोग दूंगा। आपने मुझे इन्दौर बुलाया, मेरे इन्दौर पहुंचने पर सभा प्रधान श्रीमान जगदीशप्रसाद जी वैदिक को उनकी दुकान पर बुलाया और ब्यावरा आर्य समाज के विषय में बात की एवं मेरा नाम प्रस्तुत किया । श्रीमान जगदीश प्रसाद जी वैदिक ब्यावरा पधारे समाज के सभी सदस्यों से मिले और आपने एक व्यवस्था बनाई जिसमें एक पक्ष से श्रीमान शान्तिचन्द जी सर्राफ और दूसरे पक्ष से मेरा (गोपाल प्रसाद अग्रवाल) का चयन किया और छह माह में आर्य समाज का चुनाव कराना निर्धारित किया गया। 1989 में आर्य समाज ब्यावरा का चुनाव हुआ और श्रीमान शान्तिचन्द्र जी प्रधान और मैं मंत्री बना और आर्य समाज का कार्य पुनः सुचारू रूप से संचालित हुआ। सन 1989 से आज तक 33 वर्ष तक आर्य समाज ब्यावरा से जीवन के श्वांस प्रश्वांस की तरह जुड़ा हूं।1989 से 2000 तक मैंने मन्त्री पद पर सेवा प्रदान की ।

सन 2000 में आर्य समाज मन्दिर ब्यावरा का चुनाव हुआ जिसमें मैं प्रधान और श्री चन्द्रशेखर जी आर्य मन्त्री बने। सन 2000 से आज तक में प्रधान पद पर सेवारत हूं आर्य समाज मन्दिर का भवन पुराना था और एक हाल 20×40=800 वर्ग फुट का था। फर्श कच्चा था मैंने सबसे पहले आर्य समाज का फर्श सीमेन्टेड करवाया उसके बाद एक हाल 20×40=800 वर्ग फुट का बनाया एवं पुनः नाले की तरफ एक हाल 20×40=800 फीट का निर्माण किया जिसमें सभी ने सहयोग प्रदान किया। आज आर्य समाज मन्दिर ब्यावरा वर्तमान स्वरूप में उपलब्ध है और आज पूरी व्यवस्था है जो आप सभी के सामने हैं। आर्य समाज मन्दिर ब्यावरा में सन 2000 से दैनिक यज्ञ वार्षिकोत्सव और समस्त कार्यक्रम विधि अनुसार संचालित हो रहे हैं आर्य समाज ब्यावरा में वार्षिक सम्मेलन,

एवं अन्य गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित हो रही है। मेरे मन में एक विचार ब्यावरा में अपना गुरुकुल का था वह भी पूरा हुआ और 14 फरवरी 1999 को मानव सेवा संस्थान के नाम से एक न्यास बनाया गया, जिसमें यज्ञशाला, गौशाला एवं आवासीय गुरुकुल प्रारम्भ किया, गुरुकुल 4 वर्ष तक संचालित हुआ , विद्यालय 10 वर्ष तक संचालित किया गया, गौशाला एवं यज्ञशाला सुचारू रूप से संचालित है। गुरुकुल किन्ही कारणों से बन्द हो गया वर्तमान स्थिति आप सभी के समक्ष हैं सभी का आभार एवं धन्यवाद।

इस प्रकार मैंने अपनी बुद्धि विवेक से यह इतिहास लिखा है, सभी का सन्तोष सम्भव नहीं है। इसमें कुछ नाम है जो छूट गए हैं, उनके बिना आर्य समाज का इतिहास अपूर्ण है इसलिए उनका स्मरण करना अनिवार्य है सर्वप्रथम श्रीमान जयन्ति भैया का नाम आता है आर्य समाज ब्यावरा के आप आधार स्तम्भ है आपके बिना आर्य समाज ब्यावरा का कोई काम नहीं होता था। आर्य समाज में पहलवानों में श्रीमान राममूर्ति भैया, विद्वानों में श्रीमान ओमदत्त जी भारद्वाज एवं हमारे आदर्श श्रीमान हरिकृष्ण जी गुप्ता (हरि भैया) ,श्रीमान राधाकृष्ण जी सोनी, श्रीमान किशनलाल जी वैद्य, श्रीमान चन्द्रभान जी कसेरा, निर्माण में निःशुल्क काम करने वाले श्रीमान प्रभुलाल जी सिलावट, श्रीमान हरिनारायण जी गुप्ता और अन्य सभी पुण्यात्मा जिनका वर्णन में नहीं कर पाया हूं या रह गए हैं और ज्ञात-अज्ञात जिन्होंने भी आर्य समाज ब्यावरा का सहयोग किया है उनका और उनके परिवार का आभार वन्दन-अभिनन्दन ।

आर्य समाज मन्दिर ब्यावरा में समय-समय पर आर्य जगत के विद्वान सन्यासी महात्माओं के एवं भजनोंपदेशकों का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ जिनमें श्रीमान आचार्य स्वदेश जी महाराज मथुरा, श्रीमान डॉ. सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई, श्रीमान काशीराम जी अनल, श्रीमान कमलनारायण जी रायपुर, श्रीमान वृद्धिचन्द जी शास्त्री कोटा, श्रीमान अमरसिंह जी ब्यावर राजस्थान,श्रीमान केशवदेव जी शास्त्री महेश्वर, स्वामी जगतदेव जी नैष्ठिक (स्वामी ऋतस्पति जी) होशंगाबाद एवं अन्य अनेक महानुभाव का आशीर्वाद प्राप्त हुआ,आर्य समाज ब्यावरा के शताब्दी वर्ष पर सभी का नमन वन्दन एवं आभार व्यक्त करता हूं।

आर्य समाज के नेता श्रीमान गौरीशंकर जी कौशल, श्रीमान दलवीरसिंह जी राघव पूर्व प्रधान मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का विशेष सहयोग रहा। वर्तमान में प्रधान श्रीमान इन्द्रप्रकाश जी गांधी शिवपुरी एवं हमारे आदर्श सार्वदेशिक सभा के यशस्वी महामन्त्री एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीमान प्रकाश जी आर्य महू (इन्दौर) आदि का सहयोग हमेशा बना रहता है,भविष्य में भी आप सभी का सहयोग साथ बना रहे और हम प्रगति पथ पर आगे बढ़ते रहें इसी के साथ आपका वन्दन-आभार।

वर्तमान में जो ब्यावरा आर्य समाज का स्वरूप है उसमें सहयोगियों साथियों का भरपूर सहयोग प्राप्त होता है, उन ज्ञात-अज्ञात सभी सहयोगियों साथियों का भी मैं वन्दन-अभिनन्दन और आभार व्यक्त करता हूं। प्रधान पद पर मैं स्वयं अपनी सेवाएं दे रहा हूं परमात्मा मेरे अच्छे बुरे समस्त कर्मों का साक्षी है। उपप्रधान पद पर श्रीमान गिरधर गोपालजी चणडक, मन्त्री पद पर श्रीमान वेदप्रकाश जी गुप्त, उपमन्त्री पद पर श्रीमान अभिषेक जी अग्रवाल, कोषाध्यक्ष पद पर श्रीमती जागृति अग्रवाल एवं अन्य सदस्यगणों श्री रामचन्द्र जी कारपेन्टर(अति विशिष्ट संरक्षक वैदिक संसार), श्रीमान चन्द्रशेखर जी आर्य, श्रीमान शिवनारायण जी साहू, श्री सुरेन्द्रसिंह जी राघव, श्रीमती प्रियंका अग्रवाल, श्रीमती नीतू गुप्ता, श्री रामरतन जी महावर ,श्रीमान ओम जी वर्मा, श्रीमान ओम जी रघुवंशी, श्री श्याम जी चौरसिया, श्रीमान अनिल जी नामदेव, श्रीमान शंकर जी सूर्यवंशी, श्रीमान गोपाल जी गुप्ता, श्रीमान डॉ भारत जी वर्मा, श्रीमान सन्तोष जी सरदार, सभी जो आर्य समाज के सहयोगी हैं उनका हृदय से वन्दन-अभिनन्दन करता हूं एवं आप सभी का सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूं आप सभी का सहयोग मिलता रहे इसी भावना के साथ लेखनी को विराम देता हूं।

महर्षि दयानन्द की जय... आर्य समाज अमर रहे...

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस पर देव यज्ञ एवं भजन संध्या सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर, धार, मध्यप्रदेश पर दिनांक 13नवंबर रविवार शाम 5 बजे देवयज्ञ पंडित कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया (भोपाल) के ब्रह्मत्व एवं 14 दंपतियों यजमानत्व में संपन्न किया गया पश्चात भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन संध्या श्रीमती किरण रावल जी एवं बैरसिया भोपाल से पधारी हुए कु.आकांक्षा आर्या एवं कु. विभूति आर्या के सुमधुर भजन एवं उपदेश के माध्यम से बहुत ही सफलता के साथ संपन्न हुई। कार्यक्रम अतिथि के रूप में बाल विकास विभाग की बहन देशपांडे जी ने अध्यक्षता की। इस

अवसर पर आर्य समाज प्रधान लाखन सिंह आर्य, वरिष्ठ सदस्य रामचंद्र जी सोलंकी,संगीता जी पांडर, आर्य समाज दिलावरा के प्रधान गिरधारीलाल जी चौधरी, रूपेश पंवार, पतंजलि से रामभरोसे वर्मा, विक्रम जी डूडी, प्रमोद जी पंकज, ललित जाट एवं सुनील पांडर आदि ने इसके पश्चात ऋषि उपस्थित रहे। उपस्थित महानुभाव के भोजन प्रसादी ग्रहण करने पश्चात आयोजन संपन्न हुआ। संचालन आर्य समाज जिला धार के मंत्री महेश आर्य ने किया। उक्त जानकारी प्रवक्ता मिलिंद पांडर द्वारा दी गई।

विचार करें कि महर्षि दयानन्द हमारे मध्य आ जायें तो वह क्या कहते!

• पं. उम्मेदसिंह विशारद
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

मान्यवर श्रद्धेय आर्यों! सादर नमस्ते।

यदि हम आज विचार करें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हमारे बीच आ जायें तो वह आर्य जगत् की गतिविधियाँ, कार्य प्रणाली एवं आर्य जगत् से बाहर सनातन धर्म मानने वालों की कार्य प्रणाली देखकर आश्चर्य करेंगे। वह सोचेंगे कि जिस ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म व सामाजिक राजनैतिक सुधार के लिए मैंने अपना जीवन बलिदान किया था। वह तो आज इस धरती पर बहुत ज्यादा पाखंड बढ़ गया है। इन पाखंडों को दूर करने के लिए मैंने आर्य समाज रूपी ज्योति जगाई थी, वह जल तो रही है किन्तु उतनी तेज रोशनी से नहीं। धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक पाखंड का अंधकार बहुत बढ़ गया है, आज आर्य समाज की ज्योति उस अंधकार को दूर करने में क्यों अक्षम हो रही है, वे सोचते?

महर्षि दयानन्द जी सोचते : मैंने सत्यार्थ प्रकाश में विशेष कर आर्यों को निर्देश दिया कि

लोकेषणायाश्य वित्तेषणायाश्य पुत्रेषायश्र्यत्थायाथ
(शत.का. सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात् लोक में प्रतिष्ठा व लाभ धन से भोग वा मान्य पुत्रादि के मोह से अलग होके गृहस्थी, वानप्रस्थी व संन्यासी लोग भिक्षुक होकर रात-दिन मोक्ष के साधनों में तत्पर रहे।

महर्षि कहते : हे आर्यों! तुम तीनों वर्ग अपने सिद्धान्तों से कहीं न कहीं समझौता कर रहे हो, यदि पूर्ण सिद्धान्तों, पुरुषार्थ व आदर्शों पर चलते तो आज कृणवन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य पूरा कर लेते।

गृहस्थस्तु यदा पश्येद्वलोपलित मातयन:।
अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्यं समाश्रयेत।।
(शत. क. १४ सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात् जब गृहस्थी सिर के स्वेत केश और त्वचा ढीली हो जाए और लड़के का लड़का भी हो गया हो तब वन में जाके बसे।

स्वध्यायेन जपैर्होमैस्वेविधेनेज्यया सुतै:।
महायज्ञेश्यं यजेश्च ब्राहनींय त्रियते तनु:।।
(मनु- सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात् गृहस्थी को पढ़ने-पढ़ाने, विचार करने-कराने, नाना विद्य होम सम्पूर्ण वेदों को पढ़ने-पढ़ाने धर्म से सन्तानोत्पत्ति व पंच महायज्ञ करने का आदेश।

महर्षि कहते हैं कि आर्यों! सर्वप्रथम अपने को परिवार को आर्य बनाओ, फिर जगत् को आर्य बनाओ।

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते येन वदन्ति धर्मम-।
नासौ धर्मो यत्र न सत्य मस्ति न तत सत्यं यच्छलेना म्युपेतन।।
(महाभारत- सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात् वह सभा नहीं जिसमें वृद्ध न हो, वह वृद्ध नहीं जो धर्म की बात नहीं बोलते, वह धर्म नहीं जिसमें सत्य न हो और न वह सत्य है जो छल से युक्त हो।

महर्षि कहते हैं आर्यों! तुम सबको सदैव सत्य को ग्रहण और असत्य को छोड़ने के लिए तत्पर रहना चाहिए। चाहे संसार बैरी हो जाए, मृत्यु भी सम्मुख हो किन्तु सत्य पक्ष को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

ओ३म् इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर: कृण्वन्तो विश्वामार्यम्।
अपघ्नन्तो अरावण:।। (ऋ.)

महर्षि कहते हे आर्यों! मैं तुम्हें आशीर्वाद देकर तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ, तुमने अब तक वेदों की रक्षा की है। वैदिक धर्म की मसाल जला के रखी है। यज्ञों को जीवित रखा है। आर्य समाज भवनों का बहुतायत में निर्माण किया है किन्तु अभी बहुत कुछ पुरुषार्थ करना बाकी है। सारे विश्व को आर्य बनाने का संकल्प पूरा करना है।

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनासि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजनाना उपासते।। (ऋ.)

महर्षि कहते हे आर्यों! इस मंत्र को तुम भूलते जा रहे हो, क्योंकि आर्य समाज की स्थापना के बाद पचास साल तक तो तुम आर्यों ने त्याग, पुरुषार्थ व बलिदान की मिसाल कायम की थी और एक संगठन में चलते थे। किन्तु अब महसूस हो रहा है तुम ईकाई आर्य समाज में व प्रतिनिधि व सार्वदेशिक सभाओं में आपस में लड़ रहे हो। तुम लोगों के झगड़े वक्त रहते एक हो जाओ सब झगड़े समाप्त करो। एक संगठन के झंडे के नीचे कार्य करो।

यत्र धर्मो हव्यधर्म्मेण सत्य नृतेन च।
हयन्ते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभा सद:।।
(मनु. सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात् जिस सभा में सभासदों को देखते-देखते अधर्म से धर्म और झूठ से सच मारा जाता हो। उस सभा के सभासद मरे हुए के समान हैं।

महर्षि कहते हे आर्यों! देखने में आ रहा है आप लोग अर्थात् संन्यासियों, उपदेशकों, पुरोहितों व पदाधिकारियों में कहीं न कहीं गुटबाजी व ईर्ष्या से सत्य का हनन हो रहा है। इसलिए मेरा आदेश है कि तुम सभी आर्य आपसी कलह छोड़कर सत्य मार्ग पर आ जाओ और अपनी-अपनी हठधर्मी छोड़ो। जिससे आर्य समाज की सर्वांगीण उन्नति होगी और सभी वर्ग अपना-अपनी अहंकार छोड़कर ईर्ष्या, द्वेष समाप्त करो। सारा संसार तुम्हारी और देख रहा है।

भारत वर्ष (आर्यवर्त) और आर्यों का सौभाग्य

ईश्वर की कृपा से भारत जैसे ऋषि-मुनियों के देश में सारे विश्व के देशों को छोड़कर भारत की पवित्र भूमि में ही ईशकृपा से देव महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ है। यह भारत वासियों का परम सौभाग्य है कि सृष्टि उत्पत्ति के देश में ही जन्म हुआ। हमारे कई जन्मों के पुण्य प्रताप से विश्व की सर्वोच्च धार्मिक, सामाजिक संगठन आर्य समाज से हमें जुड़ने व कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इन दो कारणों से हमारा परम सौभाग्य है।

आत्म निवेदन

मान्यवर आर्य श्रेष्ठों! महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी हैं तो हमें हर समय आभास करना चाहिए कि पूज्य देव दयानन्द हमारे मार्गदर्शक सदैव हमारे सम्मुख हैं और हमारे प्रत्येक कार्यों को देख रहे हैं। लाखों जन्मों के पुण्य प्रताप से वेद मार्ग पर चलने का यह जीवन हमें प्राप्त हुआ है। **महर्षि दयानन्द जी ने हमें सच्चे ईश्वर व उनकी वाणी वेदों का मार्ग बताया है। आज हमारे चारों ओर अंधविश्वास व नई-नई धार्मिक व सामाजिक कुरीतियाँ कँटीली झाड़ियों की तरह उग रही हैं। हमारे सम्मुख विशाल चुनौतियाँ खड़ी हैं। हमें समस्त भेद, ईर्ष्या, अहंकार भूलकर एक शक्तिशाली संगठन में एक स्वर से इन चुनौतियों के निवारण हेतु आन्दोलित होना पड़ेगा। तभी हम महर्षि दयानन्द की जय-आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे, ओ३म का झंडा ऊँचा रहे। सच्चे मायनों में कहने के अधिकारी होंगे।** ■

(पृष्ठ १० का शेष भाग)

खण्डित ब्रह्मचर्य, न गृहस्थाश्रम करे, न वानप्रस्थाश्रम करे, वह ब्रह्मचर्य को पूर्ण करते ही संन्यास आश्रम ग्रहण कर सकता है। वे पूर्ण विद्वान होने चाहिए और पूर्ण वैराग्य युक्त हों। स्वामी जी के अनुसार मर कर तो संसार छोड़ना पड़ता है। सन्यासी जीते जी मरने का मजा लूटता है। उसके तन पर पड़ा भगवा कपड़ा हर पल उसे आग की लपटों की याद दिलाता है, जिनमें पड़कर अन्त समय में पांच तत्वों में मिल जाना होता है।

१६. अन्त्येष्टि संस्कार:- (दाह कर्म) व्यक्ति का अन्तिम और सोलहवां संस्कार है। यह संस्कार व्यक्ति के मरने पर होता है अर्थात् उसकी देह को अग्नि में जला दिया जाता है तथा आत्मा अपने कर्मानुसार गति को प्राप्त होता है। जिसके आगे उस शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है। जब कोई मर जावे तब यदि पुरुष हो तो पुरुष और स्त्री हो तो स्त्रियां उसे स्नान करावें। नवीन वस्त्र धारण करावें। जितना उसके शरीर का भार हो उतना घृत, यदि अधिक सामर्थ्य हो तो अधिक लें और जो महादरिद्र, भिक्षुक हो, जिसके पास कुछ भी न हो उसे कोई श्रीमान आधमन से कम घी न दें। भार से दुगुनी सामग्री श्मशान में पहुंचायें।

जब शरीर ही नहीं रहा तो संस्कार कौन करेगा। इसलिए दयानन्द जी ने इसके लिए **''दाह संस्कार''** शब्द का प्रयोग किया है।

१२१ आहूतियों से यह संस्कार पूरा होता है। जब तीसरा दिन हो तब मृतक के श्मशान में जाकर चिता से अस्थि उठाके उस श्मशान भूमि में कहीं पृथक् रख देवें। इसके आगे मृतक के लिए कुछ भी कर्म-कर्त्तव्य नहीं है। मृतक के नाम पर कुछ भी खाना खिलाने व दान देने से उस आत्मा को मृत्यु के नाम पर कुछ नहीं मिलता है, क्योंकि वह आत्मा पता नहीं कहाँ-कहाँ कितने जन्म लेकर कहाँ पहुँच चुकी है। यदि परिवार सम्पन्न हो तो अपने जीते जी वा मरने के पीछे उसके सम्बन्धी वेदविद्या, अनाथपालन, धर्मोपदेश के लिए चाहे जितना धन प्रदान करें बहुत अच्छी बात है। ■

मैं बैठा-बैठा सोच रहा

मैं बैठा-बैठा सोच रहा,
सब लोग यहाँ के कहाँ गये।
न दादा है, ना दादी है,
न काका है, ना काकी है।

यहाँ बच्चों का होता खेला,
यहाँ लगता महिलाओं का मेला।

वे बच्चे लोग कहाँ गये,
वे पीपल, पाखर भी कहाँ गये।
सब ताल-तलैया सूखे हैं,
ये खेत बेचारे भूखे हैं।

न पिता रहे, ना माता भी,
सब लोग पुराने चले गये।

सब लोग यहाँ से कहाँ गये,
कुछ पता नहीं, सब कहाँ गये।
कुछ पता मिले तो पत्र लिखूँ,
कोई नम्बर हो तो फोन करूँ।

सावन-भादों भी झुलस रहे,
प्यासे बादल भी बिलख रहे।

वो दिन खुशी के कहाँ गये,
वो लोग पुराने कहाँ गये।
हर गाँव की सड़कें बदली हैं,
मंजिल भी सबकी बदल गई।

मिलने को मन तरस रहे,
आँखें दोनों भी बरस रहें।

वे घर संसार छोड़ गये,
वे सबसे नाता तोड़ गये।
सब घर के लोग नये लगते,
अब घर भी नये-नये लगते।

विकास का अर्थ भी बदल गया,
विकास का मार्ग भी बदल गया।

कोई भटक-भटक कर कहाँ गये,
कोई अटक-अटक कर कहाँ गये।
माना कि कोई तूफान उठा,
लेकिन हमें बचाना था।

सब लोग यहाँ अनजान लगे,
सब बाहर के मेहमान लगे।

घर वाले घर को छोड़ चले,
मैं सोचूँ वे सब कहाँ चले।
यह जगह अभी भी याद मुझे,
जिस पर खाट बिछी होती।

नैतिकता को मर्यादा को,
इंसान को हमें जगाना था।

इंसान के घर सुनसान हो गये,
हैवान यहाँ भगवान हो गये।
परिवर्तन होता रहता,
सोता है संसार नहीं।

वे गीत कबीर के गाते थे,
खंजरी, हो मस्त बजाते थे।

सुनने वाले सब नहीं रहे,
वे खंजरी बाबा भी नहीं रहे।
इस गाँव के बीच एक पाखर था,
इतिहास का पहला आखर था।

यह दुनिया भी कैसी दुनिया,
जिसमें होता है प्यार नहीं।

● डॉ. लक्ष्मी निधि
'निधि विहार', १७२, न्यू बारादारी, ह्यूम पाइप रोड
नया कोर्ट रोड, पो. साकची, जमशेदपुर-१ (झारखंड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

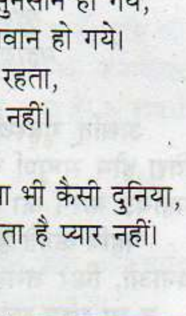

अन्धविश्वास के निवारण में धर्मगुरुओं की भूमिका

● **डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'**

चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४११५

अन्धविश्वास के निवारण में धर्मगुरुओं की भूमिका जानने के लिए हमें पहले यह जानना होगा कि धर्म क्या है? धर्म का मूल क्या है? और अन्धविश्वास क्या है? इसे कौन फैलाता है? क्यों हम इनके जाल में फँसते हैं? किसने इस अन्धविश्वास रूपी बीमारी से हमारी रक्षा करने में क्या भूमिका निभाई है। आइये, क्रमशः इन प्रश्नों पर चर्चा करते हैं।

मनुष्य जीवन का मूल है 'धर्म' और धर्म के विषय में महर्षि मनु महाराज ने कहा है **'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'** अर्थात् 'वेद' ही धर्म का मूल है। आज जिसे तुम लोग धर्म समझ रहे हो वह धर्म नहीं धर्म के नाम पर आपके साथ हो रहा छलावा है। धर्म तो उसे कहते हैं जो मानव को दानव नहीं देव बनाए और केवल भारत के ही नहीं अपितु समस्त संसार के मानवों को मनुष्य बनाए। क्योंकि सम्पूर्ण संसार के मनुष्यों का धर्म एक ही होता है। अलग-अलग नहीं, धर्म केवल वेद ज्ञान पर आधारित होता है जिसे वैदिक धर्म कहते हैं क्योंकि वेद किसी राष्ट्र-काल की सीमा से परे समस्त मानवों के लिए है, धर्म के माध्यम से प्राप्त होने वाली धार्मिकता वह है जो मनुष्य को ऐसे आचरण से युक्त कर दें जिससे उसका सान्निध्य प्रत्येक जीव प्राप्त करना चाहे। शास्त्रोक्त भाषा में धारण करने को धर्म कहा गया है अर्थात् **जिसे आचरण-व्यवहार में लाया जाए वही धर्म है।**

इसी प्रकार श्रद्धा शब्द की परिभाषा है। श्रत-धा अर्थात् **सत्य को धारण करना श्रद्धा कहलाता है** और सत्य के विपरीत असत्य आचरण श्रद्धा नहीं अन्धश्रद्धा है और हमारी अन्धश्रद्धा जन्म देती है अन्धविश्वास को और अन्धविश्वास क्या है? आधारहीन कल्पनाएँ जिनका कोई वैज्ञानिक आधार न हो तथा जिन बातों पर विश्वास करके व्यक्ति कर्म, पुरुषार्थ और परिश्रम से रहित होकर दुख भोगते हैं, वही अन्धविश्वास है। भूत, प्रेत व जादू टोने आदि का कोई तर्क, प्रमाण व वैज्ञानिक आधार नहीं होता। अन्धविश्वास के कारण पढ़े-लिखे लोग भी इनके ठग जाल में फँस जाते हैं। अन्धविश्वास और अन्धभक्ति के कारण समाज प्रगति के पथ पर नहीं अवनति के पथ पर ही अग्रसर होता है। विश्व की सिरमौर वैदिक संस्कृति का अनुकरण करने वाली भारत की पुण्य भूमि ऋषियों की पावन स्थली है यहाँ संन्यासियों और धर्मगुरुओं का स्थान बहुत ऊँचा और सम्मानप्रद है। गुरु-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत अपने शिष्यों को आत्मचिंतन, अध्यात्म, परोपकार, सदाचार, ईश्वरीय ज्ञान, धर्मरक्षा, शुद्धाचरण, मानवसेवा, प्रभुभक्ति सदृश ज्ञान प्रदान करने तथा शिष्यों द्वारा निष्ठापूर्वक आचरण करने के कारण ही भारत विश्व में जगद्गुरु के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान रहा है। न कि आज के तथाकथित धर्मगुरुओं द्वारा फैलाए गए अन्धविश्वासों के कारण। स्वयं को धर्मगुरु कहने वाले ढोंगी बाबाओं की वर्तमान स्थिति से आप चिर-परिचित हैं। इनके विषय में व्याख्यान करने की ज्यादा आवश्यकता नहीं है। ये तथाकथित गुरु या बाबा धर्मगुरु नहीं बल्कि गुरुओं के नाम पर कलंक हैं। ये केवल अपनी प्रसिद्धि फैलाने, महल-कोठियाँ बनाने, अपने परिवार का भरण-पोषण करने और अपनी कुंठित वासनाओं की पूर्ति के लिए ही संन्यास धारण कर धर्म की रक्षा नहीं, धर्म का चीरहरण कर रहे हैं और जनसाधारण इसलिए इनके जाल में फँसते चले जाते हैं क्योंकि अब उनके पास सही मार्गदर्शन करने वालों को परखने की कसौटी का ज्ञान नहीं है। भारतीय संस्कृति में प्राण फूँकने वाली गुरुकुल शिक्षा पद्धति को समाप्त करने के लिए अंग्रेजों द्वारा कुठाराघात किया गया जिसके कारण हमें सत्य, असत्य का बोध करने वाला सोने का सिक्का **'वेदज्ञान'** हमसे छिन गया और स्वर्ग तथा मोक्ष दिलाने के नाम पर अन्ध परम्परा चल पड़ी। अपने परिवार की सुख-शान्ति व कल्याण के लिए अन्य प्राणियों की हिंसा करना, बिना परखे देखा-देखी गुरुओं के चरणों में गिरना, उन्हें अपना तन-मन-धन सब कुछ सौंप देना, उनके कहने पर बिना वजह हिंसा करना क्या ये अन्ध भक्ति नहीं है? लेकिन ये शिष्य 'गुरु बिन मुक्ति नहीं' और 'गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म' आदि भ्रममूलक विचारधारा से प्रभावित होकर इनके द्वारा फैलाए गए अन्धविश्वासों के चक्कर में आ जाते हैं। ये जरा भी विचार नहीं करते कि ये अल्पज्ञानी परमात्मा का नाम लेकर इन्हें शुद्धाचरण सिखाने की बजाए अपना पिछलग्गू बना डालते हैं और उन्हें पता भी नहीं लगने देते कि इनकी सुरक्षा की आड़ लेकर स्वयं कितने बड़े-बड़े अपराधिक कुकर्म करते हैं। भारत की गौरवमयी संस्कृति जिसे सम्पूर्ण विश्व नमन करता आया है को ये धूलधुसरित करते जा रहे हैं।

मनु महाराज ने अति संक्षेप में लिखा है कि **''अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते पुज्यांच व्यतिक्रमः। त्रीणि तत्र भविष्यन्ति रोगं दुर्भिक्षं भयम्।''**

वेद पारायण यज्ञ एवं सत्संग समारोह

दिनांक : १० से १८ दिसम्बर २०२२ तक

स्थान : पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)

३७वाँ ऋग्वेद पारायण यज्ञ १० से १३ दिसम्बर तक
३८वाँ यजुर्वेद पारायण यज्ञ १४ व १५ दिसम्बर
३९वाँ अथर्ववेद पारायण यज्ञ १६ से १८ दिसम्बर तक

आमन्त्रित विद्वान्
डॉ. धनंजय जी आचार्य गुरुकुल, पौंधा (देहरादून)
आचार्य देशबन्धुजी शास्त्री, गुड़गाँव (हरियाणा)
आचार्य ब्रह्मदेवजी वेदालंकार, दिल्ली
डॉ. मोक्षराजजी, वेद प्रचार अधिष्ठाता, राज.आ.प्र. सभा
आचार्य जीववर्द्धन जी शास्त्री, मन्त्रीः राज. आर्य प्र.सभा
आचार्य नर्मदा शास्त्री
स्वामी आदित्यवेशजी, रोहतक (हरियाणा)
समस्त धर्मनिष्ठ जन सादर आमन्त्रित हैं।

-: निवेदक :-
डॉ. सोमदेव शास्त्री (९८६९६६८१३०)
प्रणव एवं अनिरुद्ध शास्त्री

अर्थात् जिस समाज में, जिस राष्ट्र में अपूज्यों, तथाकथित गुरु घंटालों की पूजा होती हो तथा पूज्य व्यक्तियों, आध्यात्मिक, ब्रह्मचारी, सद्गुणी आचार्यों का निरादर होता हो वहाँ रोग, अकाल तथा भय आदि पनपते हैं और ऐसा ही आज भारत में हो रहा है। कोई भी निश्चिंत नहीं है। सब भय के साए में विचरण कर रहे हैं। हमें भयमुक्त देश बनाना होगा और ये तभी संभव हो सकेगा जब हम महर्षि दयानन्द जैसे धर्मगुरु के द्वारा प्रचारित और प्रसारित वैदिक ज्ञानधारा के झरने रूपी झंडे के नीचे एकत्रित हो उन्नति के पथ पर आरूढ़ हो जाएँगे महर्षिजी ने आश्रम व्यवस्था का वर्णन करते हुए बताया है कि वैदिक दर्शन के अनुसार भारत की गरिमापूर्ण संस्कृति चार आश्रमों में विभाजित है- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। इनमें से संन्यास आश्रम जीवन की ऐसी अवस्था है जिसमें पहुँचते-पहुँचते मनुष्य ज्ञान और विज्ञान से स्वयं आलोकित होकर समाज को दिशा-निर्देश करता है और जन-कल्याण रूपी हवनकुंड में अपने जीवन को स्वाहा कर अपनी आहुति प्रदान करता है ऐसा ही किया था **'महर्षि दयानन्द'** ने उन्होंने लोकोद्धार के लिए, देश के कल्याण के लिए, अन्धविश्वास के निवारण के लिए, मनुष्य जाति को सन्मार्ग पर लाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया और अपने वक्तव्य में वे यही उपदेश देते थे कि **ऐ दुनिया के लोगों! वेदों की ओर लौटो।** आज वर्तमान समय में महर्षि जैसे धर्मगुरुओं की ही आवश्यकता है जो समाज की रोज नए-नए फैल रहे अन्धविश्वासों और पाखंडियों के मकड़जाल से रक्षा कर सकें।

समाज में फैली दूषित विचारधारा और अन्धविश्वास के निवारण करने के लिए ऋषिवर ने एक पौधा लगाया जिसका नाम है **'आर्य समाज'** जो निरन्तर इसी कार्य में संलग्न है। महर्षि ने गुरु-शिष्य परम्परा को जीवित रखा है जिसके कारण आर्यसमाज से व आर्ष गुरुकुलों से निकलने वाले वेदों के प्रकांड विद्वान समाज में फैले अन्धविश्वास, कर्मफल, ज्योतिष आदि समस्याओं का निवारण करने में सक्षम हैं। अत: हमारी शंकाओं के समाधान वैदिक धर्मगुरुओं के ही पास है बाकी सब तो हमें गिद्ध की तरह नोचने के लिए अपने आश्रम, डेरे रूपी दुकानें खोलकर बैठे हैं। जो स्वयं तो मौज-मस्ती की जिन्दगी जी रहे हैं और भोली-भाली जनता को मूर्ख बनाकर ठग रहे हैं। सच्चा धर्मगुरु परमात्मा द्वारा प्रेरित होता है जबकि पाखंडी तो अन्धविश्वास को बढ़ावा देकर झगड़े, विवाद, समस्याएँ, घृणा, द्वेष फैलाते हैं। वैदिक विद्वान समाज को जगाता है और जनता को ऐसे ढोंगी, पाखंडी गुरुओं के सत्य स्वरूप की पहचान कराता है जो स्वयं को धर्म के ठेकेदार समझते हैं और धर्मगुरु की संज्ञा प्राप्त कर भगवान और भक्ति का व्यापार करते हैं। तो आइये! **चलें आर्य समाज की ओर**, महर्षि दयानन्द के पदचिह्नों पर चलने वाले धर्मगुरुओं से शिक्षा पाने के लिए जो देश से अन्धविश्वास को मिटाने के लिए सदैव प्रत्यनशील हैं। आमतौर पर रोग होने पर रोगी चिकित्सक के पास जाता है किन्तु महामारी फैलने पर चिकित्सक ही रोगी के पास जाता है। आज राष्ट्र में अन्धविश्वास, रूढ़िवाद और गुरुडमवाद की महामारी फैल चुकी है इसलिए आज वैदिक धर्मगुरुओं रूपी चिकित्सकों की आवश्यकता बहुत अधिक है। अत: आर्यसमाज रूपी चिकित्सा की आवश्यकता केवल आर्यसमाज के भवनों तक ही सीमित न रहें अपितु सम्पूर्ण भारत में वैदिक धर्मगुरु फैल जाएँ और कृण्वन्तों विश्वमार्यम् को सार्थक करें तभी अन्धविश्वास निवारण संभव हो सकेगा। चलते-चलते दो पंक्तियाँ-

''गौरवमयी संस्कृति हमारी, पहचानो गौरवमयी इतिहास को
कुसंस्कारों को मिटा डालो, जला दो अन्धविश्वास को'' ■

श्रद्धा रखी महर्षि में तो बन गये स्वामी श्रद्धानन्द

● **खुशहालचन्द्र आर्य**
द्वारा-गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

श्रद्धा रखी महर्षि दयानन्द में, तो बिगड़ेल मुन्शीराम बन गए आदर्श संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द।
जब चले वैदिक-पथ पर, त्याग, तपस्या के बल पर, जीवन बन गया कुन्दन, भर गया आनन्द ही आनन्द।।
सन् १९०२ में सबसे पहले खोला हरिद्वार के पास गुरुकल कांगड़ी, आरम्भ की वैदिक शिक्षा जो थी हजारों वर्षों से बन्द।
जो विद्यार्थी गुरुकुल से निकले, उनमें शारीरिक, आत्मिक, मानसिक एवं चारित्रिक औरों से अधिक थी सुगन्ध।।

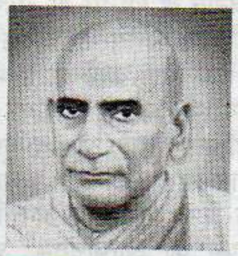

दूसरा काम किया दिल्ली चान्दनी चौक में रौलेट एक्ट के विरोध में निकाला जुलूस, जो बढ़ रहा था मन्द-मन्द।
पुलिस ने रोका जुलूस को, स्वामीजी छाती खोल, सीना तान आ गए आगे, तब गोली चलाना हो गया बन्द।।
दे दिया पुलिस ने रास्ता जुलूस को, समाचार सुनकर सम्पूर्ण भारत में, मनाया गया उत्सव, त्यौहार और आनन्द।
तब से स्वामी श्रद्धानन्द बन गए देश के एक शीर्ष नेता, चमकने लगे जैसे अनगिनत तारों में चमकता है चन्द।।
तीसरा काम किया जामा मस्जिद की मीम्बर पर भाषण देने का, जिसका उत्साही मुस्लिम युवकों ने किया था पूरा प्रबन्ध।
अपना भाषण वेद-मन्त्रों से प्रारम्भ किया, जिसको सुन सम्पूर्ण मुस्लिम जगत् ने किया बहुत अधिक पसन्द।।
चौथा काम किया सन् १९१९ में लाहौर में वार्षिक कांग्रेस अधिवेशन का, तब 'जलियाँवाला कांड' से था आना-जाना बन्द।
जिसके स्वागताध्यक्ष बने स्वयं स्वामीजी, सफल हुआ अधिवेशन, चकित रह गए सभी कांग्रेसी, देखकर वहाँ का प्रबन्ध।।
कांग्रेस की तुष्टिकरण नीति से अप्रसन्न होकर स्वामीजी, करने लगे शुद्धि का काम, जो मतान्ध व्यक्तियों को नहीं आया पसन्द।
एक मतान्ध युवक ने सन् १९२६ दिसम्बर २३ को चला दी तीन गोली जिससे स्वामीजी चले गए मोक्ष धाम पाने परम आनन्द।।
पाने परम् आनन्द, पाने परम आनन्द...

वर्तमान निर्वाचन प्रणाली में आम जन कहाँ चुनता है? सर्वप्रथम तो व्यक्ति अपना स्वयं का चयन करता है, अन्य जन तो मात्र उसके निर्णय पर अपनी अभिव्यक्ति करते हैं। –सम्पादक

यदि रामराज्य लाना है तो चुनाव प्रणाली भी आर्यों की लानी पड़ेगी

• **रघुराज शास्त्री 'मुनि'**

राष्ट्रीय अध्यक्ष : विद्यार्य सभा, कानपुर–६

चलभाष : ९३३६०८०७५३

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा। रामराज्य नहिं कांहुहि व्यापा।।

–पृष्ठ ६००

राम के राज्य में किसी को भी दैहिक (देह सम्बन्धी), दैविक (दैवी अकाल, सूखा, महामारी, भूकम्प आदि), भौतिक (सामाजिक) एक–दूसरे के प्रति ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि) नहीं थे। अर्थात् ओम शान्ति, शान्ति शान्तिः का उच्चारण इसी भाव से किया जाता है कि हमारे तीनों ताप–दुःख न रहें। जब सभी लोग वेद के अनुसार चलेंगे तो ये तीनों ताप स्वयं नहीं रहेंगे क्योंकि वैदिक काल शासक– राजा स्वयं वेदानुयायी एवं आदर्श होता था। परिवार से अधिक अपने राजत्व या नृपत्व की चिन्ता रहती थी। अपनी मर्यादा को राजा नहीं छोड़ते थे।

यही बात आचार्य चाणक्य कह गए हैं–

राजिधर्माविं धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः।
राजानमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः।।

अर्थात् राजा के धर्मात्मा होने पर प्रजा धर्मिष्ठ होती है। यदि राजा पापी है तो प्रजा भी पापी होती है। यदि समान है तो समान ही रहेगी। प्रजा राजा का अनुसरण करती है। जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा भी होती है। इसलिए राजा (शासक) को धर्मिष्ठ होना अत्यावश्यक है। यही आर्यों की परिपाटी रही है। इसीलिए महर्षि दयानन्द तपस्या के पश्चात् राजाओं को सुधारने का प्रयत्न करते रहे।

महर्षि दयानन्द वेदों के प्रकांड विद्वान्, मर्मज्ञ एवं भाष्यकार थे। वे यह अच्छी प्रकार से जानते थे– **राजा कालस्य कारणम्।** राजा काल (समय) का कारण होता है। परमात्मा की, सृष्टि में मानव ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस सर्वश्रेष्ठ मानव समाज में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को राजा बनाना चाहिए। महर्षि ने राजा की परिभाषा सत्यार्थ प्रकाश में दी है– **''राजा जो सभापति तदधीन सभा , सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे।''** सत्यार्थ प्रकाश षष्ठ समुल्लास पृष्ठ १२१ यही सूत्र लोकतन्त्र का है। लोकतन्त्र जनतन्त्र, प्रजातन्त्र या राजतन्त्र समानार्थक शब्द हैं। राजतन्त्र का अर्थ राजा के पुत्र का तन्त्र नहीं होता है। जैसा कि कुछ भ्रान्त लोग समझते हैं। राजा को सभापति अर्थात् सभापति ही राजा है। **स राजा पुरुषो दण्डः।** राजा वही पुरुष है जो दण्ड है अर्थात् पापी को दण्ड देने की क्षमता रखने वाले पुरुष को ही राजा कहते हैं। जो सभा द्वारा पारित नियमों का उल्लंघन करे, उसे दण्डित करने की क्षमता युक्त व्यक्ति ही राजा होता है। राजसभा का जो सभापति होता है उसी को राजा कहते हैं। सभा की मन्त्रिपरिषद ही राजा के मन्त्रीगण होते हैं जो सभापति को मन्त्रणा देते हैं जिससे राज्य का कार्य किया जाता है।

लोकतन्त्र ही राजतन्त्र है। लोगों द्वारा जनता– प्रजा द्वारा चुना हुआ व्यक्ति ही राजा होता है।

आर्यों की चुनाव प्रणाली **गुप्त मतदान प्रणाली** रही है। जो कि संविधान में वर्णित है। जैसे दलतन्त्र को लोग प्रजातन्त्र या लोकतन्त्र मान बैठे हैं। वैसे ही गुप्त मतदान प्रणाली को भी गलत मान रहे हैं। नामांकित प्रत्याशियों को चुनाव के दिन कोई न जान पाए यह मान रखा है। जबकि नामांकन कराने से ही गुप्तता समाप्त हो जाती है और अन्य सब मतदाताओं का मूलाधिकार छिन जाता है। नामांकित व्यक्तियों को ही चुनने के लिए जनता को बाध्य किया जाता है। यह अन्याय है।

हर मतदाता प्रत्याशी है तो गलत जमानत राशि है।।
बिना नामांकन बिना निशान। लोकतन्त्र की है पहचान।।

–आर्यसभा

देश का हर व्यक्ति जो १८ वर्ष से ऊपर है, वह मतदाता है और वह प्रत्याशी भी है क्योंकि वह बालिग हो चुका है। समझदार है। गलत–सही का विवेक रखने लगा है यदि लोग उसे अपना प्रतिनिधि चुनते हैं तो वह उचित होने पर प्रतिनिधि बन सकता है। समाज का नेतृत्व कर सकता है।

मतदाता सूची का नामांकित व्यक्ति प्रत्याशी ही होता है। उसे अलग से नामांकन कराने की आवश्यकता नहीं रहती, जैसा कि इस समय परम्परा डाल रखी है। ऐसा करने से अन्य सभी मतदाताओं के साथ अन्याय है क्योंकि मतदाता होने से सभी बराबर हैं। सबका अधिकार प्रत्याशी बनना है न कि केवल नामांकित व्यक्ति ही। शायद कुछ धनपतियों ने यह युक्ति निकाली होगी कि कुछ अतिरिक्त धन देकर हम ही प्रत्याशी बन जाएँ, शेष न बन पाएँ। इसीलिए सरकार जमानत राशि बढ़ाती जा रही है। किसी समय विधायक राशि २५ रु. थी और सांसद की जमानत राशि ५०० रुपये थी। इस समय क्रमशः १० हजार और २५ हजार कर दी गई है। यह केवल धनपतियों को बढ़ावा देना एवं भ्रष्टाचार बढ़ाने की योजना है। मैं कहता हूँ इतना ही धन क्यों? १ करोड़ या १ अरब रख दी जाए तब तो शायद है कि कुछ ही टाटा, बिरला, अडानी, अम्बानी ही आ पाएँगे। यह सब जनता को धोखा देकर पाटीतन्त्र को बढ़ावा देना है। लोकतन्त्र नहीं दल तन्त्र है। लोकतन्त्र में नामांकन, जमानत राशि, चुनाव चिह्न की कोई आवश्यकता नहीं होती। न ही चुनाव प्रचार की। जनता जिसे चाहती है। रेलवे टिकट जैसे मतपत्र में अपने प्रत्याशी का नाम लिखती है स्वयं अपना नाम नहीं लिखा जाता। ■

संक्षिप्त परिचय

श्री वगतरामजी आर्य पूर्व मंडलपति आर्यवीर दल एवं पूर्व प्रधान आर्य समाज नारायणगढ़

१. ७५ वर्षीय वगतरामजी आर्य ने नारायणगढ़ से दसवीं पासकर कुछ समय आदिवासी बहुल झाबुआ जिले में प्रायवेट शिक्षण का कार्य किया।

२. आज से पचास साल पूर्व जब रंगीन कैमरे का चलन नहीं था। आपने शानदार रंगीन चित्र व परदे बनाए भारत माता, महर्षि दयानन्द सरस्वती, भगतसिंह, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, राणा प्रताप, शिवाजी, लक्ष्मीबाई आदि व रंगमंच के मनमोहक पर्दे।

३. घर पर खेती, बागवानी में सैकड़ों पेड़, फलों के संतरा, नींबू, अमरूद, आवला व अनार के लगाए और लाखों रुपए कमाकर शानदार निवास भवन बनाया।

४. पशु-पालन (गाय) में भी आप सदा अग्रणी रहे। गोबर, मूत्र, जैविक खाद उपयोग व बिक्री।

५. आर्यवीर दल के मंडलपति लगभग ४० साल तक रहकर मंदसौर, नीमच जिले के आर्य समाजों में नए आर्यवीर दलों का गठन कर प्रशिक्षण दिया।

६. नारायणगढ़ आर्यवीर दल ने आपके नेतृत्व में सदैव सब जगह प्रथम इनाम जीता। इंदौर, महू, भोपाल, खरगोन, अजमेर, दिल्ली, बंम्बई तथा राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश के कई शिविर सम्मेलन में धाक जमाई।

७. जन्माष्टमी, दशहरा उत्सव पर्व व विवाह सम्मेलनों में आर्य वीर दल की लेझिम, बिगुल, ढोल, नगाड़े खूब बजे। अखाड़े के करतब भी जगह-जगह कराए। यह सब परिश्रम व सेवा का श्रेय वगतरामजी आर्य कर्मठ, मंडलपति को जाता है। आप भी अपनी संस्थाओं के आयोजनों, शोभायात्राओं, निजी आयोजनों में आर्यवीर दल की सेवाओं का लाभ ले सकते हैं। ● **आर्य मोहनलाल दशौरा**

सच्चे नेताओं की गाथा

नेताओं की गाथा सुन लो, भारत के नर-नारी।
ईश्वर भगत् तपस्वी थे वे देशभक्त बलधारी।।

योगिराज कृष्ण यदुनन्दन, थे निर्लोभी त्यागी।
विद्या बल में नामी थे वे, थे अद्भुत वैरागी।।
किये परास्त सैकड़ों राजा, सबको रण में कूटा।
अचरज का है विषय, किसी का राज्य कभी न लूटा।।
करती है गुणगान कृष्ण का, अब तक दुनिया सारी।
ईश्वर भगत्, तपस्वी थे वे, देशभक्त बलधारी।।१।।

आचार्य चाणक्य मुनि का, यश गाता जग सारा।
एक झोपड़ी में रहता था, वह युग पुरुष हमारा।।
मैगस्थनीज चीन से आया, देखा अजब नजारा।
टाट के ऊपर सोता था, प्रधानमन्त्री प्यारा।।
साफ लिखा है उसने था, चाणक्य वीर उपकारी।
ईश्वर भगत्, तपस्वी थे वे, देशभक्त बलधारी।।२।।

याद करो प्रताप-शिवा को, देश भक्त थे सच्चे।
गुरु गोविन्द, वीर बन्दा थे, भारत माँ के बच्चे।।
यवनों से संग्राम किया था, भारी कष्ट उठाए।
भूखे-प्यासे फिरे वनों में, कभी नहीं घबराए।।
हिम्मत के थे धनी बहादुर, कभी न हिम्मत हारी।
ईश्वर भगत्, तपस्वी थे वे, देशभक्त बलधारी।।३।।

स्वामी दयानन्द योगी ने, वैदिक नाद बजाया।
विष के प्याले पी-पी करके, सोया देश जगाया।।
श्रद्धानन्द निराला नेता, दुनिया के मन भाया।
भारत माँ की सेवा में, जिसने सर्वस्व लुटाया।।
नन्दलाल बन वीर लाजपत, जैसा ईश-पुजारी।
ईश्वर भगत्, तपस्वी थे वे, देशभक्त बलधारी।।४।।

● **पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य**

चलो टंकारा : टंकारा चलो

ऋषि बोधोत्सव

दिनांक : १७-१८ फरवरी २०२३ को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा, जिला मोरवी (गुजरात) पर प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी भव्य आयोजन ऋषि बोध दिवस शिवरात्रि अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इष्ट मित्रों सहित सपरिवार पधारें और धर्मलाभ प्राप्त करें।

सफल आध्यात्मिक जीवन विकास शिविर

दिनांक- २५ से २८ दिसम्बर २०२२ तक

स्थान- दयाल वाटिका सैलाना रोड़, बंजली, रतलाम (म. प्र.)

शिविराध्यक्ष-आचार्य अजय जी, सोनीपत (हरियाणा)

आप सभी को सूचित करते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि विगत शिविर की तरह इस बार भी चार दिवसीय आवासीय सफल आध्यात्मिक जीवन विकास शिविर का आयोजन रतलाम (मध्यप्रदेश) में किया जा रहा है, जिसके मुख्य विषय निम्न रहेंगे :- आप सफलता किसे मानते हो? सफलता और अध्यात्म के बीच क्या सम्बन्ध है? सफल आध्यामिक जीवन का लक्षण क्या है? जीवन की समस्याओं का समाधान अध्यात्म में कैसे? अध्यात्म व वेद का क्या सम्बन्ध है? जीवन को सफल बनाने वाले वैदिक सिद्धान्त कौन से है? जीवन को हानि पहुंचाने वाली व आध्यात्मिक भ्रान्तियाँ, उलझनें कौन-कौन सी है? क्या आप अपने विचार-चिन्तन करने की प्रक्रिया को ठीक करना चाहते हो? क्या आप धर्म के वास्तविक स्वरुप को जानना, अष्टांग योग को समझना, अपनी मन व इन्द्रियों पर नियन्त्रण करना, बुद्धि को कुशाग्र बनाना चाहते हो? इत्यादि विषयों पर आपके जीवन व व्यक्तित्व निर्माण की विधि-क्रिया बताई व सिखाई जावेगी। अतः आप सपरिवार इस शिविर में भाग ले व अन्यों को भी प्रेरित करे।

शिविर शुल्क- २०००/- जिसमें आपके चार दिवसीय आवास/भोजन/स्वल्पाहार/दूध की उत्तम व्यवस्था की जावेगी।

शिविर में भाग लेने हेतु शीघ्र अपना पंजीयन करवा कर अपना स्थान सुरक्षित करे।

संपर्क सूत्र

शेखर आर्य- ९५८४२२६५५०

विकास शर्मा- ९१७९७८४८०८

सदाशिव सगीतरा- ९६१७५७७८८८

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती के सान्निध्य में त्रिदिवसीय ध्यान, स्वाध्याय शिविर

आयोजक : आर्य समाज राजकोट मध्य

दिनांक : ६-७-८ जनवरी २०२३

शिविर शुल्क : २०००/-

राशि जमा करने के लिए बैंक खाता नंबर

आर्य समाज राजकोट मध्य

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, खाता संख्या ३५६०२८७०८४

आईएफएससी कोड : सीबीआईएन ०२८०५६९

सूचना - राशि जमा करने के बाद नीचे लिखित सम्पर्क सूत्र पर कृपया सूचित करें।

<u>शिविर स्थल</u>

कम्युनिटी हॉल, साईंधाम सोसायटी, डाभोर रोड, वेरावल (सोमनाथ, गुजरात) पिन : ३६२२६५

<u>शिविर कार्यक्रम</u>

६-७ जनवरी : ध्यान प्रवचन व संगीतमय भजन

८ जनवरी : सोमनाथ वेरावल के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण।

भ्रमण हेतु अलग से बस किराया देय होगा।

शिविर हेतु नामांकन के लिए ९२२७६००२७० नंबर पर अपना नाम आयु व्यवसाय पता मोबाइल नंबर लिखकर वाटसएप करें।

नामांकन हेतु अंतिम दिनांक : १५.१२.२०२२

सम्पर्क सूत्र

श्री अमृतलाल परमार, राजकोट

मोबाइल - ९२२७६००२७०, ७६९८६८९५९०

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती- ९९९८५९४८१०

चलो कोलकाता, वीर बलिदानियों, महान देशभक्त महापुरुषों, वैज्ञानिकों की पावन भूमि बंगाल की राजधानी कोलकाता चलो

महर्षि दयानन्द सरस्वती के कलकत्ता (बंगाल) आगमन के १५० वर्ष पूर्णता पर

आर्य महासम्मेलन

■ दिनांक : ३०–३१ दिसम्बर २०२२ व १ जनवरी २०२३ ■ स्थान : ऋषिकेश पार्क, आमहर्स्ट स्ट्रीट थाना के पास, कोलकाता

संयोजक : **आर्य समाज कलकत्ता : सम्पर्क- ७९८०४९६२७६, ९८३१८४७७८८, ९१६३८३४७७५**

मान्यवर! सादर नमस्ते। आप सबको सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि क्रान्ति के अग्रदूत, समाज सुधारक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के कलकत्ता आगमन (दिनांक १६ दिसम्बर १८७२) के १५० वर्ष की पूर्णता पर आर्य समाज कलकत्ता एव बंगाल की समस्त समाजों के सहयोग से एक भव्य आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें योग ऋषि स्वामी रामदेव जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद), डॉ. वेदपालजी आर्य, आचार्य सोमदेव जी आर्य, डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री, आचार्य डॉ. शिवदत्त जी पाण्डेय, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी तथा गणमान्य महानुभावों में महामहिम आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल गुजरात), महामहिम बाबू गंगाप्रसाद जी (राज्यपाल सिक्किम), पद्मश्री पूनम सूरी जी, श्री सत्यानन्द जी (प्रधान परोपकारिणी सभा), राजीव गुलाटी जी (एम.डी.एच.), श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य (प्रधान सा.आ.प्र. सभा), श्री विनय आर्य जी (दिल्ली), डॉ. सत्यपाल सिंहजी (सांसद बागपत), श्री धर्मपालजी आर्य (दिल्ली), ठाकुर विक्रमसिंहजी (प्रमुख राष्ट्र निर्माण पार्टी) और अनेक महान् विभूतियों के पधारने की सम्भावना है। इस आयोजन में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ तथा १५१ कुण्डीय यज्ञ के अतिरिक्त अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। अत: **आपकी गरिमामयी उपस्थिति करबद्ध प्रार्थनीय है। अवश्य पधारें।**

पुन्हाना, मेवात (हरियाणा) में महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान समारोह सम्पन्न

आर्य समाज पुन्हाना, हरियाणा में दिनांक २४ अक्टूबर को आर्य पर्व दीपावली व महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर ग्यारह कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में सैकड़ों नर-नारी, बच्चों ने आहुतियाँ प्रदान कीं। यज्ञोपरांत श्री चरणसिंह आर्य जुरैहडा, जिला भरतपुर (राजस्थान) ने भारत में बढ़ते हुए पाखंड, अंधविश्वास पर प्रकाश डालते हुए इस कठिन समस्या का समाधान वेद प्रचार बताया तथा पाखंडी लोगों से सावधान रहने को कहा। इस मौके पर वेद प्रचार मंडल मेवात के कोषाध्यक्ष श्री रामअवतार आर्य पुन्हाना की पुत्रवधू श्रीमती श्वेता आर्या ने एक ईश्वर भक्ति का मधुर भजन सुनाया, श्री दुलीचन्द्र आर्य पूर्व अध्यक्ष वेद प्रचार मंडल मेवात ने भी यज्ञ महिमा व सत्संग महिमा का सुन्दर भजन सुनाया। श्रोता भारी खुश हुए।

आर्य जगत् के महान व्यक्ति वैदिक विज्ञान पंडित नन्दलाल निर्भयजी ने अपने भजनोपदेश द्वारा बताया कि श्री रामचन्द्रजी ने रावण का वध विजय दशमी को नहीं किया था तथा दीपावली को वे अयोध्या नहीं लौटे थे। वास्तव में तो श्री राम ने रावण वध चैत्र कृष्ण पक्ष की अमावस्या को किया था। वाल्मीकि रामायण में यह स्पष्ट लिखा है। संत तुलसीदासजी ने चैत्र मास कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को रावण का वध रामचरित मानस में लिखा है। वे दूसरे दिन ही भरतजी की प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हुए पुष्पक विमान में बैठकर सीता, लक्ष्मण, सुग्रीव आदि के साथ वापस अयोध्या लौटे थे। यह दोनों पर्व प्राचीन आर्य पर्व हैं। इन पर्वों को महाराजा रघु व राजा दशरथ तथा राजा जनक भी श्रद्धा से मनाते थे। इस दिन यज्ञादि कर्म करने चाहिए। पंडित नन्दलाल निर्भय कविराज ने स्पष्ट बताया कि स्वामी दयानन्द युग पुरुष थे। वे विश्व उद्धारक धर्मात्मा थे। दीपावली को ही वे दिवंगत हुए थे। उनका दिवंगत दृश्य देखकर नास्तिक गुरुदत्त भी पूर्ण ईश्वर भक्त बन गये थे। महर्षि अकेले होते हुए भी सारा संसार झकझोर गए। वे वस्तुतः महान् पुरुष थे। आर्यो! उठो और वेद प्रचार करो। इस वक्त नहीं जागे तो मिट जाओगे। श्री उमेश आर्य ने विश्वास दिलाया कि हम अब कुछ करके दिखाएँगे। शान्तिपाठ के पश्चात् कार्यक्रम का समापन किया गया। इस अवसर पर पंडित नन्दलाल निर्भय जी को सम्मानित भी किया गया। इस समारोह की सर्वत्र सराहना की जा रही है।

● **शमशेर गोस्वामी,**
मंत्री : आर्य समाज पुनाहाना (मेवात) हरियाणा

आर्यो! महर्षि दयानन्दजी युग निर्माता थे उन्हें मत भूलो : पं. नन्दलाल निर्भय कवि

आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली-१२ के प्रांगण में दिनांक ३१.१०.२०२२, रविवार को **'महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकार'** विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य प्रवचनकर्ता एवं व्याख्याता आर्य जगत् के प्रख्यात कवि, लेखक, वैदिक विद्वान पं. नन्दलाल निर्भय, गऊभक्त, ग्राम बहीन (पलवल) हरियाणा थे। अध्यक्षता श्री ओमप्रकाश रुहिल आर्य ने की तथा संचालन श्री नन्दकुमार वर्मा ने किया। सत्संग में सैकड़ों नर-नारी, बालक-बालाएँ उपस्थित थे, जिन्होंने धर्म लाभ उठाया। इस अवसर पर सर्वप्रथम संध्या (ब्रह्मयज्ञ), हवन (देव यज्ञ) किया गया। यज्ञोपरान्त वैदिक विद्वान पंडित नन्दलाल निर्भय आचार्य ने अपने भजनोपदेश के द्वारा बताया कि महाभारत काल के बाद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसा त्यागी, तपस्वी, ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देश भक्त, वेद भक्त, गऊ भक्त, परोपकारी विद्वान्, सकल विश्व में कोई दूसरा नहीं हुआ। वे मानवता के सच्चे अवतार थे। उनका जैसा प्यारा नाम था, ऐसा ही काम था।

श्रीयुत पंडित नन्दलाल निर्भय ने बताया कि उस समय भारत में विदेशी, गऊ हत्यारे, पापी अंग्रेजों का राज्य था जो मनमाने जुल्म इस भारत की जनता पर कर रहे थे। सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने निर्भय होकर आजादी का बिगुल बजाया। अंग्रेज उन्हें बागी फकीर बताया करते थे। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, महादेव गोविंद राणाडे, श्यामजी कृष्ण वर्मा, बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल, पंडित बालमुकुंद, मोहनलाल पाठक, सरदार अर्जुनसिंह (भगतसिंह के दादा), स्वामी सोमानन्द (रामप्रसाद बिस्मिल के गुरु) सब स्वामी दयानन्द महायोगी के शिष्य थे। उस समय अंग्रेज कहा करते थे जहाँ-जहाँ आर्यसमाज है, वहाँ-वहाँ क्रांति है। स्वामीजी की हत्या में पापी अंग्रेजों का हाथ था। अगर स्वामीजी का जन्म नहीं होता तो भारत आजाद नहीं होता। अतः आर्यो! सब जागो और भारत को आर्य राष्ट्र बनाओ। तभी हम महर्षि दयानन्द महाराज के सच्चे शिष्य माने जाएँगे। श्रीमती दया सचदेवी ने भी भक्ति का एक भजन सुनाया।

श्री राकेश शर्माजी ने पंडित नन्दलाल निर्भय का धन्यवाद किया तथा पुनः शकरपुर पधारने का अनुरोध किया। शान्तिपाठ, प्रसाद वितरण के बाद सत्संग का समापन किया गया।

● **आलोक आर्य वीर,** *आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली-१२*

वैदिक विद्वान कवि पं. नन्दलाल निर्भय सम्मानित

दिनांक ११ जनवरी २०२२ को राष्ट्र निर्माण पार्टी अध्यक्ष ठाकुर विक्रमसिंह आर्य, लाजपत नगर, नई दिल्ली-२४ के जन्म दिवस के अवसर पर कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली में विशाल विद्वान सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, प्राचार्य आर्ष गुरुकुल, गौतम नगर, नई दिल्ली ने की तथा संचालन श्री मेघश्याम वेदालंकार ने किया।

इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान, ओजस्वी वक्ता, प्रसिद्ध कवि, सिद्धहस्त लेखक, महान् वेद प्रचारक, गऊ भक्त, धर्मात्मा, ८२ वर्षीय समाजसेवी, भजनोपदेशकों के पथ प्रदर्शक, पंडित नन्दलाल, निर्भय सिद्धान्ताचार्य आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा) को विशेष रूप से ठाकुर विक्रमसिंह आर्य, भामाशाह आर्य जगत् ने सम्मानित किया तथा उन्होंने घोषणा की कि पंडित नन्दलाल निर्भय पुराने वेद प्रचारक है जो सन् १९५८ से निरंतर निर्भयता से वेद प्रचार कर रहे हैं। यह भी कहा कि पंडित नन्दलाल निर्भय मेरे पुराने साथी हैं। ये महर्षि दयानन्द महाराज और वैदिक धर्म के दीवाने हैं। परमात्मा इन्हें शतायु जीवन सानंद बिताने की शक्ति प्रदान करें। सम्मान रूप में पंडित नन्दलाल निर्भय को शॉल प्रशस्ती पत्र तथा ११००० रुपए की नकद राशि भेंट की गई। अन्य ५०० विद्वानों को भी सम्मानित किया गया है। ज्ञातव्य है कि पंडित नन्दलाल निर्भय ने अब तक हजारों गऊओं की प्राण रक्षा की है तथा दर्जनों हिन्दू बालक-बालिकाओं को विधर्मी मुसलमानों, ईसाइयों से बचाकर वैदिक धर्म का डंका बजाया है। इनके रचित भजन सर्वत्र गाए जाते हैं। ये वृद्ध अवस्था में भी जवानों की तरह काम करते हैं।

● **रामअवतार आर्य,** *कोषाध्यक्ष वेद प्रचार मंडल मेवात, नूँह (हरियाणा)*

सुशिक्षित, संस्कारवान, सुयोग्य वर की आवश्यकता है

दिनेश गुप्ता (सेवानिवृत्त उत्तर प्रदेश शासन प्रथम श्रेणी अधिकारी) की कन्या हेतु उच्च शिक्षित, रोजगाररत, शाकाहारी संस्कारवान परिवार के सुयोग्य वर की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश दिल्ली तथा समीपवर्ती क्षेत्र के निवासी कुलीन परिवार के युवक को प्राथमिकता।

कन्या जन्म : २६ जून १९९७, जन्म स्थान : हरदोई (उ.प्र.), कद : ५ फुट ३ इंच, शिक्षा : इंदिरा गांधी महिला टेक्निकल यूनिवर्सिटी दिल्ली से बी-टेक (कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग), वर्तमान में गुड़गांव में सॉफ्टवेयर इंजीनियर (Make My Trip) पद पर सेवारत, वेतन २५ लाख वार्षिक, अभिरुचि : कुकिंग, लिखना पढ़ना, ड्राइविंग व चित्रकारी। **संपर्क : दिनेश गुप्ता ८०८१६११३९६**

गुरुकुल प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर (राजस्थान) द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान अजमेर में संस्कृत भाषा, पाणिनीय व्याकरण ,वैदिक दर्शन, उपनिषदादि के अध्ययन हेतु प्रवेश प्रारंभ किए गए हैं। इन्हें पढ़कर विद्वान, उपदेशक, प्रचारक बन सकते हैं। कम से कम १०वीं कक्षा उत्तीर्ण, १६ वर्ष आयु से अधिक के स्वस्थ युवकों को ३ माह का अस्थाई प्रवेश दिया जा सकता है। इस काल में अध्ययन व अनुशासन में संतोषजनक स्थिति होने पर स्थाई प्रवेश दिया जा सकेगा। संपूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है। गुरुकुल में अध्ययन के काल में किसी भी बाहरी परीक्षा को नहीं दिलवाया जाएगा और ना ही इसकी अनुमति होगी। प्रवेश व अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : ७०१४४४७०४०, संपर्क समयः अपराह्न ३.३० से ४.३० तक

सरल आध्यात्मिक शिविर सम्पन्न

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, रोजड़ गुजरात के मार्गदर्शन एवं सानिध्य में सरल आध्यात्मिक शिविर 12 से 17 नवम्बर 2022 तक आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार उत्तराखण्ड में अत्यन्त उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक ने महर्षि पतंजलि जी के द्वारा रचित योग दर्शन के अनेक सूत्रों पर आधारित वैदिक योग विद्या का सैद्धांतिक तथा क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया। अनेक दृष्टांतों और शंका समाधान सहित बहुत सरल भाषा में आर्याभिविनय पुस्तक का अध्यापन भी करवाया।

बहुत अच्छी उपस्थिति में प्रबुद्ध वानप्रस्थी और संन्यासी आर्यजनों ने इस सरल आध्यात्मिक शिविर में भाग लिया। स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी ने वैदिक सिद्धान्तों को आधार बनाकर बहुत सुन्दर एवं प्रेरणप्रद सन्देश दिए। श्रोताओं को सुखपूर्वक जीवन जीने की कला सिखाई। तनाव से मुक्ति कैसे प्राप्त करें, यह कला बताई। मन का नियन्त्रण करना सिखाया। वैदिक निराकार ईश्वर का ध्यान भी अनेक बार करवाया। प्रतिदिन रात्रि में एक घंटा अनेक आध्यात्मिक शंकाओं का बहुत सुन्दर और सरल भाषा में समाधान किया। सभी श्रोतागण बहुत ही प्रसन्न हुए। अपने जीवन को महान बनाने के लिए शिविरार्थियों ने हाथ ऊंचे उठाकर, गुणों को धारण करने तथा दोषों को छोड़ने का संकल्प भी लिया।

वैदिक ज्योतिष प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिनांक ९ से १३ दिसम्बर २०२२ तक आर्य समाज मुल्तान नगर, दिल्ली में आयोजित ज्योतिष प्रशिक्षण शिविर का प्रभाव बहुत ही अच्छा रहा है। हमें प्रसन्नता है कि हमने सभी को घोषित पाठ्य सामग्री के अनुसार नक्षत्र समय, वेलान्तर, पलभा व सोदयमान के साथ लग्न सिद्धि की गणित के अतिरिक्त सभी कुछ, शिक्षार्थियों को सविस्तार पढ़ाया है। मुझे इस बात का हर्ष है और बना रहेगा कि उपस्थित समस्त सज्जनों ने अपने आपको बहुत-बहुत लाभान्वित अनुभव करते हुए हमारा आत्मिक धन्यवाद किया है। संवत् १८८० और १८८१ का पञ्चाङ्ग स्पष्ट रखते हुए एक कक्षा में, सभी को महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म तिथि की प्रामाणिकता का पाठ भी पढ़ाया जाना सन्तोषजनक रहा। इस शिविर में दिल्ली के अतिरिक्त महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और बिहार से भी ज्योतिष प्रशिक्षणार्थी भी सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर मैं पूज्य पाद आचार्य प्रद्युम्न जी महाराज, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ सोमदेव शतांशु, डॉ महावीर मीमांसक, पं. मधुर शास्त्री मीमांसक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका विदुषी सुश्री अञ्जलि आर्य और अपने आपमें वैदिक धर्म के 'शङ्खनाद' आचार्य श्री अंकुर आर्य आदि को प्रत्यक्ष संवाद से पञ्चाङ्ग की विसंगतियों को समझा पाया हूं। इसमें शुरू से अन्त तक के सबसे बड़े सहयोगी मुल्तान नगर आर्य समाज के प्रधान श्री राजकुमार जी आर्य की पहल रही और इसी से समस्त भारतवर्ष का यह ऐसा प्रथम आर्य समाज सिद्ध हुआ है जिसने एक सफल ज्योतिष प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया है।शिविर में श्रीमती अनीता आर्य भी सम्मिलित हुई जिन्होंने श्रीमती मधु आर्य के साथ मिलकर पतंजलि महिला योग समिति के माध्यम से, ३ वर्ष पूर्व भी एक चार दिवसीय शिविर आयोजित किया था।

सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह रही है कि श्री राजकुमार आर्य जी ने इस सन्दर्भ में एक सङ्गठन खड़ा करने की आवश्यकता पर बल दिया और ऐसे संगठन के लिए स्वयं आर्य समाज मुल्तान नगर की ओर से ५१००० रुपए की एक पृथक राशि उपलब्ध कराई है। अब इस संगठन के नाम और काम के तरीके के बारे में विविध पहलुओं पर विचार-विमर्श होना शेष है।

अन्तिम अर्थात पाञ्चवें दिन एक बृहद यज्ञ समारोह के बाद आयोजित खुले सम्मेलन में आए हुए अनेक नगरवासियों को विविध विद्वानों ने सम्बोधित किया है। मैंने अपने एक लघु सम्बोधन में सभी लोगों को वर्तमान के प्रचलित पञ्चाङ्गों के गलत होने और शुद्ध वैदिक पञ्चाङ्ग की तथा उसी के अनुसार व्रत पर्व त्योहारों के मनाए जाने की आवश्यकता को रेखाङ्कित किया। प्रस्तावित सङ्गठन के माध्यम से प्रधान श्री राजकुमार आर्य ने यह भी घोषित किया कि इस सङ्गठन का प्रत्येक सदस्य श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् (वैदिक पञ्चाङ्ग) के अनुसार ही सङ्कल्प वाचन एवं त्योहारों के निर्धारण को स्वीकार करेगा और अपने व्यवहार में उसका उपयोग भी करेगा। धन्यवाद।

● आचार्य दार्शनेय लोकेश
सम्पादक : श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रकम्

परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में आर्य वीर दल शिविर

दिनांक : २४ से ३१ दिसंबर २०२२ तक

स्थान : ऋषि उद्यान अजमेर

शिविरार्थी पंजीयन एवं आवश्यक नियम तथा अधिक जानकारी के लिए परोपकारिणी सभा अजमेर से संपर्क करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्विजन्मशताब्दी के पावन अवसर पर एकादश (११) कुण्डीय २१ मण गोघृत तथा २१ मण विशेष हवन सामग्री द्वारा

विशाल महायज्ञ एवं भव्य महासम्मेलन

दिनांक : ९ से १२ फरवरी २०२३

स्थान : स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल, मलारना चौड़

जिला : सवाई माधोपुर (राज.)

समस्त धर्मप्रेमी सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल समिति

सम्पर्क : ९०२४६६९५५५

अद्भुत विलक्षण ऐतिहासिक आयोजन

आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल शिविर का आयोजन दिनांक २६ अक्टूबर से दिनांक २ नवंबर तक आचार्य सर्वेश जी के कुशल संचालन में संचालित वेदयोग महाविद्यालय (गुरुकुल) केहलारी , जिला खण्डवा, मध्यप्रदेश पर प्रशिक्षक विजय जी राठौड़ सीहोर, कृपालसिंह आर्य आगर मालवा, राजकुमार आर्य विदिशा एवं सुरेन्द्र आर्य विदिशा के कुशल प्रशिक्षण में निःशुल्क आयोजित किया गया। शिविर में गुरुकुल के २५ विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्यत्र अनेक स्थानों के ८२ बालकों ने भाग लिया।

शिविर समापन दिवस पर श्रीमति सविता भालकीकर निवासी लातूर महाराष्ट्र के आर्थिक सहयोग द्वारा अपने पिता हैदराबाद सत्याग्रही तथा वरिष्ठ समाजसेवी, नाडीवैद्य पण्डित कर्मवीर कंधारकर की स्मृति में गुरुकुल के नवनिर्मित मुख्य प्रवेश द्वार का वर्चुअल लोकार्पण किया गया। शिविर समापन पर शिविरार्थी बालको द्वारा शौर्य प्रदर्शन किया गया। ग्राम केहलारी की सरपंच श्रीमती राजकुमारी चौहान धर्मपत्नी डॉ. शिवराजसिंह चौहान के करकमलों द्वारा शिविरार्थी बालकों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए तथा आचार्य सर्वेश जी द्वारा बालकों को व्यसन मुक्त जीवन जीने तथा दहेज रहित विवाह करने और इस दिशा में कार्य करने की शपथ दिलवाई गई।

खण्डवा विधायक देवेंद्र वर्मा जी, पंधाना विधायक राम दांगोरे जी, पर्यटन उपाध्यक्ष मध्यप्रदेश नरेंद्रसिंह तोमर जी, खण्डवा जनपद अध्यक्ष रामपालसिंह जी सोलंकी, वरिष्ठ नेता कुंदन मालवीय जी, प्रतीक सातले जी, नरेंद्र जी सोलंकी जावर टीआई ,हाथरस से स्वामी अमलानंद जी, मसूदा (अजमेर) से स्वामी कल्पानंद जी,लातूर से अशोक जी आर्य, जलगांव से चेतन्य जी रड़े, जालना से सुनील अहीर पहलवान,भोपाल से रामकिशोर जी कासदे, झोकर (शाजापुर) से रमेशचंद्र जी इन्द्रिया, रमेशचंद्र जी पाटीदार अधिवक्ता, बेरछा से आनंदीलाल जी नाहर, गंज बासौदा से शिवचरण जी पांचाल,वनविभाग जावर से संदीप जी खेलना तथा बृहद संख्या में गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। शिविर का कुशल प्रबन्ध तथा समापन कार्यक्रम का संचालन शेखर शास्त्री द्वारा किया गया। वैदिक साहित्य का स्टाल लगाकर साहित्यिक सेवा वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा द्वारा की गई।

आर्य जगत् में शोक व्याप्त
नहीं रहे स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध प्रखर प्रवक्ता, वैदिक विद्वान, महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी के अनन्य भक्त, वैदिक संसार मासिक पत्रिका के परम स्नेही,

श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल, गोमत (खैर), जिला अलीगढ़ (उ.प्र.) के अधिष्ठाता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वतीजी (पलवल) हरियाणा का दिनांक ७ नवम्बर २०२२ को सायं ८:३० बजे निधन ६४ वर्ष की आयु में हो गया। आप पिछले एक महीने से अस्वस्थ होकर उपचार करवा रहे थे। दिनांक ८ नवम्बर २०२२ को सुबह मंगलवार को उनके पार्थिव शरीर को अन्तिम दर्शन हेतु सामुदायिक भवन (कम्युनिटी सेन्टर, हुड्डा सेक्टर-२, निकट टैगोर पब्लिक स्कूल पलवल) पर दोपहर १ बजे तक रखा गया। तत्पश्चात अन्त्येष्टि उनकी इच्छानुसार गुरुकुल मंझावली, यमुना तट पर दोपहर २ बजे की गई। औरंगाबाद मित्रोल (पलवल) आपका जन्म स्थान था। आप चार भाइयों में सबसे छोटे थे। आप बाल ब्रह्मचारी थे। आपके निधन से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। **• राजदेव नैष्टिक (पलवल)**

चलभाष : ८१६८०१३५३६, ९८१३८१५०११

आयुर्वेदाचार्य वैद्य महीपाल आर्य
पंचतत्व में विलीन

ग्राम देवनगर (महेन्द्रगढ़) के आयुर्वेदाचार्य वैद्य महीपाल आर्य का ८ नवम्बर को स्वर्गवास हो गया। बेटी गार्गी के विशेष स्नेही एवं एकमात्र वैद्य महीपाल जी ही थे। दिनांक ८ नवम्बर को सायंकाल ६ बजकर २० मिनट

पर अपनी गाय का दूध निकालकर लाये और दूध रखते ही गिर गये और तीन बार दस-बीस सैकिंड के अन्तराल हिचकी आई और अपने जीवन की अन्तिम श्वास छोड़ी। बाद उनके बेटे डॉक्टर कुलदीप यादव ने मेडिकल जांचे करवाई, जिसमें पाया गया कि वैद्य महीपाल आर्य की हृदय गति रुकने से मृत्यु हुई है। बाद घर लाया गया, क्षौर-कर्म किया गया (सिर-दाढी के बाल काटने को क्षौर-कर्म कहते हैं)। मृतक देह को स्नान आदि करा कर, शरीर पर चन्दन का लेप करके, श्मशान भूमि में ले जाकर दो टीन देशी घी (३० किलो) और ५० किलो सामग्री से वैद्य जी का वैदिक रीति से अन्त्येष्टि-कर्म (अन्तिम-संस्कार) किया गया जिसके मुख्य क्रियाकर्ता एवं वेदमन्त्रों के उद्गाता आचार्य प्रद्युम्न जी अधिष्ठाता आर्ष गुरुकुल खानपुर रहे। बाकी अन्य सभी सहयोगी रहे। आर्य समाज एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा में उनका बड़ा योगदान रहा है। समाज के लिए यह दुखद घटना है। समाज उनके द्वारा किये गये उपकारों को कभी नहीं भूला पायेगा। हम सब परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं,वह प्यारा प्रभु! उनकी आत्मा को अपनी व्यवस्था में उत्तम स्थान प्रदान करें। परिजनों को इस दारुण दुःख से जल्द उबारे।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः **• पण्डित कंवरसिंह आर्य आनावास**

चलभाष : ९४१६३४८०६३

आर्य जगत् की विविध गतिविधियों की चित्रावली

आर्योचित व्यवहार : गौरवमयी विलक्षण दृश्य

राजभवन गाँधीनगर (गुजरात) में राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी सपत्नीक के साथ सपत्नीक देवयज्ञ करते आर्य समाज बड़ा बाजार (कोलकाता) के प्रधान श्री आनन्ददेव जी आर्य

वैदिक संसार के लिए गौरव के विलक्षण क्षण

वैदिक सेवा आश्रम सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल) के उद्घाटन अवसर पर बी.एस.एफ. के उप महानिरीक्षक श्रीमान मुरारीप्रसादसिंह जी वैदिक संसार पत्रिका को प्रदर्शित करते हुए।

वैदिक विधि द्वारा गृह प्रवेश

आर्य समाज कसरावद (मध्यप्रदेश) के पदाधिकारियों द्वारा ग्राम मुल्तान निवासी श्री राजेन्द्रजी आर्य के नवनिर्मित गृह का वैदिक विधि-विधान द्वारा गृह प्रवेश दिनांक २३ अक्टूबर २०२२ को प्रातः ८:३० बजे सम्पन्न करवाया गया। इस अवसर पर उपस्थितजनों ने राजेन्द्रजी को बधाइयाँ दी।

अविस्मरणीय स्मृतियाँ

वैदिक संसार पत्रिका के प्रकाशक सुखदेव शर्मा के साथ बिहार शरीफ (नालंदा, बिहार) के श्री भोला पहाड़ी जी आर्य एवं श्री चन्द्रशेखर जी आर्य मध्यप्रदेश भ्रमण पर नर्मदा नदी (बड़वानी) का दृश्यावलोकन करते हुए।

आर्य समाज मुल्तान नगर (दिल्ली)

आर्य समाज मुल्तान नगर, दिल्ली में सम्पन्न वैदिक ज्योतिष प्रशिक्षण शिविर में आर्य समाज प्रधान राजकुमार आर्य के साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में गरिमामय उपस्थिति गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. के कुलपति डॉ. सोमदेव शतांशु एवं भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् के सम्पादक आचार्य दार्शनेय लोकेश।

वेद योग महाविद्यालय गुरुकुल केहलारी (खण्डवा)

वेदयोग महाविद्यालय गुरुकुल केहलारी (खण्डवा) में सम्पन्न आर्य वीर दल शिविर तथा इस अवसर पर उद्घाटित पण्डित कर्मवीर कंधारकर द्वार का विहंगम दृश्य।

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

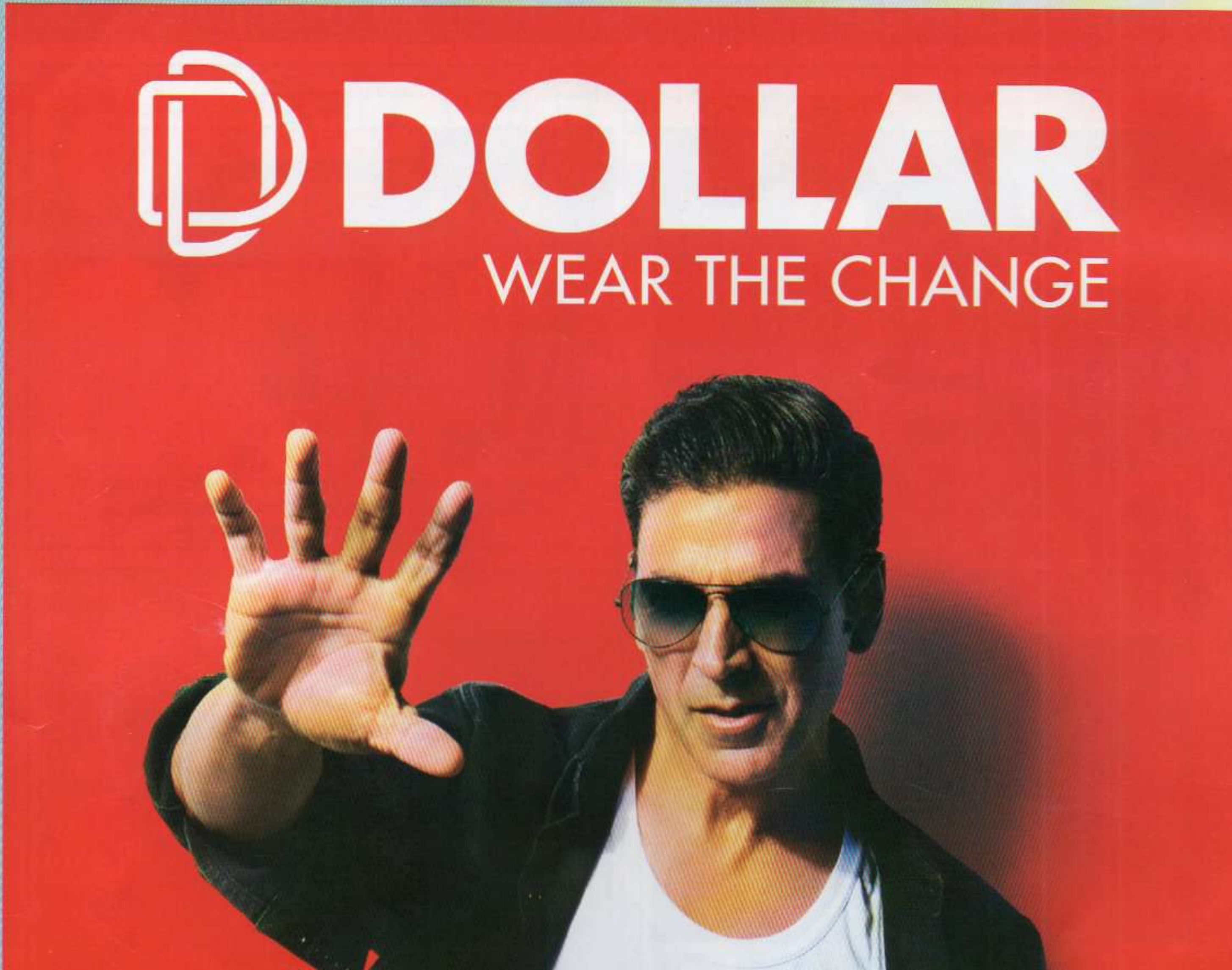

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित